देवराज सुराणा
अध्यक्ष

अभयराज नाहर
मन्त्री

श्री जैन दिवाकर दिव्य ज्योति कार्यालय
मेवाड़ी बाजार ब्यावर (राज)

मुद्रक
श्री भँवरलाल शर्मा.
गजानन्द प्रिन्टिंग प्रेस,
शाह मार्केट,
ब्यावर (राजस्थान)

❀ भूमिका ❀

●

मोटरकार, रेल, तीव्रगामी जेट विमान एवं वायु सदृश गति से अन्तरिक्ष में पृथ्वी एवं अन्य ग्रहों की परिक्रमा करने वाले राकेटों के इस युग में निरन्तर पदविहार करते रहने की जैन-मुनियों की परम्परा अत्यन्त विलक्षण है। अपने नियम एवं व्रतों के अनुसार वे एक स्थान पर अधिक समय नहीं ठहर सकते एवं आवागमन के लिए किसी वाहन का उपयोग करना भी उनके लिए वर्जित है। सर्वदा भ्रमण करते रहने से किसी विशिष्ट स्थान एवं व्यक्तियों का ममत्व-भाव अंकुरित नहीं होता जिससे उनकी आध्यात्मिक एवं विराग की भावना अबाधित रहती है और उनका जीवन किन्हीं सीमाओं में बन्धा न रह कर सार्वजनिक हित एवं दिशा निर्देश के लिए होता है।

आज के इस 'यन्त्र-युग' में मानव ने मशीनों को इतना अधिक अपना लिया है कि वह उसके जीवन एवं अस्तित्व का एक अविभाज्य अंग ही बन गई है। उसे पग-पग में प्रत्येक कार्य में मशीनों पर अवलम्बित रहना पड़ता है जिसके फल-स्वरूप वह निरन्तर पराधीन होता चला जा रहा है। वर्तमान स्थिति में स्वयं मानव को ही एक चलती फिरती मशीन ही कहा जाय तो तनिक भी अत्युक्ति न होगी। सृष्टि के सहज प्राकृतिक सौन्दर्य से वह कितना दूर चला जा रहा है इसकी उसे कल्पना तक नहीं है। हमारे भारत देश में जो देवों का क्रीड़ा-स्थली कहा जाता है स्वर्ग लोक सदृश अवर्णनीय अनन्त सौन्दर्य बिखरा पड़ा है जिससे आज का यन्त्रीकृत मानव निपट अपरिचित है। एक ओर जहाँ विशाल गिरिशिखर, कल कल

करती सरिताएं, हरे भरे वृक्ष नेत्रों को सुखदायी होते हैं, दूसरी ओर वे हमें जगत के मोह ममत्व से दूर रह कर एकान्त साधना एवं विराग का सन्देश देते हैं। हमारे प्राचीन ऋषि मुनियों और महात्माओं ने जन समूह के कोलाहल से दूर रह कर ही विशिष्ट ज्ञान प्राप्त किया था जिसका पावन प्रकाश वे समय समय पर जगत में फैलाते रहे। यह परम्परा जैन मुनियों के आहार विहार में आज तक चली आ रही है और यह निस्सन्देह स्तुत्य है। निरन्तर पैदल विहार करते रहने से जैन-मुनि उस ससार से भी पूर्ण परिचित रहते हैं जहा अनन्त प्राकृतिक सौन्दर्य और शान्ति सर्वदा विद्यमान रहती है तथा जिसे साधारण सासारिक व्यक्ति नहीं पा सकता।

प्रस्तुत पुस्तक पं० मुनि श्री हीरालालजी म० के यात्रा सस्मरण के चित्र उपस्थित करती है। हम लोग आवागमन के इतने साधन उपयोग करते हुए भी भारतवर्ष के कई प्रमुख नगरों से भी अपरिचित रहते हैं पर इन मुनि ने पैदल विहार करते हुए समस्त भारत वर्ष और नैपाल तक का भ्रमण किया है जिसकी कल्पना भी कठिन मालूम होती है। जो अनुभव ज्ञान, लाभ, मुनि श्री ने इतने लम्बे समय में और अनेक कष्ट उठा कर प्राप्त किये वे हम सहज ही कुछ थोड़े से समय में घर बैठे ही यह पुस्तक पढ़ कर प्राप्त कर सकते हैं।

मुझे पूर्ण आशा है कि ज्ञान पिपासु पाठक इस पुस्तक का समुचित आदर करेंगे।

प्रकाशक इस उपयोगी पुस्तक को प्रकाशित करने के लिए धन्यवाद के पात्र हैं।

राजस्थान विद्युत बोर्ड,
जयपुर

—विज्ञानचन्द्र भारिल्ल
(साहित्यरत्न, बी० कॉम०, सी०ए०)

विषय सूची

१

बंगाल

卐

रवीन्द्रनाथ ने जिस प्रदेश की प्रशस्ति करते हुए कहा—"सोनार बांगला देश" वह सचमुच सोने का ही देश है। यहां के लोग तीक्ष्ण बुद्धि, प्रतिभावान और कर्मनिष्ठ हैं, वह प्रदेश भला सोने का प्रदेश क्यों न कहलाए? सुभाष जैसे वीर देश भक्त, जगदीश बसु जैसे वैज्ञानिक, श्री अरविन्द जैसे योगी शरतचन्द्र बंकिमचन्द्र और रवीन्द्रनाथ जैसे साहित्यकार नन्दलाल जैसे कलाकार और चैतन्य महाप्रभु जैसे ऐतिहासिक पुरुषों को जो धरती पैदा कर सकती है वह धरती सोना उगलने वाली धरती कहलाए, तो क्या आश्चर्य? इसी बंगाल प्रदेश में वि० सम्वत् २०१२ ईसवी सन् १९५५ का चातुर्मास व्यतीत करके हमने महसूस किया कि बंगाल सचमुच सोने का बंगाल है।

कलकत्ता के पोलक स्ट्रीट में बना हुआ भव्य स्थानक कलकत्ते की जैन समाज के गौरव का प्रतीक है। यद्यपि एक युग था जब बंगाल प्रदेश में जैन धर्म सर्वाधिक प्रचलित धर्म था पर मध्य युग में बंगाल से जैन धर्म का करीब करीब लोप ही हो गया। अब जब

कत्ता अथवा अन्य नगरों में राजस्थान, गुजरात, सौराष्ट्र आदि प्रान्तों के जैन धर्मानुयायी बहुत बड़ी सख्या में व्यापार करते हैं और बहुत लोग तो यहा पर ही बस गये हैं।

सन् १९५५ का चातुर्मास कलकत्ता में बिताकर राजस्थान के लिए हमने प्रस्थान किया। भीनासर में होने वाले वृहद् साधु सम्मेलन में शामिल होना था। अत सत्वर गति से हम चल पड़े। करीब बाहर सौ मील का लम्बा रास्ता पार करना था। बगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश और राजस्थान की धरती को लाघकर बीकानेर के मरुस्थल तक पैदल चलकर पहुँचना कोई आसान बात नहीं। "गत्थि पथ समा जरा" के अनुसार पद यात्रा करना आज के युग में, जबकि रेल, मोटर और हवाई जहाज के आविष्कार ने पैदल चलने की परम्परा को ही समाप्त कर दिया है, बहुत कठिन हो गया है। किन्तु जैन मुनियों ने तो अपना अखण्ड-व्रत पाद-विहार को माना है। पाद-विहार कितना उपयोगी और आवश्यक है, इस बात को अब विनोबा और उनके सर्वोदयी साथियों ने भी स्वीकार कर लिया है तथा विनोबा न कहा भी है कि जैन मुनियों से पद यात्रा का सबक सीखना चाहिए।

न केवल जैन साधु बल्कि जैन साध्विया भी कठिन से कठिन मार्ग को पद यात्रा द्वारा ही पूरा करती हैं। फिर साधु-साध्वियों के कठिन नियमों का पालन भी साथ ही साथ करना पड़ता है, इसलिए कहीं भोजन मिला, कहीं नहीं मिला। रहने का स्थान भी कभी कभी बड़ी कठिनाई से मिलता है। कहीं मान, कहीं अपमान, सबको सहते हुए साधुओं को चलना पड़ता है।

कलकत्ता महानगरी के श्रावक-समुदाय की भाव-भक्ति निरन्तर याद रहेगी। व्यापार में व्यस्त इस नगरी के श्रावकों ने धर्म-ध्यान और

सेवा भाव के लिए जो अपरिमित उत्साह दिखाया वह सराहनीय है।

भवानीपुर में जैन-स्थानक का अभाव था। इसलिए वहाँ पर लोगों ने मुनिश्री के उपदेश से प्रभावित होकर १ लाख रुपये खर्च करके हंसराज अमीचन्द्र भगाणी भव्य जैन भवन का निर्माण कराया। और मारवाड़ी स्थानकवासी जैन समाज ने महावीर जैन हाई स्कूल की बिल्डिंग ५ लाख रुपये लगाकर तैयार करवाई।

वर्धमान और आसन सोल का मार्ग पकड़ कर हम चल पड़े। रास्ता हरा भरा धान की खेती से लहलहाता हुआ था। परिश्रमी किसान सवेरे से शाम तक खेत में अटूट लग से काम करते हैं। इस किसानों के बल पर ही सारे देश का अर्थ शास्त्र निर्भर करता है। यदि ये किसान खेतों में अन्न का उत्पादन न करें तो देश की हालत कैसी हो जाय यह सहज कल्पना की जा सकती है। बंगाल में अधिकतर चावल की ही खेती होती है। बंगालवासी बहु संख्या में मत्स्याहारी होते हैं। "माछी भात ही इनका प्रमुख खाद्य है। यहाँ के गावों में यह आम रिवाज है कि हर घर के सामने मछली पालने के लिए एक तालाब होता है। बेटी का बाप शादी करने से पहले यह देखता है कि सामने वाले के घर पर तालाब है या नहीं! बहुत से लोग मत्स्याहार को माँसाहार नहीं समझते। वे माँसाहार से उसी तरह घृणा करते हैं जिस तरह एक जैन या वैष्णव। पर मत्स्याहार में वे पाप नहीं मानते। ऐसे ही संस्कार बन गये हैं।

इस बंगाल में विहारी यात्रा करते हुए हम आगे बढ़ रहे हैं, विभिन्न महत्वपूर्ण स्थानों की भूमि है। जैसे शांति-निकेतन बेलूर मठ, तारकेश्वर नवद्वीप धाम आदि। इन स्थानों में मानव के सांस्कृतिक विकास की मेरकाण मिलती है। विद्या कला भक्ति, सेवा और

इसी तरह के अन्य,आत्मगुणों से संयुक्त जीवन का दर्शन हमें इन स्थानों में मिलता है।

इसी तरह कुछ स्थान आधुनिक निर्माण और भौतिक विकास की दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है। जैसे चितरंजन का रेलवे कारखाना, दुर्गापुर में दामोदर नदी का बांध आदि।

कलकत्ता से १७ मील पर श्री रामपुर में सेठ जयचन्दलालजी रामपुरिया का कपड़े का मील है यहां जाहिर प्रवचन में एक हजार स्त्री पुरुषों ने कलकत्ता से आकर लाभ लिया, उनको प्रीति भोज सेठ ने दिया। कलकत्ता से वर्धमान ७३ मील है और वर्धमान से आसन सोल करीब ६५ मील। विभिन्न गावों में रुकते हुए, जनता को धर्मोपदेश देते हुए और आध्यात्मिक जीवन की सतत साधना करते हुए हमने बंगाल प्रदेश की यात्रा समाप्त की और बिहार में प्रवेश किया।

●●●●

२

बिहार

卐

युग-प्रवर्तक भगवान महावीर और बुद्ध की तपोभूमि बिहार सारे देश में अपना विशिष्ट स्थान रखता है जिस प्रदेश का चप्पा चप्पा इतिहास की रंगीन कथाओं से भरपूर है और जिस धरती का कण-कण महापुरुषों की पावन-चरण-रज से पवित्र है उस बिहार प्रदेश की अलौकिकता का क्या वर्णन किया जाय।

जहां जैनशासन २४ तीर्थङ्करों में से २२ तीर्थङ्कर केवल एक ही स्थान से निर्वाण प्राप्त हुए, ऐसा सौभाग्यशाली सम्मेदशिखर पर्वत इसी बिहार में है। जहां भगवान महावीर ने जन्म उपदेश और निर्वाण का स्थान चुना वह पवित्र वैशाली राजगृह तथा पावापुरी भी इसी बिहार में है। जहां महात्मा बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया वह बोध गया भी इसी बिहार में है जहां सम्राट अशोक जैसे महान सम्राट हुए, बौद्धधर्म का [illegible] किया और सारे संसार को बुद्ध के उपदेशों का बोध दिया वह पटना और नालंदा भी इसी बिहार में है। जहां कल-कल करती स्वच्छ सलिल धारा वाहिनी गंगा नदी बहती है, वह भू भाग भी इसी बिहार में है। जहां गांधीजी

ने किसान सत्याग्रह के द्वारा ऐतिहासिक आन्दोलन खड़ा किया, वह चंपारण भी इसी बिहार में है, जहा बिहारी जैसे श्रृंगार-रसज्ञ कवि हुए, यह मिथिला भी इस बिहार का हिस्सा है और सत ।वनोबा को २२ लाख एकड़ भूमि का दान दिया वे दानी किसान भी इसी बिहार में हैं। और भी न जाने क्या क्या हैं, इस बिहार में।

ऐसे सौभाग्यशाली प्रदेश में हमने प्रवेश किया। झरिया, धनबाद और आसपास कोलियरी क्षेत्र में जैनधर्मानुयायियों की बहुत बडी संख्या है। कोयले के इस क्षेत्र में ये लोग कोयले से सोने का निर्माण करते हैं, ऐसा कहना अत्युक्ति नही होगी इस क्षेत्र में साधुओं का आगमन नहीं के बराबर होता है, अत यहा के लोगों में भाव भक्ति बहुत है।

२ दिन झरिया रहकर हमने आगे प्रस्थान किया। जी०टी० रोड़ के राजमार्ग से हम चल रहे थे। सड़क बहुत अच्छी है। रास्ते में गांव भी खूब मिलते हैं। बगाल और बिहार दोनों ही प्रान्तों में गरीबी अत्याधिक है। वैसे तो सारा हिन्दुस्तान ही एक गरीब मुल्क है, पर कुछ अस्पृश्य कहलाने वाली जातिया तथा किसान वर्ग तो बहुत ही गरीब हैं। जिनके पास न जमीन है, न व्यापार है, न उत्पादन का कोई अन्य साधन है, न रहने का पर्याप्त मकान है, उनका जीवन कैसे व्यतीत होता होगा, इसकी कल्पना करते ही रोम रोम कपित हो उठते हैं। इन देहाती, आदिवासी, अनपढ़ लोगों को पूरा काम भी नहीं मिलता। काम मिलता है, उन दिनों में भी २ या ३ सेर अनाज मजदूरी के रूप में मिलता है। इसमें वे खुद खाएँ या अपने बूढे-मा-बाप को खिलाएँ या अपने बच्चों को खिलाएँ या दवा दारू करें या क्या करें ? ऐसी हालत में फसे हुए इस देश का निर्माण कैसे करना है ?

रास्ता घने जंगलों का है बगोदर सरकट्टा बरही चौपारन आदि गाँवों से हम गुजरे। ये सभी गाँव घने जंगलों में बसे हुए हैं। ऊँचे ऊँचे पहाड़ों की चोटियों पर सुन्दर व सुहावने वृक्ष हैं। खूब जंगल है। निर्जन सुनसान झाड़ियों में से झाँय-झाँय की आवाज आती है कहीं बस स्टेंड है कहीं छोटी छोटी नदियां हैं इस तरह प्राकृतिक सौन्दर्य चारों ओर मुक्त रूप से बिखरा हुआ है।

औरंगाबाद के पहले तक जंगल समाप्त हो जाते हैं। आगे डालमिया नगर होते हुए हमें उत्तर प्रदेश की सीमाओं में प्रविष्ट होना है। डालमिया नगर साहू शांतिप्रसादजी जैन का बहुत विशाल उद्योग प्रतिष्ठान है। साहूजी इस समय हिन्दुस्तान के गणमान्य उद्योगपतियों में से हैं, पर उनका जीवन अत्यंत सात्विक सरल और उदार है। उनके हृदय में जैनधर्म के प्रति अगाध आस्था है और वे जैन धर्म के प्रचार कार्य में खुले हृदय से धार्मिक और नैतिक योगदान देते हैं।

डालमिया नगर जैसे औद्योगिक प्रतिष्ठान आज की औद्योगिक क्रांति के युग में बहुत महत्व रखते हैं। क्योंकि आज समस्त संसार औद्योगीकरण की ओर बढ़ता जा रहा है। केवल कृषि पर निर्भर रहने वाला देश संसार की तीव्र वैज्ञानिक गति के साथ कदम नहीं मिला सकता। अधिकाधिक उत्पादन के बिना गरीबी दूर नहीं हो सकती इसलिए कपड़ा लोहा कागज प्लास्टिक विभिन्न धातुएँ तथा अन्य वैज्ञानिक उपकरणों के उत्पादन पर अत्यधिक बल दिया जा रहा है। हालांकि हिन्दुस्तान में कुछ ऐसे धर्म शक्तियाँ हैं, जो

औद्योगीकरण के खिलाफ हैं, पर उनकी सख्या अत्यंत नगण्य है। साम्यवाद, समाजवाद, तथा पूजीवाद तीनों औद्योगिक क्राति के माध्यम से ही अपनी अपनी मजिल तक पहुँचना चाहते हैं। ऐसा सुना हुआ वर्तमान में अनुभव मे आ रहा है।

इस प्रकार बिहार प्रान्त की हमारी यात्रा पूरी हुई। वैसे जब हम कलकत्ता गये थे, तभी अच्छी तरह से बिहार प्रान्त मे विचरण किया था। पर अभी, क्योंकि हमे भीनासर सम्मेलन में शामिल होना है एक दम सीधे रास्ते से और तेजी से हम राजस्थान की ओर बढ़ते जा रहे हैं। रास्ते में अधिक रुकते भी नहीं है, और चक्कर का रास्ता भी नहीं लेते हैं।

●●●●

२

उत्तर प्रदेश

卐

हर प्रान्त की अपनी अपनी ऐतिहासिक परम्परा होती है और इसी विशिष्ट गौरव के आधार पर नया इतिहास बनता है। बंगाल एवं बिहार की भाँति ही उत्तर प्रदेश का अपना वैशिष्ट्य है। जैसे बिहार ने भगवान महावीर और बुद्ध को पैदा करने का यश लिया वैसे ही श्रीकृष्ण और श्री राम की जन्म भूमि गोकुल मथुरा एवं अयोध्या उत्तर प्रदेश में होने के कारण इन दोनों महापुरुषों को जन्म देने का श्रेय इस प्रदेश को है। अब यह मानना होगा कि सारी भारत भूमि एक है और किसी प्रदेश के महापुरुष सारे भारत के इससे भी बढ़कर सारे विश्व के थे। किन्तु अधिक निकटता की अपेक्षा से उन उन प्रदेश के वैशिष्ट्य की गाथा गाई जाती है।

हम बनारस आये। यह शहर वाराणसी अथवा काशी के नाम से बहुत प्राचीन काल से संस्कृत विद्वानों की राजधानी रहा है। काशी में १२ वर्ष तक पढ़कर आये हुए किसी भी पंडित की धाक समाज पर आसानी से जम सकती थी। संत तुलसीदास की तपो भूमि यही बनारस है, जहाँ उन्होंने हिन्दुस्तान के सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रंथ

रामचरितमानस की रचना की। सत्यवादी महाराज हरिश्चन्द्र की नगरी भी यही बनारस है, जहा उन्होंने सत्य की रक्षा के लिए अपना सुख वैभव, राज्य सब कुछ ठुकरा दिया। महात्मा बुद्ध की प्रथमोपदेश भूमि भी यही है। जहा सारनाथ में रहने वाले अपने शिष्यों के सामने बुद्ध ने धर्म-चक्र प्रवर्तन किया। और वाराणसी का सबसे ऊँचा गौरव यह है कि उसने भगवान पार्श्वनाथ की पावन-स्थली होने का श्रेय प्राप्त किया। हिन्दू विश्वविद्यालय और सस्कृत विश्व-विद्यालय के कारण काशी आज भी पूर्व युग की भाति ही विद्या, शिक्षा, सस्कृति और कला की राजधानी है, इसमें सदेह नहीं।

झरिया से बनारस २५३ मील पड़ा और बनारस से ७८ मील चलकर हम इलाहाबाद आये हैं। प० मोतीलाल नेहरू और पं० जवाहरलाल नेहरू, मदनमोहन मालवीय जैसे महान व्यक्तियों की देन देने वाला इलाहाबाद भी किससे कम है। बनारस यदि सस्कृत का गढ है तो इलाहाबाद हिन्दी का। महाकवि निराला, सुमित्रानदन पत, महादेवी वर्मा, हरिवंशराय 'बच्चन' जैसे चोटी के हिन्दी कवि इलाहाबाद में ही रहते हैं। गगा, यमुना और सरस्वती का त्रिवेणी सगम इसी इलाहाबाद में है, जहां लाखों नर नारी प्रतिवर्ष आकर स्नान करते हैं। यद्यपि बाह्य स्नान से आत्म-शुद्धि असभव है फिर भी इन नदियों के तट पर आने के निमित्त से भारत-यात्रा तो हो ही जाती है।

इलाहाबाद से ११३ मील चल कर हम कानपुर पहुँचे। कानपुर में स्थानकवासी समाज के काफी घर हैं। सारा संघ बहुत भक्तिवान तथा श्रद्धावान है, वि० स० २००६ के चातुर्मास में जिन्होंने मुनि श्री के उपदेश से प्रभावित होकर रुकमणी जैन भवन उपाश्रय के लिये निर्मित करवाया। यहा मुनिवर श्री प्रेमचन्दजी महाराज से

मिलाप हुआ। साधुओं के साथ इस तरह के मिलन नवीन प्रेरणा देने वाले होते हैं। कानपुर एक बड़ा औद्योगिक शहर है। चमड़े का व कपड़े का काफी बड़ा उद्योग यहां चलता है। जे० के० उद्योग प्रतिष्ठान जो कि भारत के चोटी के उद्योग प्रतिष्ठानों में से एक है का प्रधान केन्द्र भी कानपुर में ही है। कानपुर का एयर सेना केन्द्र भी अपने ढंग का अकेला ही है। यहां पर हवाई जहाजों की मरम्मत, निर्माण और प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

आजादी के आंदोलन के समय हिन्दू-मुस्लिम एकता के पावन यज्ञ से अपना बलिदान देने वाले कर्मठ देशसेवी और पत्रकार श्री गणेश शंकर विद्यार्थी के कानपुर पहुँच कर बहुत संतोष हुआ। हमारा व प्रमचन्दजी मुनि का साथ-साथ विहार गांधी नगर हुआ। यहां लाला गुरुसेनजी ने ७०० स्त्री पुरुषों को नाश्ता करवाया।

कानपुर से १७२ मील चलकर हम मुगल-कालीन राजधानी आगरा आये। आगरा शहर तो बहुत संकरी गलियों का गांव और पुराने ढंग का ही है पर ताजमहल ने आगरा को विश्व प्रसिद्ध कर दिया है। वैसे यहां का लाल किला और जुमा मस्जिद भी सुन्दर है और २४ मील पर फतेहपुरसीकरी भी इतिहास के विद्यार्थियों के लिए आकर्षण का केन्द्र है पर ताजमहल की तुलना किसी से नहीं की जा सकती। इसे विश्व के ७ आश्चर्यों में से एक माना जाता है। इसकी प्रसिद्धि के दो कारण हैं, एक तो कलात्मक शिल्प और दूसरे में इसके निर्माण के पीछे प्रणय की कोमल भावना। किसी प्रेमी बादशाह ने अपने प्रणय पात्र के लिए ऐसी भव्य इमारत का निर्माण आज तक नहीं कराया। यमुना के किनारे दूध से धुले सफेद पत्थर की यह छवि शरदपूर्णिमा के दिन तो सचमुच अद्भुत लगती होगी। ताजमहल देखने आने वालों की संख्या कभी कम नहीं होती।

आगरा मानपाड़ा में मुनिवर श्री श्यामलालजी महाराज से मिलाप हुआ और लोहा मंडी में मत्री मुनि श्री पृथ्वीचद्रजी म० से मिलाप हुआ।

उत्तर प्रदेश नगरों का प्रदेश है। जितने बड़े-बड़े नगर इस प्रान्त में है, उतने दूसरे प्रान्तों में शायद ही हों। आबादी की दृष्टि से भी सभवत यही प्रदेश सबसे बड़ा है।

आगरा हमारे उत्तरप्रदेश प्रवास का अतिम मुख्य शहर था। हम उधर लखनऊ की ओर न जा सके तथा इधर मथुरा वृन्दावन की ओर भी नहीं जा सके। समय भागा जा रहा है और भीनासर सम्मेलन की तारीखें निकट आ रही हैं। इसलिए श्रीकृष्ण की क्रीड़ा भूमि गोकुल, मथुरा, वृदावन, सबको छोड़कर हम अब यहा से सीधे राजस्थान की ओर बढ़ रहे हैं।

● ● ●

४

राजस्थान

卐

राजस्थान वीर भूमि है। इस प्रदेश के इतिहास का पन्ना-पन्ना वीरता से रंगा हुआ है। जहां अन्यत्र साहित्य में भक्तिरस शृंगार रस आदि का प्राधान्य है वहां राजस्थान के साहित्य में वीर रस ही प्रमुख है।

महाराणा प्रताप ने तो वीरता के चरमोत्कर्ष का नमूना पेश किया। जंगलों में एकाकी भूखे भटकना तो उन्हें स्वीकार था पर गुलामी और परतंत्रता की बेड़ियों में बंधना उन्होंने कदापि स्वीकार नहीं किया। आजादी के साथ घास की रोटी खाना उन्हें मंजूर था, पर गुलाम होकर खीर-पूड़ी या मलाई खाने की बात को उन्होंने ठुकरा दिया। इस प्रकार आजादी के लिए सुख वैभव पर ठोकर मारकर जिस व्यक्ति ने अपने आपको बलिदान की वेदी पर चढ़ा दिया उसके राजस्थान में प्रवेश करते समय सारा इतिहास सामने खड़ा हो जाता है।

जहां राजस्थान वीरों की भूमि है वहां वह मीरां जैसी भक्त को पैदा करने का श्रेय भी प्राप्त किए हुए है। हिन्दुस्तान की नारी

जाति का भाल गर्व से ऊंचा कर देने वाली मीरां बाई के गीतों ने राजस्थान को ही नहीं बल्कि पूरे हिन्दुस्तान को रस-सिक्त कर दिया है। मीरा के सामने विष का प्याला रखकर, भगवद् भक्ति या राज्य सुख में से एक को चुन लेने का जब सवाल आया तो मीरा ने जीवन का मोह नहीं किया और न राज्य की आकांक्षा की, बल्कि भगवद् भक्ति के मार्ग को अपनाकर विष का प्याला स्वीकार कर लिया।

राजस्थान में जैन-धर्म का जो विस्तार है, वह भी इस प्रदेश के लिए गौरव की बात है। आज हिन्दुस्तान में यदि जैन धर्म को सुरक्षित रखने का श्रेय किसी प्रदेश को है, तो वह गुजरात और राजस्थान को ही है। इसलिए राजस्थान का महत्व किसी भी दृष्टि से कम नहीं है।

राजस्थान का हमारा पहला मुख्य पड़ाव भरतपुर में था। भरतपुर एक सुन्दर नगरी है, जहां का राज्य पहले 'जाट' जाति के हाथ में था। 'जाट' मुख्य रूप से कृषि-कर्म करने वाले होते हैं। हरियाणा पंजाब मे और राजस्थान में जाट जाति का काफी प्रभुत्व है। जाट ही चौधरी या पटेल भी कहलाते हैं। भरतपुर के महल काफी सुन्दर तथा ऐतिहासिक महत्व के हैं।

भरतपुर की एक विशाल सार्वजनिक सभा में मैंने लोगों को आध्यात्मिक जीवन के आदर्श स्वीकार करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि "आज सारे ससार की दौड़ भौतिक उन्नति की तरफ है। पर केवल भौतिक उन्नति से मनुष्य के मन में अतृप्ति, असन्तोष और असमाधान ही जागृत होते हैं। मानव को यदि वास्तविक शान्ति और सन्तोष चाहिए, तो आध्यात्मिक जीवन की प्रेरणा लेनी चाहिए। रूस अमेरिका जैसे भौतिक दृष्टि से सम्पन्न देश भी आज अशान्त हैं और शीत-युद्ध की ज्वाला से धधक रहे हैं।"

भरतपुर से हम लोग जयपुर आए। यहाँ स्थविर श्री तारा चन्दजी म० मन्त्री श्री पुष्करजी म० चौड़े रास्ते के उपाश्रय में विराज रहे थे उनके दर्शन किये। जयपुर राजस्थान की राजधानी है और भारत के सुन्दरतम नगरों में से एक है। चौड़ी चौड़ी सड़कें एक सरीखे मकान जगह जगह बगीचे इस प्रकार काफी सुन्दर शहर है यह जयपुर। फिर अब तो राजधानी बन जाने के कारण खूब बढ़ भी रहा है। आज के जयपुर से १० वर्ष पहले के जयपुर की यदि तुलना की जाय तो रात दिन का अन्तर दीख पड़ेगा।

जयपुर में दर्शनीय स्थान भी बहुत हैं। रामनिवास का बाग म्युजियम हवा महल आमेर जन्तर-मन्तर गलता आदि स्थानों के कारण जयपुर भी एक पर्यटन-स्थल बन गया है।

सेठ अचलसिंह एम० पी० के नेतृत्व में दिल्ली से स्थानकवासी कान्फ्रेंस का एक शिष्ट मण्डल जयपुर में आया। शिष्ट मण्डल में कान्फ्रेंस के अनेक नेता और कार्यकर्ता थे। इनके आने का उद्देश्य था जयपुर के प्रमुख श्रावक जवेरी विनयचन्द भाई को कान्फ्रेंस का अध्यक्ष बनाना। व्याख्यान में ही अध्यक्ष के चुनाव की कार्यवाही हुई।

हम लोगों ने जयपुर से अजमेर की ओर प्रस्थान किया। रास्ते में विभिन्न गांवों में धर्मोपदेश करते हुए ग्राम जनता को शराब मांस तम्बाकू आदि व्यसनों से दूर रहने की प्रतिज्ञाएं दिलाई। १६ मील का लम्बा विहार करके हम लोग अजमेर पहुँचे। अब भीनासर ज्यादा दूर नहीं है। कहाँ कलकत्ता और कहाँ अजमेर! पर "हिम्मते मरदां मदद दे खुदा" वाली कहावत के अनुसार जब किसी भी काम के लिए कदम उठा लिया जाता है, तो वह पूरा होता

जाति का भाल गर्व से ऊंचा कर देने वाली मीरां बाई के गीतों ने राजस्थान को ही नहीं बल्कि पूरे हिन्दुस्तान को रस-सिक्त कर दिया है। मीरा के सामने विष का प्याला रखकर, भगवद् भक्ति या राज्य सुख में से एक को चुन लेने का जब सवाल आया तो मीरां ने जीवन का मोह नहीं किया और न राज्य की आकांक्षा की, बल्कि भगवद् भक्ति के मार्ग को अपनाकर विष का प्याला स्वीकार कर लिया।

राजस्थान में जैन-धर्म का जो विस्तार है, वह भी इस प्रदेश के लिए गौरव की बात है। आज हिन्दुस्तान में यदि जैन धर्म को सुरक्षित रखने का श्रेय किसी प्रदेश को है, तो वह गुजरात और राजस्थान को ही है। इसलिए राजस्थान का महत्व किसी भी दृष्टि से कम नहीं है।

राजस्थान का हमारा पहला मुख्य पड़ाव भरतपुर में था। भरतपुर एक सुन्दर नगरी है, जहां का राज्य पहले 'जाट' जाति के हाथ मे था। 'जाट' मुख्य रूप से कृषि-कर्म करने वाले होते हैं। हरियाणा पंजाब में और राजस्थान में जाट जाति का काफी प्रभुत्व है। जाट ही चौधरी या पटेल भी कहलाते हैं। भरतपुर के महल काफी सुन्दर तथा ऐतिहासिक महत्व के हैं।

भरतपुर की एक विशाल सार्वजनिक सभा में मैंने लोगों को आध्यात्मिक जीवन के आदर्श स्वीकार करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि "आज सारे ससार की दौड भौतिक उन्नति की तरफ है। पर केवल भौतिक उन्नति से मनुष्य के मन में अतृप्ति, असन्तोष और असमाधान ही जागृत होते हैं। मानव को यदि वास्तविक शान्ति और सन्तोष चाहिए, तो आध्यात्मिक जीवन की प्रेरणा लेनी चाहिए। रूस अमेरिका जैसे भौतिक दृष्टि से सम्पन्न देश भी आज अशान्त हैं और शीत-युद्ध की ज्वाला से धधक रहे हैं।"

रखता है यह अपूर्व बुद्धिमत्ता का परिचायक है। बिना इस तरह के संगठन के आने वाले युग में हम जनता को सही मार्ग दर्शन नहीं दे सकेंगे। "संघ शक्ति कलौयुगे" के अनुसार कलियुग में संगठन ही तीव्र शक्ति है।

जन-समाज दो हजारों की संख्या में उमड़ पड़ा। ऐसी कल्पना भी नहीं थी कि समारोह का स्वरूप इतना शानदार होगा। गृह मन्त्री गोविन्दवल्लभ पन्त और इनके अलावा अनेक नेताओं ने उपस्थित होकर इस समारोह की शोभा बढ़ाई। भीनासर सम्मेलन इतिहास की अद्भुत घटना बन गई। लोगों ने समारोह देख कर दांतों तले अंगुली दबा ली। स्थानकवासी समाज इतना व्यापक विशाल और सुदृढ़ है इसका भान इस सम्मेलन में सबको हो गया।

भीनासर के बाद वापस ब्यावर से भोपालगढ़ आये यहाँ श्री जैन रत्न विद्यालय अच्छी तरह से चल रहा है और बापूजी का बनवाया हुआ उपाश्रय का उद्घाटन वसन्त तृतीया को हुआ। दशपर्वीय तप के पारने हुए। फिर हम जोधपुर आये। जोधपुर में स्थानकवासी समाज के करीब एक हजार घर हैं। राजस्थान बनने से पहले यह मारवाड़ की राजधानी थी। मारवाड़ बहुत ही संपन्न प्रदेश था। कहावत भी थी कि "धन कू ही मारवाड़" अभी भी करोड़ रुपये की वार्षिक आय मारवाड़ राज्य से प्राप्त होती थी। यहाँ श्री पूर्णमलजी म० श्री मोतीलालजी म० पं० मुनि श्री किस्तुरचंदजी म० श्री चांदमलजी म० मंत्री मिश्रीमलजी म० आदि अनेक मुनिराजों के दर्शन हुए।

जोधपुर से चल कर हम लोग बालोतरा चातुर्मास के लिये पहुँचे। बीच के क्षेत्रों में भी बराबर धर्मोपदेश चलता ही रहा। चातुर्मास काल में अनेक जाहिर प्रवचन हुए। दीपक ज्योतिजी हीरक हार पचीस सभा मधुमर सम्पादन अंग्रेजी हिन्दी कविता सहित प्रकाशित हुआ धर्म ध्यान का बहुत ठाठ रहा जनता

ही है। लोग कहते थे कि "महाराज, समय थोड़ा है, रास्ता लम्बा है, आपकी उम्र भी वृद्ध है।" पर हमने कहा कि "इन सब कारणों के बावजूद भीनासर-सम्मेलन का काम महत्त्वपूर्ण भी तो है। सामाजिक सगठन की दृष्टि से इस काम की सफलता सारे इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जाएगी। अत किसी भी तरह, थोड़ा कष्ट उठाकर भी हमें पहुँचना ही है।' आखिर अब हमारा वह प्रण पूरा होने को आया है।

नागौर से गोगोलाव, नोखा मण्डी कवि श्री अमरचन्द्रजी के साथ रासीसर, देशनोक, उदराय सर, आदि छोटे छोटे क्षेत्रों में होते हुए हम लोग बीकानेर आये। बीकानेर, स्थली प्रदेश की रियासती राज्य के समय राजधानी थी। स्थली प्रान्त में अधिकतर तेरापथियों की सख्या है। पर बीकानेर तथा भीनासर में स्थानकवासी आम्नाय के काफी घर हैं। इधर पूज्य जवाहिरलालजी महाराज ने श्रावक समुदाय में धर्म के प्रति गहरी निष्ठा जगाई थी। इन श्रावकों की विशेषता यह है कि ये कोरे श्रद्धावान श्रावक ही नहीं हैं, बल्कि इनमें से बहुत से श्रावक ज्ञानी भी हैं।

बीकानेर से हम उपाचार्य श्री गणेशीलालजी म० आदि अनेक प्रतिष्ठित मुनियों के साथ भीनासर आ गये। साधु सम्मेलन तथा श्रावक-सम्मेलन का अभूतपूर्व दृश्य था। दूर दूर से आये हुए साधुओं के साथ परिचय, मिलन, चर्चा आदि में खूब आनन्द आया। जो कुछ सम्मेलन के निर्णय तथा परिणाम सामने आया, वह सारे समाज के सामने रख ही दिया गया है। बिखरे हुए स्थानकवासी समाज को एक सूत्र में बाधने का ऐसा काम सचमुच युग की माग के अनुसार हुआ। आज एकता के सूत्र में बन्धने का जमाना है। बिखरने का नहीं। अत साधु समाज ने जो यह कदम

५

मध्य प्रदेश

卐

राजस्थान की घाटियाँ लाँघते हुए हम मालव देश आए। मालव देश ही है यह जहाँ कालिदास की कविता का झरना बहता था और राजा विक्रमादित्य के न्याय की तुला सदा संतुलन पर रहती थी।

यह क्षेत्र पहले मालवा था फिर मध्य भारत हुआ और अब मध्यप्रदेश बन गया है। इस प्रकार प्रशासकीय नामांकन में परिवर्तन होता रहा।

जैन दिवाकर पूज्यवर श्री चौथमलजी महाराज ने जिस प्रकार मेवाड़ को अपने परम पवित्र उपदेशों से आकंठ तृप्त किया वैसे ही इस मालव देश पर भी उनकी निरन्तर कृपा-दृष्टि बनी रही। उनके ओजस्वी प्रवचन सुनने के लिए मालव जनता उमड़ पड़ती थी। उनका व्याख्यान घन घटा की भाँति होता था जो बड़ी प्रबलता के साथ आता और असंतोष से परितप्त जन मानस में संतोष की रिमझिम बारिश कर जाता।

बहुत श्रद्धालु है। चातुर्मास बाद मेवा नगर (नाकोड़ा) जसोल, गढ़-सिवाना, आहोर, जालोर, तखतगढ होते हुए सादड़ी आये। यहां लोंकाशाह गुरुकुल अच्छे ढंग से चल रहा है। श्रावक संघ का अतीव आग्रह रहा कि आगामी चातुर्मास आप यहीं पर करें।

घाणेरा व सादड़ी से राणकपुर होते हुए उदयपुर आये। उदयपुर भव्य पहाड़ियों के बीच बसा हुआ, प्राकृतिक दृष्टि से अत्यंत रमणीय है। झीलों के बीच बने हुए राजमहल अपनी दिव्य शोभा के लिए सारे देश में प्रख्यात हैं। उदयपुर पहले मेवाड़ की राजधानी थी। अनेक तरह की सांस्कृतिक शैक्षणिक और कलात्मक संस्थाओं के कारण उदयपुर ने काफी नाम कमाया है। माणिक्यलाल वर्मा, मोहनलाल सुखाड़िया, कालूलाल श्रीमाली जैसे व्यक्ति उदयपुर की राजनैतिक देन हैं जो आज राजस्थान के व केन्द्र के राज्य संचालन में अपना योगदान दे रहे हैं। मेवाड़ी लोग थली और मारवाड़ के लोगों की तरह धनी तो नहीं हैं, पर बुद्धि, परिश्रम आदि में वे किसी से पीछे नहीं हैं।

उदयपुर से चित्तौड़! यहीं पर है वह विजय स्तंभ, जिसे देख कर कवि कह उठा—"गढ़ तो चित्तौड़गढ़ और सब गढ़या है।" वह जौहर की भूमि, जहां ७०० राजपूत रानियों ने अपनी शील रक्षा के लिए अग्नि को प्राणार्पण कर दिया। चित्तौड़ का किला सचमुच इतिहास की जीवित तस्वीर है। यहीं प० मुनि श्री कस्तुरचन्दजी म० उपाध्याय श्री प्यारचन्दजी म०, मन्त्री मुनि श्री सहस्रमलजी म० आदि ३४ मुनियों का स्नेह सम्मेलन, श्री चतुर्थ जैन वृद्धाश्रम में हुआ। उसमें सादड़ी सोजत, देशनोक, भीनासर आदि श्रमण संघ के नियमों को समझाया गया। मन्त्री मुनि श्री के सिवाय सभी मुनिराजों ने रतलाम की ओर प्रस्थान किया।

काफी बड़ी व्यापारी है। जैन समाज तो अधिकांशतः व्यापारी है। व्यापारी वर्ग में ही वर्तमान में जैन धर्म सीमित हो गया है। इस तरह का सीमा बंधन उचित नहीं है। जैन धर्म को विश्व व्यापक बनना चाहिए। इसके लिए क्या प्रयत्न किये जायें, इस पर सभी जैन विद्वानों को सोचना चाहिए और तदनुसार प्रचार की व्यवस्थित योजना बनानी चाहिए, ताकि जैन धर्म जन धर्म बन सके और आम जनता इसके हार्द को समझ सके।

इन्दौर के पास कस्तूरबा ग्राम भी एक राष्ट्रीय आदर्श संस्था है। कस्तूरबा गांधी के नाम पर इस देश में एक निधि इकट्ठी हुई और यह तय हुआ कि इस धन का उपयोग महिलाओं के शिक्षण विकास और गांवों की सेवा के लिए महिलाओं को तैयार करने में खर्च किया जाय। उस कस्तूरबा निधि का प्रमुख केन्द्र यह कस्तूरबा ग्राम है, जहां ग्रामसेविका बनाने के लिए बहनों को हर तरह से शिक्षित किया जाता है। सेवा का यह एक आदर्श संस्थान है।

आज नारी समाज को पुरुष समाज ने घर की चार दीवारी में बन्द कर रखा है। जिस देश में झांसी की रानी लक्ष्मी बाई हो सकती है, सीता हो सकती है, मीरां हो सकती है उस देश के नारी समाज को पर्दे में बन्द कर दिया जाय यह सर्वथा असामंजस्यपूर्ण लगता है। स्त्री-शक्ति के प्रगट होने का अब समय आ गया है। क्योंकि आज संसार को करुणा तथा स्नेह की आवश्यकता है। पुरुष वर्ग ने अणुबमों का आविष्कार करके दुनिया को क्रूरता के शिकंजे में फंसा दिया है। अब शान्ति स्नेह और वात्सल्य का वातावरण मातृत्व-शक्ति धारिणी नारी से ही मिलेगा, ऐसी आशा की जा सकती है। अतः अब स्त्रियों को बंधन में रखना और अशिक्षित रखना अपने आप दूर हो जायगा।

हमने रतलाम में आकर देखा कि आज भी आम जनता आदरणीय महाराज को भूली नहीं है और उसके व्याख्यान आज भी जनता के कर्ण-कुहरों में गूंज रहे हैं।

श्री जैन दिवाकर छात्रालय और उपाध्याय श्री प्यारचंदजी जैन सिद्धान्तशाला के नाम से २ प्रमुख संस्थाएं जैन धर्म के शिक्षण और सांस्कृतिक विकास में योग दे रही हैं।

रतलाम में आम जनता को सम्बोधित करते हुए मैंने कहा कि 'महाराज चले गए हैं, पर वे हमारे लिए कर्तव्य का निर्देश कर गए हैं। यदि हमारे मन में उनके प्रति वास्तविक श्रद्धा, प्रेम और भक्ति है तो हमें उनके बताये हुए मार्ग पर चलकर जीवन को आध्यात्मिक बनाना है। यदि आप लोग दिन भर पाप कार्य में मस्त रहें लेन-देन दुकानदारी में धर्म-अधर्म का विवेक न रखें और केवल महाराज श्री को स्मरण करते रहें, तो उससे कुछ भी होने वाला नहीं है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आज क्रांति की जरूरत है। अन्यथा भौतिकवाद का विस्तार इतनी तीव्रता से हो रहा है कि आध्यात्मिक मूल्य धूमिल पड़ते जा रहे हैं। अत, यह आवश्यक है कि महाराज श्री के आध्यात्मिक उपदेशों का गहराई से अमल किया जाय।"

रतलाम से उज्जैन आए। उज्जैन में कालिदास की स्मृतिस्वरूप एक विशाल विद्या और कला-संस्थान बनने की योजना चल रही है। जो कुछ कहानी है, उसके अनुसार ऐसा कहा जाता है कि कालिदास पहले तो एक मूर्ख गवार था। पर उसने पुरुषार्थ और प्रयत्न से ऐसी विद्या हासिल की जिससे वह संसार का श्रेष्ठतम कवि बन गया। यह पुरुषार्थ की विजय का ही परिणाम है।

उज्जैन से देवास और देवास से इन्दौर। इन्दौर भारत का का एक मध्यवर्ती शहर है। यहां जैन समाज के सभी संप्रदायों की

६

महाराष्ट्र

卐

महाराष्ट्र की सीमाएं बहुत दूर दूर तक फैली हैं। यह एक विशाल-व्यापक प्रदेश है। बम्बई महानगरी महाराष्ट्र की राजधानी है। हिन्दुस्तान में बम्बई का वही महत्व है जो महत्व शरीर में हृदय का होता है। बम्बई हिन्दुस्तान का हृदय है। यहां व्यापार, उद्योग कारखाने इत्यादि बहुत बड़े पैमाने पर बिखरे हों ऐसे प्रथम श्रेणी के शहर भारत में दो ही हैं—कलकत्ता और बम्बई।

बम्बई के बाद महाराष्ट्र का दूसरा मुख्य नगर है—पूना। पूना बहुत प्राचीन समय से शिक्षा संस्कृति कला एवं विद्या का केन्द्र रहा है। पूना ने आजादी के आन्दोलन में भी बहुत महत्त्व का हाथ बंटाया है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी पूना एक दर्शनीय नगर है और हजारों पर्यटकों को यह प्रति वर्ष अपनी ओर खींचता है। पूना के निकट ही भारत प्रसिद्ध निसर्गोपचार आश्रम, उरली कांचन है जिसकी स्थापना महात्मा गांधी ने की थी। मनुष्य के रोग प्राकृतिक उपायों से दूर हो सकते हैं, इसलिए दवा इन्जेक्शन आदि उपयोग करना निरर्थक है। ऐसे प्रयोगों के द्वारा इस आश्रम में [illegible] किया जाता है।

इस तरह मध्य प्रदेश की लघु-यात्रा पूरी करके अब हमें महाराष्ट्र की ओर आगे बढ़ना है। जैन साधुओं के लिए देश भ्रमण एक मिशन के रूप में होता है। हमारी यह एक प्रकार से ड्यूटी ही है कि देश के कोने कोने में जाकर हम धर्मोपदेश करें और जो जैन श्रावकों का समुदाय देश भर में फैला हुआ है, उसकी सार-सभाल लें। उन्हें धर्म-मार्ग की याद दिलाएँ। अब आगे महाराष्ट्र, आंध्र, कर्नाटक तमिलनाद, बम्बई आदि क्षेत्रों में विचरण की भावना मन में है। देखें कहां तक यह भावना सफल होती है।

●●●●

भुसावल में सब केलों का क्षेत्र है और नागपुर सन्तरों का क्षेत्र है। इन क्षेत्रों में खूब बड़े बड़े बगीचे केलों और सन्तरों की लदी से भरे दीख पड़ते हैं।

भुसावल के पास ही जलगांव है। यह भी एक अच्छा क्षेत्र है यहां के लोग भी बहुत श्रद्धावान एवं भक्तिमान हैं। जलगांव के लोगों को प्रबोध देते हुए हमने कहा कि "मनुष्य और तो किसी काम के लिए प्रमाद अथवा आलस्य नहीं करता। पर धर्म कार्य को वह सदैव भविष्य के लिए टाल देता है। बचपन में वह खेलकूद में मस्त रहता है और सोचता है कि धर्म कार्य तो फिर भी कर लेंगे। यौवन में वह भोगासक्त होकर धर्म कार्य को बुढ़ापे के लिए सुरक्षित छोड़ देता है। पर जब बुढ़ापा आता है तो अचानक ही आता है पुरुषार्थ हीन हो जाता है और धर्म कार्य न कर सकने के कारण पछताता रहता है। अतः भगवान ने कहा है कि—

जरा जाव न पीडेई वाही जाव न वड्ढई।
जाविंदिया न हायन्ति ताव धम्मं समायरे॥

दशवैकालिक अ० ८ गाथा ३६

अर्थात्-जब तक बुढ़ापा आकर घेरे नहीं व्याधि आकर त्रस्त न करने लगे इन्द्रियां जब तक क्षीण होकर जवाब न देवें तब तक धर्माचरण कर लेना चाहिए। अतः हे मनुष्य धर्म कार्य के लिए कभी भी आलस्य और प्रमाद मत करो। समयं गोयम मा पमायए। क्षण भर के लिए भी प्रमाद नहीं करना चाहिए। प्रमाद ही मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है।"

जलगांव से आगे बढ़ते हुए हम जामनेर आए। जामनेर भी एक अच्छा क्षेत्र है। यहां महावीर जयन्ती बड़े समारोह के साथ मनाई गई!

इसके अलावा भी अहमदनगर आदि अनेक बड़े बड़े शहर महाराष्ट्र में हैं। इस प्रान्त की धरती जहां ज्ञानेश्वर, तुकाराम आदि सन्तों ने पावन की है, वहां शिवाजी, तिलक, गोखले आदि देश भक्तों ने भी इस भूमि पर अपने बलिदान की कहानी बिछाई है।

इस युग के महान सन्त आचार्य विनोबा तो महाराष्ट्र की देन हैं ही, महात्मा गांधी ने भी वर्धा में ही रहकर आजादी के आन्दोलन का संचालन किया था। इस प्रकार महाराष्ट्र की गौरव गाथाए इतिहास में भरी हैं।

हम इन्दौर से खण्डवा होकर भुसावल आये। भुसावल में जैन धर्मानुयायियों की काफी संख्या है। भुसावल की भांति ही महाराष्ट्र के अन्य अनेक नगरों में प्रवासी राजस्थानी जैन बहुत बड़ी संख्या में हैं, जो विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में लगे हुए हैं।

भुसावल में व्याख्यान देते हुए हमने कहा कि "ये संसार के सारे काम इसी तरह चलते रहेंगे। मनुष्य को इन धन्धों से कभी फुरसत नहीं मिलने वाली है। पर इन धन्धों में ही जो लिप्त और आसक्त हो जाता है, वह कभी अपना आत्मोद्धार करने में सफल नहीं हो सकता। पर जो सुज्ञ मानव कमल की भांति कीचड़ में रहते हुए भी उससे सदा निर्लिप्त रहता है और अपने आत्म सुधार के लिए सचेष्ट रहता है, वह निर्वाण प्राप्त करने में सफल हो जाता है। सबसे अधिक मूल्य ज्ञान या भावना का है। भावना के बाद श्रद्धा का स्थान आता है और श्रद्धा के बाद चारित्र का यानी कर्म का स्थान है। कहा भी है—"सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्राणि मोक्ष मार्ग" इसलिए प्रत्येक मनुष्य को इन तीन रत्नों की सार सम्भाल पूर्ण रूपेण करनी चाहिए।

आवला से परभनी होकर हम औरंगाबाद आये। नांदेड में भक्ति और शक्ति की साधना का संदेश मनुष्यमात्र को देने वाले गुरु गोविन्दसिंह का मकबरा भी अपना ऐतिहासिक वैशिष्ट्य रखता है। हमने जैन उपाश्रय में विश्राम किया। स्कूल में भी कुछ समय बिताया।

महाराष्ट्र में ठहरने के लिए मुख्य रूप से हनुमान राम अथवा इसी तरह के मन्दिरों में स्थान मिल जाता है। पहले के जमाने में मन्दिर का उपयोग इसी दृष्टि से खास तौर पर किया जाता था। मन्दिर यानि गाँव का सार्वजनिक स्थान, जहाँ सब लोग मिल सकें एक साथ बैठ कर बात चीत कर सकें मन की योजना बना सकें। बाहर से आये हुए अतिथि या साधु को ठहरा सकें आदि।

इस तरह हमारी महाराष्ट्र यात्रा पूरी हुई।

मार्ग स्वयं गति को प्रेरित करता है। ज्यों ज्यों कदम आगे बढ़ते हैं, त्यों-त्यों मार्ग भी बनता जाता है। इस प्रकार गति और मार्ग का अन्योन्याश्रित संबंध है। महाराष्ट्र की भूमि पर पद-विहार करते हुए हमें जो गति की प्रेरणा मिल रही है वह मार्ग की अनुकूलता से ही मिल रही है। कभी-कभी मार्ग में जो कष्ट आते हैं, वे भी अनुकूलता के प्रतीक बन कर आते हैं। प्रतिकूलताएँ, संघर्ष, कष्ट, इत्यादि सब कुछ जब यात्री को अनुकूल प्रतिभासित होने लगता है, तभी तो यात्रा आनन्ददायी एवं सुखद बनती है।

महाराष्ट्र की सीमाएँ इधर मध्यप्रदेश से जुड़ी हैं तो उधर आन्ध्र और कर्नाटक से संलग्न हैं। मध्य प्रदेश तो भारत के मध्य में है ही, महाराष्ट्र का भी बहुत सा हिस्सा खासतौर से नागपुर का क्षेत्र हिन्दुस्तान के बिलकुल बीच में है। इसलिए महाराष्ट्र का महत्व बहुत बढ गया है।

महाराष्ट्र अपनी प्राचीन कला के लिए सारे ससार में धीरे-धीरे प्रसिद्ध होता जा रहा है। अजन्ता और एलोरा की गुफाओं ने, वहां जैन, बौद्ध और शैव परम्परा की उत्कृष्ट कला-सृष्टि ने अपना चमत्कार दिखाया है, संसार भर के सौन्दर्य पिपासु, कला मर्मज्ञ, शिल्प पारखी और इतिहास जिज्ञासु पर्यटकों को आकर्षित किया है। जिस प्रकार कालिदास के काव्यों में साहित्यिक स्वर रचना के माध्यम से शृङ्गार रस का अवतरण हुआ है, वैसे ही अजन्ता की गुफाओं के भित्ति चित्रों में भी शृङ्गार रस खूब खुलकर प्रगट हुआ है। यह सब देखकर कभी मन में यह विचार उठता है कि क्या सभी कल्पनाओं को इस प्रकार निश्चित करने का अधिकार कलाकार को दिया जाय? क्योंकि कलाकार जैसा रसग्राही मानस आम जन समाज का तो नहीं होता। तब कहीं इस कला के दुरुपयोग की संभावना तो नहीं?

मंदिर परिग्रह, झगड़ा और पाप के अड्डे बन गये हैं। पंडे पुजारियों ने तो अपने आपको भगवान के घर का ठेकेदार और पहरेदार ही समझ लिया है। मंदिर पर किसकी सत्ता रहे, इसके लिए झगड़े होते हैं, मुकदमे चलते हैं और मारामारी तक हो जाती है। इस आडम्बर और परिग्रह की पोषक मंदिर-परम्परा से लाभ के बजाय नुकसान ही ज्यादा हुआ है।

गोदावरी नदी की स्वच्छ सलिल धारा में आनंद उठाने वाली आंध्र प्रदेश की जनता अपने श्रम से इस प्रदेश का निर्माण कर रही है। जैसे उत्तर में गंगा और यमुना का महत्त्व है वैसे ही दक्षिण में कृष्णा गोदावरी और कावेरी का महत्त्व है।

भद्राचलम् और इसी तरह के अन्य अनेक स्थान यहां हैं, जहां आंध्र प्रदेश की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना मूर्तिमान हो उठी है।

विशाखा पट्टणम् भी आंध्र का एक प्रसिद्ध स्थान है जहां जल-पोतों का निर्माण करने वाला भारत में अपने ढंग का अद्वितीय कारखाना है। यद्यपि अब हवाई यात्रा के आविष्कार के बाद अधिकतर लोग जल-पोत से यात्रा करके समय नष्ट करना पसंद नहीं करते फिर भी जल-पोतों की आवश्यकता दिनों दिन बढ़ती ही जाती है। इसका मुख्य कारण है अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की वृद्धि। सामान की सस्ती और अधिक ढुलाई के लिये जलपोतों की गहरी आवश्यकता होती है। इसी तरह जल-सेना के लिए भी इन पोतों की विशेष जरूरत पड़ती है। ऐसा राजपुरुष मानते हैं।

वैजवाड़ा भी आंध्र का एक प्रमुख शहर है, जहां से दक्षिण पूर्व और पश्चिम के लिए प्रमुख रूप से रेलवे लाइनें निकलती हैं।

७.

आंध्र प्रदेश

卐

आंध्र प्रदेश से दक्षिण भारत का प्रारंभ होजाता है। केरल, मद्रास स्टेट, कर्नाटक और आंध्र ये चार प्रान्त ही मुख्य रूप से दक्षिण भारत के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन चारों प्रान्तों की भाषाएं भी बहुत समृद्ध और विकसित हैं। इन भाषाओं मे बहुत विशाल साहित्य लिखा गया है। आंध्र की भाषा तेलुगु है। तेलुगु भाषा में स्वामी त्यागराज ने गीत-साहित्य लिखा है, जो आंध्र के जन जन के मुंह में लोक गीतों की भांति बसा है।

आंध्र प्रदेश के संत 'पोतन' बहुत प्रसिद्ध भक्त हुए हैं। जिन्हों-ने भागवत का निर्माण करके इस देश को एक बहुमूल्य आध्यात्मिक देन दी है।

आंध्र प्रदेश की सबसे बड़ी विशेषता तिरुपति में बालाजी का मंदिर है, जहां लाखों भक्त भक्तिरस में सराबोर होकर आते हैं। हालांकि मूर्ति पूजा किसी भी दृष्टि से चैतन्य मानव के लिये आदर्श नहीं बन सकती। चेतना स्वरूप मानव जड़ मूर्ति के सामने समर्पित हो जाय, यह बहुत युक्ति पूर्ण भी नहीं है। पर यदि हम इस सैद्धा-तिक पक्ष को छोड़कर भी विचार करें तो व्यावहारिक दृष्टि से आज

हम तो जालना से सीधे आंध्र की राजधानी हैदराबाद ही आये। सिकंदराबाद और हैदराबाद तो मिले जुले हुए ही है। यह निजाम स्टेट था। हैदराबाद का म्युजियम सारे देश मे प्रसिद्ध है। निजाम के शानदार महलों के कारण, चौड़ी और साफ सड़कों के कारण तथा खूबसूरत बाग-बगीचों के कारण हैदराबाद बहुत सुन्दर शहरों की गिनती में आगया है।

जब देश आजाद हुआ तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बटवारे के रूप में अंग्रेज अपनी कार गुजारी छोड़ गए थे। उन्होंने सभी राजाओं को भी स्वतंत्र रहने या हिन्दुस्तान मे मिलने का निर्णय करने के लिए मुक्त रखा था। इसी सिलसिले में हैदराबाद के निजाम ने आनाकानी शुरू की। हालांकि देश की अन्य सभी रियासतों ने भारतीय गणतंत्र को स्वीकार कर लिया था। पर हैदराबाद स्टेट की गर्दन कुछ टेढी थी। सरदार पटेल की राजनैतिक कुशलता ने उस टेढी गरदन को भी सीधा कर दिया और यह स्टेट भी हिन्दुस्तान में मिल गया।

हैदराबाद, सिकंदराबाद, बोलारम आदि क्षेत्रों में जैन श्रावकों की सख्या काफी है। यहा आना बहुत लाभदायक रहा और हैदराबाद में ११ दिन का विश्व शांति हित अखंड शाति जाप २८ भाइयो ने किया। माननीय मेयर किशनलालजी की अध्यक्षता में आधुनिक विश्व शांति की महानता पर प्रवचन हुआ। इसमें हजारों जनता ने लाभ लिया, मिश्री की प्रभावना दी गई। ता २२-६-५६ को हैदराबाद के राज्यपाल श्री भीमसेन सच्चर से राज्य भवन में मुलाकात हुई। सच्चरजी के साथ जैन धर्म, अहिंसा आदि विषयों पर धर्म-चर्चा हुई और उन्हीं के हाथ से सतु व गुड लिया। सिकन्दराबाद चातुर्मास काल में १५ अगस्त १६५८ स्वतंत्रता दिवस पर जाहिर प्रवचन स्वतंत्रता

कलेक्टर, डिप्टी कलेक्टर मजिस्ट्रेट आदि राज कर्मचारियों की उपस्थिति सराहनीय रही। सेठ सोहनराजजी भंडारी ने १५ पहर का पोषध किया। स्कूल व गौशाला व दवाखाना जैन संघ की ओर से चल रहे हैं। श्रावक लोग बड़े श्रद्धालु हैं। शांति सप्ताह भी यहां हुए।

आन्ध्र प्रदेश से हमें कर्नाटक प्रदेश बैंगलोर की ओर आगे बढ़ना है।

●●●●

दिया। और हजारों गरीबों को भोजन दिया गया। किसी रोज सिकन्दराबाद में हमने उपदेश देते हुए कहा कि —

" आप लोग यहां पर धन कमाने के लिये आये हैं। पर धन की कमाई में इतने व्यस्त न हो जायँ कि धर्म की कमाई का भान ही भूल जायँ। धन और धर्म दोनों मिलते-जुलते शब्द हैं। पर धन जहां बंधन का कारण है, वहां धर्म मुक्ति का कारण है। धन इहलोक में काम देता है और धर्म इहलोक तथा परलोक दोनों में काम देता है। इसलिये धर्म के महत्त्व को समझें और उसे अपने जीवन में उसी प्रकार स्थान दें, जिस प्रकार भोजन को, व्यापार को और अन्य शारीरिक क्रियाओं को आवश्यक स्थान दिया है। जो धर्म को गौण समझता है, वह स्वयं भी गौण हो जाता है।"

सानंद सिकन्दराबाद चातुर्मास पूर्ण कर ता० २८-११-५८ को बेगम बाजार सनातन धर्म सभा में भानुविजयजी म० के साथ जहां पर रामचन्द्र वीर ने गौरक्षा के लिये अनशन कर रक्खा था वहां अहिंसा और गौरक्षा पर सार्वजनिक प्रवचन हुआ। एक प्रस्ताव पास करके आन्ध्र प्रदेश की विधान सभा में भेज दिया गया। सुलतान बाजार में सेठ संपतलालजी कीमती ने २ वर्ष में अपनी तरफ से उपाश्रय बनाने का कहा। इसी बाजार में सेठ इन्द्रमलजी लूणिया की कोठी पर जैन संघ की मिटींग ता० ८-१२-६१ को हुई जिसमें आन्ध्र प्रदेश के जैन संघ की स्थापना हुई।

शमशेरगंज में भव्य विदाय समारोह मनाया गया उसमें म० श्री ने सबको धर्म स्नेह हमेशा बने रहे वैसे नियम करवाये।

हैदराबाद से १४७ मील का विहार कर रायचूर ता० २८-१२-५८ को पहुँचे। ता० ४-१-५६ को भगवान पार्श्वनाथ भगवान की जयंती बड़े समारोह के साथ चन्द्रकान्त टाकीज में मनाई गई। जिला

और शृ गेरी मठ की स्थापना की। पुरन्दरदास के भजनों से जिस प्रकार कर्नाटक की भूमि रस-विभोर है उसी प्रकार अक्क महादेवी भी कर्नाटक की मीरा ही है। कर्नाटक के भक्तों की गिनती करने बैठें तो एक लम्बी फेहरिस्त ही हो जायगी।

कला की दृष्टि से तो पूरा दक्षिण ही मशहूर है। कर्नाटक में बेलूर श्रीरंग पट्टनम् आदि के मन्दिर कला के उत्कृष्ट नमूने माने जाते हैं।

इस प्रान्त में आकर विद्यारण्य का नाम नहीं भुलाया जा सकता। विजयनगरम् यहां का एक बहुत प्राचीन साम्राज्य है। पर इस साम्राज्य का इतिहास वीरता से अधिक विद्या का इतिहास है। इस साम्राज्य के संस्थापक भी विद्यारण्य वेदों के बहुमत विद्वान थे। "यथा नामस्तथा गुणः" के अनुसार वे सचमुच 'विद्यारण्य' ही थे। उन्होंने चारों वेदों के भाष्य लिखकर इस प्रान्त की जनता में अपना नाम अमर कर दिया।

कर्नाटक में संस्कृत विद्या का प्रचार बहुत है। संस्कृत विद्या की यह विशेषता है कि यह पूरे देश में समान रूप से सर्वत्र पढ़ी जाती है। हालांकि यह किसी भी प्रान्त की मातृ-भाषा नहीं है, पर इस भाषा ने जितना प्रचार पाया है उतना इस देश में अन्य किसी भाषा ने नहीं पाया है। हिन्दुस्तान का सर्वोत्तम आध्यात्मिक, *धर्मशास्त्र, सांस्कृतिक और सामाजिक साहित्य इसी भाषा में लिखा* है। मध्य युग में जब मुगल-साम्राज्य और इंगलिश-साम्राज्य इस देश पर छाया तब संस्कृत जन-भाषा के रूप में न रह सकी पर साहित्यिक और आध्यात्मिक रुचि दोनों में पूरे देश में यह भाषा व्याप्त है।

८.

कर्नाटक

卐

तुगभद्रा, आमेनी गुटकल गुंठुर आदि क्षेत्रों से होते हुए हम कर्नाटक प्रान्त में आये हैं। इस प्रान्त की भाषा कन्नड है। कन्नड़ भाषा में प्रचुर जैन-साहित्य है। किसी युग में जैन धर्म इस प्रान्त का प्रमुख धर्म था, ऐसा कहा जा सकता है। श्रवण बेल गोला कर्नाटक ही नहीं बल्कि दक्षिण के जैनों की प्रभु सत्ता का प्रतीक है। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में आचार्य भद्रबाहु दक्षिण आये। वे इस युग के अन्तिम श्रुत केवली थे। उनका आखिरी समय दक्षिण में ही बीता, ऐसा इतिहासकारों का मन्तव्य है। जैन धर्म की दार्शनिक विचार-धारा को विकसित करने में दक्षिणी विद्वानों ने खूब मनोयोग पूर्वक सहायता दी। भद्रबाहु के ही एक भक्त राजा ने श्रवण बेलगोला के पहाड़ पर ५८ फीट ऊंची बाहुबलि की भव्य मूर्ति का निर्माण किया। यह अद्भुत मूर्ति विश्व का एक महान आश्चर्य मानी जाती है। दक्षिण के चारों प्रान्तों की भाषा और परम्परा भिन्न होते हुए भी जैनों के रहन, सहन, सस्कृति और विचारों में काफी एकता थी। कर्नाटक प्रान्त विविध सस्कृतियों का सगम-स्थल रहा है। यहा मेल-कोटा में रामानुजाचार्य आकर रहे। वैष्णव सम्प्रदाय में रामानुजाचार्य का अप्रतिम स्थान है। इसी तरह शंकराचार्य भी इस प्रान्त में आए

ता० १६-४ २६ चैत्र शुक्ला ४ सोमवार सम्वत २ १६

समग्र संघीय प रत्न मुनि श्री हीरालालजी महाराज आदि ठाणा ६ के सम्मुख मोरदकी बाजार में कुछ वर्षों से मन मुटाव हो रहा है उसे मिटाने के लिये कुछ भाईयों ने अर्ज की। जिससे महाराज श्री ने मोरदकी बाजार वालों में सम्पूर्ण शान्ति व एकता हो इस लिये महाराज श्री ने व्याख्यान में एक होने के लिये कहा।

(१) पहिले जो लिखावट मन मुटाव होने से लिखी गई वह दोनों तरफ से समाज में भविष्य में न लाई जाय।

(२) दोनों की साथ में प्रेम पूर्वक क्षमापना महाराज श्री के सम्मुख हो।

(३) भविष्य में सब के यहां बुलावा हाथि पांति बराबर हो।

(४) पहिले के जो झगड़े व लिखावट हो वह आज से समाज की आय और भविष्य में उसकी कोई चर्चा न करें।

(५) दोनों ओर से तत्काल आदान प्रदान हो।

हिन्दुस्तान एयर क्राफ्ट फैक्ट्री में कर्नाटक राज्य के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री श्री निजलिंगप्पा की अध्यक्षता में एक विराट सार्वजनिक सभा ता १६.४-२६ को हुई। जिसमें हजारों लोगों ने व्याख्यान श्रवण करने का लाभ लिया। ता० १ ४ २९ को विजय पक्षी में इसी तरह मल्लेश्वरम् में कर्नाटक राज्य के कामचारी रामपाल श्री मंगलदास पकवासा की अध्यक्षता में एक आम सभा हुई। तथा अतिथी के रूप में वन मन्त्री श्रीमान् डॉ० सुब्रमण्य भी पधारे। मल्लेश्वरम् में ही एक दूसरी सभा में कर्नाटक राज्य के मुख्य मन्त्री

कर्नाटक की राजधानी बैंगलोर है, जहां जैन श्रावकों की सख्या १० हजार से भी ज्यादा है। यहां अलग अलग बाजारों में अलग अलग स्थानक हैं और सघ का अच्छा सगठन है। बैंगलोर में व्यापार का बहुत बड़ा हिस्सा जैनों के हाथ में ही है। यहां एक विशाल मन्दिर भी है। स्थानकवासी समाज और मूर्ति पूजक समाज के घर अधिक सख्या में हैं। दिगम्बर समाज का मन्दिर व काफी घर हैं और थोड़े तेरा पन्थी भी हैं।

बैंगलोर हिन्दुस्तान के सुन्दरतम शहरों में से एक है। यह 'सिटी ऑफ गार्डन्स' यानी उपवनों की नगरी कहलाती है। गरमी में ज्यादा गरम नहीं, बरसात मे ज्यादा बारिश नहीं, सरदी मे ज्यादा ठण्ड नहीं। सदैव सम शीतोष्ण और अनुकूल वातावरण ही रहता है।

बैंगलोर का लाल बाग तथा कब्बन पार्क बहुत प्रसिद्ध है। विधान शौध भी भारत की अपने ढग की अद्वितीय दर्शनीय इमारत है जिस पर २ करोड़ से अधिक रुपये व्यय हुए हैं। बहुत से लोगों का तो यह भी कहना है कि जिस देश में करोड़ों व्यक्तियों को पूरा खाना भी नसीब नहीं होता, उस गरीब देश की जनता का इतना रुपया शान-शौकत पर क्यों खर्च किया जाय?

बैंगलोर में तथा आस पास के उपनगरों में धर्म-प्रचार के कारण काफी जागृति आई। ता० १-४-५६ को भगवान ऋषभदेव की जयन्ति मेयर श्री एन० नारायण सेठी की अध्यक्षता में मूथा बाग नं० ३ विक्टोरिया रोड अशोक नगर में मनाई गई। ता० १०-४-५६ को सपिंगरोड मोरचरी बाजार में कई कारणों से आपस में कई वर्षों से मन मुटाव चल रहा था वह मुनि श्री के सद् प्रयत्न से नीचे लिखी शर्तों पर मिट गया।

बैंगलोर से श्रवण बेलगोला और श्रीरंगपट्टनम् होते हुए हम लोग मैसूर आए। मैसूर का राज्य बहुत प्राचीन है और यहां के राजा दशहरा पर्व जिस प्रकार मनाते हैं वह पूरे भारत में प्रसिद्ध है। मैसूर का वृन्दावन उपवन भी सारे देश में प्रख्यात है। इतनी अच्छी व्यवस्था और इतना विशाल उपवन हिन्दुस्तान में शायद ही दूसरा हो। इसे देखने के लिए दूर दूर के लोग आते हैं। मैसूर में और भी अनेक पर्यटन स्थल हैं। आम जनता में व कई हजार विद्यार्थियों में प्रवचन सदाचार प्राप्त हो इस विषय पर हुए। सेठ माणकचन्दजी कठारी ने धर्म प्रचार कराने में बड़ी मेहनत की। मैसूर से वापस बैंगलोर और बैंगलोर से मद्रास जाने का कार्यक्रम है।

बैंगलोर में हमने दो चातुर्मास किये। इन दोनों चातुर्मासों में विशेष उपकार हुआ। बैंगलोर सिटी में सेठ कुन्दनमलजी पुखराजजी लूंकड़ ने हमारी प्रेरणा से ११ हजार रुपये का दान करके जैन स्थानक में अभिवृद्धि की। इसी तरह सेठ मिश्रीलालजी पारसमलजी कातरेला ने ११ हजार का दान स्थानक के लिए किया। और पुराने स्थानक के नव निर्माण के लिए उपरोक्त दोनों सज्जनों ने करीब ३० हजार रुपये और लगाए। अलसूर में सेठ जवरीमलजी मेहता ने रु. ३० हजार के करीब लगाकर भव्य जैन भवन का निर्माण किया। फ्रेजर टाउन में जैन स्थानक के लिए एक बहुत बड़ी जमीन खरीदी गई।

दोनों चातुर्मासों के बाद संघ की ओर से दिये गए अभिनंदन पत्र यहां दिये जारहे हैं।

श्री वी० डी० जत्ती भी आये। इस सभा में महासतीजी श्री मावर कश्वरजी ने कन्नड भापा में बहुत ओजस्वी भाषण दिया। राज्यपाल और मुख्य मन्त्री दोनों ने ही वार्तालाप करके तथा जैन धर्म की विस्तृत जानकारी प्राप्त करके अत्यन्त सन्तोष प्रगट किया और भगवान महावीर को श्रद्धान्जली अर्पित की। उसी रोज मैसूर श्री संघ की विनती से मैसूर पधारने की स्वीकृति दी गई।

श्री रामपुर की राजकीय पाठशाला में "विश्व शान्ति" के सम्बन्ध में विचार करने के लिए एक गोष्ठी बुलाई गई। इस गोष्ठी में अनेक विद्वानों तथा विचारकों ने भाग लिया। कारपोरेशन के मेयर श्री श्रीनारायण, कर्नाटक असेम्बली के अध्यक्ष एच० एम० सीमा भावी, श्रीमती सुशीला एम० एल० ए०, आदि के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं।

इस सभा में विचार विमर्श के बाद सभी लोग इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि "आज बड़े राष्ट्रों ने मिलकर शीत युद्ध का वातावरण छेड़ रखा है। यह शीत युद्ध कभी भी वास्तविक युद्ध के रूप में परिणत हो सकता है। अत भगवान महावीर ने जो अहिंसा, प्रेम और अविरोध का सिद्धान्त प्रतिपादित किया है, उसका विश्व भर में प्रचार करना चाहिए और विश्व जन मत की ओर से बड़े राष्ट्रों के सामने यह माग रखी जानी चाहिए कि वे आम जनता के भाग्य के साथ अपने निहित स्वार्थों के लिए खिलवाड न करें।

हम लोगों ने बैंगलोर की सेन्ट्रल जेल में भी अपराधियों के सामने धर्मोपदेश किया और अनेक अपराधियों को यह प्रतिज्ञा दिलाई कि सजा समाप्त होने पर वे फिर अपराध न करें।

दिखाया रहेगा। हम सबका हृदय इस महान कमी की पूर्ति में गद् गद् हो रहा है।

आप श्री के प्रवचन बड़े ही ओजस्वी सारगर्भित एवं सोये हुए हृदय में जागृति पैदा करने वाले होते हैं। आपकी जादूभरी वाणी को सुन सुन कर कई भाई अश्रद्धालु भावक बने हैं। आपकी वक्तृत्व शक्ति अद्भुत रंग लाने वाली है। आपके बिना प्रेरणा किए ही उपदेश मात्र से यहाँ के भाई बहनों में बड़ी बड़ी तपस्याएं एवं प्रत्याख्यान हुए हैं।

आप जैसे विरले ही महान सन्तों में इस प्रकार की वाकपटुता पाई जाती है। टूटे हुए हृदयों में असीम प्रेम पैदा करा देना आपको खूब आता है। यदि हम आपको लोकप्रिय अभिनेता से भी सम्बोधित करें तब भी अतियुक्ति न होगी। आप वास्तव में सद्धर्म प्रचारक सन्त हैं।

आपकी हँसमुख मुद्रा से सदैव फूल बरसते रहते हैं। आपके सौम्य दीदार की अलौकिक छटा प्रशंसनीय है। दर्शन करने वाले भव्य प्राणियों को मुखारविन्द अतीव आनन्द का उद्रेक करता है। प्रत्येक नर नारी दर्शन लाभ कर अपने जीवन को धन्य धन्य मानते हैं।

आप श्री के गुणों का वर्णन करना हमारे लिये सूर्य के सामने दीपक दिखाने के सदृश है। गुरुदेव ! हमारे पास वह शाब्दिक चमत्कार नहीं जिससे हम आपके अनेक गुणों का बखान कर सकें। तदपि भक्ति से प्रेरित होकर जो कर्चिकित गुण-पुष्प आप श्री के चरणों में समर्पित किये हैं उन्हें आप बहुलता में मानकर स्वीकार करें।

ओम अर्हम्नम

प्रात स्मरणीय श्री मज्जैनाऽचार्य स्वर्गीय पूज्य श्री खूबचन्द्रजी म० के गुरुभ्राता स्व० प० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द्रजी म० के सुशिष्य श्रमण सघीय जैनागम तत्वविशारद पं० मुनि० श्री हीरालालजी म० के चरणकमलों में—

:: अभिनन्दन-पत्र ::

गुरुवर्य ! आपको अनेकश धन्यवाद है कि आपने उग्रविहार करते हुए प० मुनि श्री लाभचंदजी म०, मुनी श्री दीपचन्दजी म० मुनि श्री मन्नालालजी म० तथा तपस्वी मुनि श्री वसन्तीलालजी म० के साथ बैंगलोर नगर को पावन किया और मोरचरी व सर्पींग्सरोड श्रावक संघ की विनती को स्वीकार कर चातुर्मास के लिए पधारे।

वास्तव में देखा जाय तो जैन मुनियों का मार्ग बड़ा ही कटकाकीर्ण है। विहारकाल में सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास आदि अनेक भीषण परिषहों को सहनशीलता की मूर्ति बनकर सहन करना आप जैसे वीरों का ही कार्य है। कायर पुरुष इन परिषहों को सहन करने में असमर्थ ही होते हैं। आप वीरों ने उन परिषहों को फूलों के सदृश मानकर सहन किये हैं। एतदर्थ आपको कोटिश धन्यवाद है।

इस चातुर्मास काल में आपके यहाँ विराजने से बैंगलोर जैन समाज पर अत्यंत उपकार हुआ है। मोरचरी तथा सर्पींग्सरोड वाले श्रावकों को तो सेवा करने का यह प्रथम सुअवसर ही प्राप्त हुआ था। आपके चातुर्मास करने से यहाँ के श्रावक संघ के हृदय में अकथनीय धर्म जाग्रति हुई। आपके धर्मोपदेश से प्रेरित होकर जो सर्पींग्सरोड स्थित बगला ५१०००) हजार रुपये में धर्म प्रवृति करने के लिये लिया गया है, यह आप श्री के सफल चातुर्मास की अमर यादगार

हुए एक बार फिर हमारी विनंती को मान देकर बैंगलोर शहर में चातुर्मासार्थ पधारे।

आपने अपनी सरल एवं रोचक भाषा में अनेक हेतु दृष्टान्तों के साथ जैनागम के गहन तत्वों को श्रोताओं के सम्मुख रखकर भलीभाँति समझाने का प्रयास किया शत-शत प्रणाम है आपकी इस विद्वतापूर्ण मधुरवाणी को।

आपके ओजस्वी व्याख्यानों से प्रेरित होकर धमाधम शांति-समाज एवं बड़ी २ तपस्याओं की आराधना हुई श्रीमती चन्दुबाई (धर्मपत्नी श्रीमान् बसराजजी सा० गोलेछा) ने इक्कावन उपवास की अद्वितीय तपस्या कर समाज की शोभा में चार चांद लगा दिये। यह सभी आपही का प्रताप है, आप धन्य हैं।

आपके सुशिष्य पंडित मुनि श्री लाभचन्दजी म० सा० ने एक-न्तर की तपस्या की आराधना के साथ ही पात्र छूटकर तपस्या करके अपनी आत्मा को निर्मल बनाई है और साथ में "श्रावक व्रत अभियान" का भी प्रचार प्रारम्भ रखा जिसके फल स्वरूप यहां लग-भग ६०० श्रावक श्राविकाओं ने बारह व्रत अंगीकार किये। गुजराती बन्धुओं ने बारह व्रतों की विशेष उपयोगिता समझकर करीब दो हजार पुस्तकें गुजराती में प्रकाशित करवाने का निश्चय किया है, अनेक धर्म प्रेमियों को इससे लाभ होने की संभावना है। हम आपका आभार मानते हुए यह आशा करते हैं कि आपका यह अभियान निरंतर चालू रहेगा।

गुरुवर! आपने जब भारत के पूर्वी भाग—कलकत्ता आदि का प्रवास किया था तब मुनियों की सुविधाहेतु "उग्र-विहार" नामक मार्ग प्रदर्शिका प्रकाशित करवाई थी इसी प्रकार आप श्री के सौजन्य

हृदय सम्राट ! आपको विदाई देते हुए हम श्रावकों के हृदय दु ख से व्यथित हो रहे हैं। परन्तु सयोग के पश्चात् वियोग भी अवश्यम्भावी है। अतएव न चाहते हुए भी हम आपको विदाई दे रहे हैं। हमारी आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि सतप्त पिपासुओं को पुन दर्शन लाभ कराकर अपने अपूर्व प्रेम का परिचय देते रहिए। इस चातुर्मासकाल में हमारी तरफ से जो भी अविनय आशातना हुई हो, उसे हृदय में स्थान नहीं देते हुए क्षमा करेंगे ऐसी आशा करते हैं।

अन्त में शासनदेव से करजोड़ प्रार्थना है कि गुरुदेव चिरकाल पर्यंत गामानुग्राम विचरण करते हुए जैनधर्म का अधिक से अधिक प्रचार कर सकें ऐसी शक्ति प्रदान करें।

हम हैं आपके श्रावकगण

चातुर्मास स० २०१६ — श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक सघ,
स्थान मोरचरी सर्पींग्सरोड — मोरचरी, सर्पींग्स रोड,
बेंगलोर १. — बेंगलोर १

—ॐ अर्ह नम'—

प्रात स्मरणीय परमादरणीय श्री मज्जैनाऽचार्य स्वर्गीय पूज्य श्री खूबचन्द्रजी म० सा० के गुरु भ्राता स्व० पं० मुनि श्री लक्ष्मीचन्द्र जी म० सा० के सुशिष्य श्रमण सघीय जैनागम तत्व विशारद मधुर व्याख्यानी पण्डित मुनि श्री हीरालालजी महाराज साहब के चरण कमलों में सादर समर्पित—

:: अभिनन्दन पत्र ::

गुरुवर्य ! हमारा यह अहोभाग्य रहा है कि आप श्री मद्रास का चातुर्मास समाप्त कर सुदूर दक्षिण में जैनधर्म का प्रचार करते

९

तामिलनाड

卐

मद्रास जिसकी राजधानी है वह है सुन्दर, सुषमा मय प्रदेश—तामिलनाड। कांचीपुरम् जैसे तीर्थों और मदुराई जैसे विशाल मंदिरों वाले शहरों से जो प्रसिद्ध है उसी तामिलनाड की राजधानी मद्रास के लिए हम बैंगलोर से चले। रास्ते में कोलार की सोने की खानें निहारते हुए विशाल समुद्र तट पर चलते हुए, मद्रास शहर में हम लोग पहुँचे। मद्रास का समुद्र तट सचमुच प्रसिद्धि के काबिल है। इतना विशाल समुद्र तट कि जिसके किनारे लाखों आदमी बैठ सकते हैं। समुद्र की ऊर्मियां जितनी क्षणभंगुर हैं, उतना ही मनुष्य का जीवन भी क्षणभंगुर है। पर पागल मनुष्य इसकी चिन्ता नहीं करता और पाप में आसक्त रहता है। समुद्र जितना गंभीर और विशाल है उतना ही गंभीर और विशाल मनुष्य को बनना चाहिए। तभी जीवन सफल हो सकता है।

मद्रास में जैनों की संख्या बहुत बड़ी है। स्थानक वासी जैनसंघ के प्रमुख सेठ मोहनलालजी चोरड़िया उप प्रमुख सेठ सूरजमल भाई मंत्री सेठ मांगीचन्दजी भंडारी उपमंत्री भंवरलालजी गोठी हैं। अनेक स्थानों पर उपाश्रय बने हुए हैं। संघ व्यवस्था बहुत अच्छी है। सेठ अगरचन्द मानमल कालेज अमोलकचन्द गेलड़ा हाई स्कूल आदि

से "दक्षिण विहार" नामक पुस्तिका प्रकाशित करवाने की व्यवस्था की है और शीघ्र ही समाज की सेवा में प्रस्तुत की जायगी दक्षिण में विचरण करने वाले सत मुनिराजों के लिए यह एक वरदान का काम करेगी, आपके इस सौजन्य के लिए अनेकश धन्यवाद हमारी ओर से समर्पित है।

हे क्षमासागर दयानिधे! आपके सुशिष्य सेवाभावी मुनि श्री दीपचन्दजी म० सा० ने भी श्राविकाओं एवं बच्चों को किस्से कहानियों एवं चौपाई द्वारा धार्मिक सुसस्कार देने की बड़ी कृपा की है इसे भी हम भूल न सकेंगे।

इस चातुर्मास की अवधि में हमसे जान अनजान में किसी प्रकार से आपका अविनय हुआ हो, आपके हृदय को किसी प्रकार की व्यथा पहुँची हो तो हम नत मस्तक हो अत्यत विनम्रभाव से हार्दिक क्षमा मागते हैं। आप उदारचित्त हो हमें क्षमा प्रदान कीजियेगा, और इस शहर को पुन पावन करने की कृपा कीजियेगा।

अन्त में, श्री जिनेश्वर से यह विनम्र प्रार्थना हम करते हैं कि आप चिरायु होकर देश के कोने २ में जैन धर्म का प्रचार करते हुए जिन शासन की शोभा बढ़ाते रहें।

विदाई का समय है, हृदय गद्गद् हो रहा है अधिक क्या वर्णन करें। इन चन्द शब्दों को ही फूल की जगह पखुरी के रूप में आपके चरण कमलों में सविनय समर्पित कर संतोष का अनुभव करते हैं।

चातुर्मास वि० २०१८ आपके विनयावनत
बेंगलोर सिटी, श्री स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बेंगलोर

इस प्रकार यह एक सफल आयोजन रहा। जिसमें जैन धर्म और अहिंसा पर सुन्दर प्रकाश डाला गया किन्तु हम जैनों को सोच लेना चाहिए कि अब केवल व्याख्यानों से धर्म चलने का नहीं है। संगठित होकर धर्म करने की जरूरत है।

इस प्रकार हमारी दक्षिण की यात्रा पूरी हुई। अब वापस बंबई होते हुए उत्तर और पश्चिम की तरफ जाना है। हैदराबाद के आगे दक्षिण भारत की यात्रा में मुनिश्री ज्ञानचन्द्रजी महाराज मुनिश्री दीपचन्दजी म. मुनिश्री मन्नालालजी म. मुनिश्री बसंतीलालजी म. मुनिश्री गणेशीलालजी म. साथ रहे। इस प्रकार साथी मुनियों के सहयोग के कारण यात्रा में बहुत आनन्द रहा। दक्षिण प्रदेश विहार के लायक है और बहुत अच्छा प्रदेश है। इसलिए अन्य मुनियों को भी इस ओर आने की हिम्मत करनी चाहिए।

● ● ●

अनेक संस्थाएँ जैन संघ की देखरेख में अच्छे ढंग से चल रही हैं। लोगों में श्रद्धा भक्ति भी बहुत है।

त्यागराय नगर के जैन बोर्डिङ्ग में राजाजी राजगोपालाचारी की अध्यक्षता में "जैनधर्म की अहिंसा" के संबंध में एक सभा हुई। इसमें मैंने बताया कि "जिस युग में चारों ओर हिंसा, बलिप्रथा और वैर भाव का वातावरण छाया हुआ था, उस युग में भगवान महावीर का जन्म हुआ और उन्होंने दुनिया को अहिंसा के मार्ग पर चलने का आवाहन दिया। यदि उस समय भगवान महावीर न आये होते तो न जाने इस देश की क्या दशा होती! भगवान ने कहा है कि हे जीव, तुम जिसे मारना चाहते हो, वह तुम्हीं हो। दूसरे को मारने वाला अपनी ही हिंसा करता है। अपने ही आत्म गुणों का विघातक बनता है। इस दुनिया मे कोई भी प्राणी मरना नहीं चाहता है, किसी को मारने का, किसी को कष्ट देने का, संताप या परिताप देने का तुम्हें क्या अधिकार है? यह भगवान महावीर का उपदेश था। इस उपदेश ने जनता पर जादू का असर किया और वातावरण में चामत्कारिक परिवर्तन आया।"

राजाजी ने इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि "अहिंसा, अंधकार को दूर करने के लिए एक दीपक के सदृश है। अहिसा विश्व शांति का मूल मंत्र है। भारतीय दर्शनों में जैन दर्शन की महत्ता अहिसा के कारण ही है। अहिसा मनुष्य की निर्बलता की द्योतक नहीं बल्कि वह तो मानवीयता की प्रतीक है। जैन धर्म ने न केवल मनुष्यों तक बल्कि पशुओं और अविकसित प्राणियों तक अहिंसा का विस्तार किया है। दक्षिण में पशुबलि के बंद कराने का श्रेय जैन धर्म की इसी उत्कृष्ट और प्राचीन अहिंसा परम्परा को ही है।"

आवश्यकता है। बिना अहिंसा के आज दुनिया की समस्याएं और किसी मार्ग से हल नहीं हो सकती। मुख्य मंत्री ने जैन-साधुओं के कठिन आचार व्रतों की भूरि भूरि प्रशंसा की।

पैरम्बूर में उपाश्रय का काम बहुत दिन से अर्थाभाव के कारण अपूरा पड़ा था। हमारे उपदेश से प्रभावित होकर संघ ने उसे शीघ्र पू। करने का निश्चय किया और व्याख्यान के अवसर पर ही ४५) रुपयं का चन्दा हो गया। ६ भाइयों ने यह प्रतिज्ञा की कि १६०००) रुपये एकत्रित न होने तक वे पैरों में जूते नहीं पहनेंगे। अब इससे भी अधिक रुपये लगाकर वहां उपाश्रय का निर्माण करा दिया गया है।

तुम्बी बक्कम् से ही पूरे मद्रास शहर को जल वितरित किया जाता है यहां पर पानी का बहुत सुन्दर तालाब है। यहां पर भी उपाश्रय के निर्माण के लिए तैयारी की गई।

तामरम् में नये उपाश्रय का निर्माण हुआ था उसका उद्घाटन संपन्न हुआ। सेठ मोहनलालजी चौरड़िया की अध्यक्षता में सेठ भोगीचन्दजी भंडारी ने उद्घाटन-विधि संपन्न की। उपाश्रय में हॉल के निर्माण का भी निश्चय किया गया। नगर पालिका की तरफ से अनेक तिथीयों के दिन कत्ल खाना बंद रखने का निश्चय किया।

महाबली पुरम् में समुद्र के किनारे पर बना हुआ अति सुन्दर कलात्मक मंदिर है पत्थर में भी कलाकार किस तरह प्राण भर सकता है इसका नमूना यह मंदिर है। भारत में दक्षिणी प्रान्त शिल्प और स्थापत्य कला की दृष्टि से विशेष महत्व रखते हैं।

मधुरान्तकम् की संस्कृत पाठशाला का स्मरण अभी तक विद्यमान है। यहां पर संस्कृत का अध्ययन करने वाले ब्राह्मण

१०.

मद्रास से बैंगलोर

卐

मद्रास में सन् १९६० का चातुर्मास सानन्द सपन्न किया। अनेक प्रकार की त्याग तपस्या की प्रवृत्तिया हुई। अनेक विशिष्ट विचारों, समाज सेवकों और लोक नेताओं से सपर्क हुआ तथा उन्हें जैन धर्म का परिचय दिया।

बंगाल के प्रसिद्ध समाजसेवी एव स्वायत्त शासन मत्री श्री ईश्वरदास जालान से बातचीत के दौरान मे आध्यात्मिक विकास के बारे में चर्चा हुई। उन्होंने भी यह महसूस किया कि जबतक मानव-जीवन में अध्यात्मवाद की प्रतिष्ठा नहीं होगी, तब तक किसी भी प्रकार से सामाजिक उन्नति भी सभव नहीं। अध्यात्मवाद की बुनियाद पर सामाजिक जीवन का महल मजबूती से खड़ा रह सकता है।

इसी प्रकार मद्रास राज्य के सरल चेता और तात्विक वृत्ति के मुख्य मत्री श्री कामराज नाडार से भी गंभीर चर्चाएं हुई। उन्होंने इस बात को स्वीकार किया कि आज हिंसा और द्वेष से संत्रस्त मानव जगत को भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित अहिंसा की नितान्त

विराट पंडाल में सम्पन्न हुआ। श्रावक समाज में त्याग तपस्या दयाव्रत आदि के अनेक अनुष्ठान हुए।

तिरुक्कोविलूर में जाहिर प्रवचन किये। महावीर जयन्ती का भव्य आयोजन हुआ। भगवान महावीर की तप जीवन-साधना पर प्रकाश डाला गया। जैन धर्म क्या है? जैन साधुओं के व्रत क्या हैं? इन सब प्रासंगिक विषयों की जानकारी भी दी गई। आम जनता बहुत हर्षित हुई।

तिरुवण्णामलै में सर्व धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया। सभी धर्मों ने बुनियादी रूप में इसी बात पर जोर दिया है कि मानव को सत् तत्त्वों पर चलना चाहिए। अहिंसा सत्य प्रेम करुणा आदि को सभी धर्मों ने एक स्वर से स्वीकार किया है। फिर आपस में धर्म के नाम पर किस बात का झगड़ा?

इस सर्व धर्म सम्मेलन में स्थानीय जनता ने बहुत बड़ी संख्या में भाग लिया। अनेक वकीलों शिक्षकों डाक्टरों सरकारी अधिकारियों आदि ने भी भाग लिया। अनेक स्थानीय विद्वानों के तमिल में भाषण भी हुए।

इसी तरह का सर्व धर्म सम्मेलन वेलूर में भी हुआ। वेलूर में अक्षय तृतीया का समारोह बहुत शानदार ढंग से मनाया गया। जुलूस भी अपने ढंग का दर्शनीय था। यहां बाहर के करीब २२ स्थानों के व्यक्ति एकत्रित हुए जिनकी तादाद हजार बारह सौ तक पहुंच गई। अनेक लोगों ने त्याग-तपस्या व ब्रह्मचर्य व्रत को स्वीकार किया।

विद्यार्थियों के लिये सब प्रबंध निःशुल्क किया गया है। यहा जैनों के १२ घर हैं पर इनमें एकता का सर्वथा अभाव था। तीन दलों में सब लोग बटे हुए थे। इसलिए सबको उपदेश देकर समझाया गया और एकता स्थापित की गई। १० हजार रुपये का चन्दा उपाश्रय के निर्माण के लिए हुआ। यह निश्चय किया गया कि एक साल के अन्दर उपाश्रय का मकान हो जाना चाहिए। तिन्डीवनम् में जैन स्थानक के लिये बारह हजार का चन्दा हुआ और उपाश्रय के लिये मकान ले लिया गया। पुस्तकालय यहा अच्छे ढग से है।

पांडिचेरी हिन्दुस्तान का एक प्रसिद्ध स्थान है। यहा की प्रसिद्धि के २ कारण हैं—एक तो, श्री अरविन्द का साधना स्थल, अरविन्द आश्रम और दूसरे में पांडिचेरी पहले फ्रांसिसी उपनिवेश था और वह शांतिपूर्वक वापस स्वतन्त्र किया गया। श्री अरविन्द आश्रम भारत का एक आदर्श आश्रम है। यहा की व्यवस्था बहुत उत्कृष्ट है और साधकों का जीवन भी अपने ढंग से बहुत साधनामय है। पांडिचेरी में भक्ति भावना खूब हुई। लोगों ने व्याख्यान श्रवण तथा धर्म चर्चा का खूब लाभ लिया। अहिंसा और जैन धर्म के संबंध में वनमेन्ट हाई स्कूल में सार्वजनिक प्रवचन हुए। लोगों ने मुक्त हस्त से प्रभावना भी बांटी। रमेश भाई ने स्व० पिता के कहे अनुसार अपनी दुकान पर प्रवचन करवाया। अतिथी सत्कार भी किया। ५ अट्ठाईया हुई।

विल्लीपुरम् तो ब्रह्मचर्य पुरम् बन गया। यहा पर ५ महानुभावों ने दंपत्ति सहित ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया। उनके साहस और व्रत-भावना की सबने भूरि-भूरि प्रशंसा की। ब्रह्मचर्य सब से बड़ी तपस्या है और जीवन-शोधन का अमोघ उपाय है। विल्लीपुरम् में अनेक गावों के भाई-बहिन दर्शनार्थ आये। यहाँ पर केश लुन्चनम् का कार्यक्रम नथमलजी दुगड़ के यहा

जयन्ती के दिन निम्न काव्यांजलि सुनाई गई —

हीरक मुनि के श्री चरणों में काव्यांजली

धरती हंसती है अम्बर भी अभिनव गीत सुनाता है।
हीरक मुनि के श्री चरणों में कवि शुभ अर्घ चढ़ाता है॥
अर्पे शान्ति का प्रेम दया विश्वास मधुमता भक्ता का।
सत्य अहिंसा आत्म धर्म का सर्वोदय, तप निष्ठा का॥
बादल बरस हो रहे जगत को मुनि श्री पथ बतलाते हैं।
इसीलिये तो विविध सूमन, दिगपति शंख बजाते हैं॥
अटल अहिंसा के व्रतधारी करुणा धन तप-पूरित हैं।
कविता नहीं हृदय की अंजली सादर भाव समर्पित है॥ १॥

एक सुई की नोक बराबर भूमि जन्तु को दे न सके।
वे कौरव व इतिहासों में नाम लोप का कर न सके॥
युद्धों से ही सभी समस्या हल होती थी द्वापर में।
जब कि स्वयं भगवान कृष्ण का अनुशासन था घर घर में॥
किन्तु आज श्री हीरक मुनिजी शान्ति मार्ग बतलाते हैं।
दया-धर्म और सत्य अहिंसा का सन्देश सुनाते हैं।
भरता का निर्माल्य अपरिमित जनमान्य मन का अर्पित है।
कविता नहीं हृदय की अंजली मुनि चरणों में अर्पित है॥ २॥

शस्त्र श्यामला भारतमाता भूल गई अपने दुखड़े।
हिंसक भूल गये हिंसा को, सीख दया के रस बड़े॥
उत्तर दक्षिण पूरब पश्चिम गगनचरा पाताल सभी।
हीरक मुनि के वचनामृत से कण कण रहता मुखर अभी॥
सन्त-शिरोमणि शान्ति-मूर्ति मुनि हीरालाल कहाते हैं।
हीरक-प्रवचन की रस-निधि का मंगल कोष लुटाते हैं॥
सत्य अहिंसा शान्ति दया ही महा-सन्त का अमृत है।
कविता नहीं हृदय की अंजली सन्त-चरणों में अर्पित है॥ ३॥

कोलार, वह स्थान है, जहा जमीन से सोना निकलता है। ये सोने की खाने बहुत प्रसिद्ध हैं। यहा पर जैनों के ६ घर हैं। हमने ३ व्याख्यान यहा पर दिये।

सिंगल पालिया मे सेठ मिश्रीलालजी कातरेला के प्रेम बाग में ठहरे। कातरेलाजी की ओर से सबको प्रीति भोज दिया गया। बैंगलोर से सैंकडों की तादाद में स्त्री-पुरुष दर्शनार्थ आये। यहा मे १॥ मील दूर एक बहुत बडी सुन्दर गोशाला है। इसमें १५० एकड़ जमीन और ११२ पशु हैं।

बैंगलोर का ही एक प्रमुख उपनगर अलसूर है। सेठ जवरी लालजी मूथा के बनाये हुए उपाश्रय का उद्घाटन हुआ। इसी उपाश्रय में हम ठहरे। शूले मे भी उपाश्रय में ठहरे और सेठ छगन मलजी मूथा के बगीचे में ४ व्याख्यान दिये। इसी बगीचे में सुमति छात्रालय भी है।

काली तुर्क, ब्लाक पल्ली, सिप्रिंग्स रोड, तथा गाधी नगर होते हुए चिकपेठ आये। चातुर्मास का काल चिकपेठ के इसी उपाश्रय मे व्यतीत करना है। चारों ओर स्वागत एवं हर्षोल्लास का वातावरण छागया।

श्री जशराजजी गोलेछा की धर्म पत्नी श्रीमती धापूबाई ने ५१ दिन की तपस्या का पवित्र अनुष्ठान किया। सारे सघ ने उनको इस तप के लिए अभिनन्दन पत्र व दुशाला, मेयर श्री निजलिंगप्पा के हाथों से भेंट किया एव भव्य जुलूस निकाल कर उनको बधाइया दीं। और भी तपस्याएँ, सामायिक पोषध, उपवास हजारों की तादाद में शाति पूर्वक समाप्त हुए। हजारों गरीबों को भोजन दिया गया। स्व जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म० की ८४ वीं जन्म जयति कार्तिक शुक्ला १३ को मनाई गई। कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को

वीर लोंकाशाह जयंती का आयोजन भी सदा स्मरणीय रहेगा। पूरे समाज ने कारोबार, धंधा, उद्योग बंद रखकर प्रात: स्मरणीय वीर लोंकाशाह को श्रद्धांजलि सिनेमा हॉल में अर्पित की। ५०० स्त्री पुरुषों ने मुनिश्री लाभचन्दजी म० से बारह व्रत स्वीकार किये।

इस प्रकार अनेक उत्सवों, आध्यात्मिक समारोहों और नित्य प्रवचनों के साथ बैंगलोर का चातुर्मास संपन्न हुआ। बंबई (कोट) वर्धमान श्रावक संघ के अनेक गण्यमान्य सज्जन बंबई की विनति लेकर आये, उसे स्वीकार करके अब बैंगलोर के उपनगरों में होते हुए बंबई के लिए प्रस्थान किया।

• • •

झरिया से २५१ मील बनारस

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	बरकेम्द	नवीन भाई	१
६	कतरास	नया उपाश्रय	३
८	चिरुई	स्कूल	×
२	तोप चांची	स्कूल	
८॥	निमियाघाट	सेठ की कोठी	१
३	ईसरी	श्वे धर्मशाला	१५
११	डुमरी	स्कूल के सामने बड वृक्ष	×
३	बगोदर	ठाकुर बाड़ी	
९॥	गोरहर	मोहमद अली खान का मकान	
५	बरकट्ठा	नगेन्द्रनाथसिंह सर्किल इन्सपेक्टर	
६	सकरेव	गुमाश्ता बाबू मोहन्ते	
९	बरही	डाक बंगला	
४	सिगरावा	सरावगी सेठ सुन्दरलालजी बड़जात्या	१
७	चौपारण	जैन धर्मशाला	१०
६	मदुआ	डाक घर	×
६।	करमाहू	स्कूल	
७	दोभी	महन्त त्रिभुवनदासजी का आश्रम	
७	शेरघाटी	थाना	
५	बनडी स्थान दुर्गे स्कूल		
७।	रामपुर	बद्रीदास साह	१
४॥	बसिमा मधुपुर	शिवप्रसाद मुखिया	×
१६	औरंगाबाद	धर्मशाला	
७	प्रीतमपुर	बनवारीसिंह बनारसीसिंह की दुकान	

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
३	सिमला ग्राम	स्कूल व अस्पताल	×
१०	मेमारि	सेठ प्रह्लादराय चौधरी का जालानों राईस मील	अग्रवाल
१	शक्तिगढ	राईसमील	"
८	वर्द्धमान	दलपत भाई का मकान	३

वर्द्धमान से १०६ मील झरिया

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
१	बड़ा बाजार	मारवाड़ी धर्मशाला	७
३॥	फगुपुर	स्कूल	×
६	गलसी	स्कूल	
१३॥	पानागढ़	मिल्ट्री केन्टिन, नानकचन्द अग्रवाल की कोठी,	अग्रवाल
७	दीन दुःखी बाबा की झोंपड़ी	गौशाला व शिक्षा मन्दिर	
६	खरासोल	जगल विभाग का बंगला	
४	फरीदपुर थाना	थाना का बरामदा	
६	अन्डाल मोड़	देवीसिंह पजाबी	
६	रानीगज	अग्रवाल धर्मशाला	१०
१२	आसन सोल	गुजराती स्कूल	१०
७	न्यामतपुर	शान्ति भाइ के मकान पर	५
४	बराकर	अमृतलाल के मकान पर	५
७	प्योर श्यामल कोलियारी	रेल्वे क्रोशिंग के पास	१
५	बरषा	डाक बंगला	×
८	गोविन्दपुर	सेठ बनारसीदास अग्रवाल	अग्रवाल
६	धनबाद	मेहता हाउस	१०
४	झरिया	नया उपाश्रय	१००

इलाहाबाद से १२२ मील कानपुर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	सयद सराय	महारानी के मकान	१
७	पूरा मुफ्ती	कोठी हौल बरामदा	
१०	मुरतगंज	धर्मशाला	
१०	भरवारी	बाबूलाल दुकानदार के यहां	
११	मझूरा	स्कूल	
६	कटोसन पड़ाव	भाटे की चक्की	
५	खागा	सेठ रामदासजी का आईल मील	
८	थरियाव बाजार	कांजीहौस के पास कमरे में	
८	बिलन्दा	धर्मशाला	
५	फतहपुर	लाला लक्ष्मी प्रसाद का सिनेमा में	
१०	मलवां	सुमिफर स्कूल के बरामदे में	
५॥	गोपालगंज	स्कूल	
३॥	भेवरीकी मोड़	स्कूल	
९।	तिवारीपुर	स्कूल	
१२॥	चकेरी पेरो ग्राम	लाला दुर्गादास के मकान पर	४
५	कानपुर	श्री श्वेताम्बर जैन उपाश्रय कप्पर मुहाल	१

कानपुर से १८४ मील आगरा

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
५॥	गांधीनगर	लाला गुरुसेन के मकान पर	१५
५	कल्याणपुर	लाला कुन्दनलालजी मिश्रा की बगीची	
५	मन्धना	धर्मशाला	
५	चौबेपुर		
६	शिवराजपुर	ग्राम के मध्य चौराहे पर	
५	पूरा	प्राथमिक पाठशाला	
७॥	बिल्होर	हाई स्कूल में मास्टर का निवास	

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
७	धारून	स्कूल	×
४	डाल्मियानगर	जैन मन्दिर	८
११॥	सासाराम	धर्मशाला	
७	शिवसागर	मन्दिर के सामने	
८	सकरी	भगवानदास शा की धर्मशाला	
११	मुठानी	पुरी बाबा के यहा	
४	मोहनिया	स्कूल	
१०	घनेच्छा	चन्द्र कुण्डा धर्मशाला	
७॥	सैयद राजा	स्कूल	
५॥	चन्दोली	धर्मशाला	
७।	मुगल सराय	मनजी कच्छी का परमार भवन	१
१०	बनारस	अंग्रेजी कोठी या नया उपाश्रय	३५

बनारस से ७८ मील इलाहाबाद

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
१॥	कमच्छा	मोहनलाल शाह का मकान	
७	मोहन सराय	एक भाई का बरामदा	
६	मिर्जामुराद	सन्तमत सनातन कुटीर	
८॥	बाबुसराय	सेठ श्रीरामजी के मकान पर	
६	ओराई	एक झाड़ के नीचे	
६	गोपीगंज	सेठ जगजीवन एम पटेल की दुकान	१
११	बरौत	फलाहारी बाबा के यहा	
१०	सैदाबाद	हनुमानजी का मन्दिर	
२	हरिपुर	ठाकुर नरसिंह राम बहादुर के मकान पर	
४	हनुमानगंज	धर्मशाला	
७	झुसी	धर्मशाला	
६	इलाहाबाद	दिगम्बर जैन धर्मशाला	२०

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
६	चटसना चौकी	स्कूल	४
१०	भरतपुर	जैन स्थानक	२०

भरतपुर से ११०॥। मील जयपुर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
६	वसुआ	जैन पारसलालजी पलीवाल के मकान पर	५
६	बहरा चौकी	मन्दवाई मोड पर धर्मशाला	४
६॥	नदबारा	वैष्णव मन्दिर	
६	भामोली	स्कूल	
१०॥	महुवा	जैन धर्मशाला	११
६	पीपल खेडा	स्कूल	
११	मानपुरा	धर्मशाला	
६॥	सिकन्दरा	विश्राम चौकी से आई सड़क यहां भी लगी है।	
१६	दौसा	सेठ सोहनलालजी के नोहरे पर ठहरे	१
३	खोरोवा	तीर्थ मन्दिर	
१३।	मोहनपुरा	डाक बंगला	
६	कानोता	धर्मशाला	
६	जयपुर	लाल भवन चौड़ा रास्ता	५००

जयपुर से रेल्वे रास्ते १५६॥ मील नागोर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
३	जयपुर स्टेशन	५ मन्दिरों की जैन धर्म शाला	२
६	कनकपुरा	विश्राम	१
६	धानक्या	[illegible]	
१२	आसलपुर जोबनेर स्टेशन	धर्मशाला	
६	हरिनोदा	धर्मशाला	

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
६॥	अरौल	प्राथमिक स्कूल	×
६॥	सराय मीरा कन्नोज स्टेशन,	स्कूल का बरामदा	
४॥	जलालपुर पडवारा	मनिलाल ब्राह्मण का बगीचा	
६॥	गुरसहाय गंज	रामचन्द्रजी का मन्दिर	
४॥	सराय प्रयाग	माध्यमिक विद्यालय	दि० १
१०	छिपरामऊ	धर्मशाला	
५	प्रेमपुर	स्कूल	
८	बेवर	धर्मशाला	
६	परतापुर	स्कूल	
६॥	ललुपुरा	चक्कीवालों के बरामदे में	
५॥	मैनपुरी	दयालबाग	दि० १००
८॥	बेथराई	भूपसिंह ठाकुर के मकान पर	×
६॥	घिरोर	जैन दिगम्बर मन्दिर	दि० १२
६	आजमाबाद	जैन दिगम्बर मन्दिर	दि० १०
८	शिकोवाबाद	सोनी की धर्मशाला	दि० ५०
७	मक्खनपुर	ग्राम पचायत का मकान	×
६	फिरोजाबाद	धर्मशाला	दि० १००
१२	एक ग्राम	धर्मशाला	×
६	गोबर चौकी	धर्मशाला	
११	आगरा	मानपाड़ा स्थानक	३५
१॥	लोहा मण्डी	जैन स्थानक	५०

आगरा से ३२ मील भरतपुर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
८	अगुठी	नेमचन्दजी के मकान पर	२
८	अछनेरा	बम्बई वालों की धर्मशाला	२

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	रासीसर	एक भाई के मकान पर	७
५	देशनोक	जैन उपाश्रय	११५
१	प्याऊ	प्याऊ	
५	उदेरामसर	स्कूल	५०
७	बीकानेर	सेठिया का मकान	५०

बीकानेर से १७१ मील जोधपुर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
१	भिनासर	सेठ भूरचन्दजी हीरालालजी बांठिया के उपाश्रय में	१०
२	उदेरामसर	एक भाई के मकान पर	५०
६	सुजासर	प्याऊ	
२	प्याऊ	प्याऊ	
१	देशनोक	[illegible] मण्डप	१२५
४	रासीसर	केसरीमलजी चोरड़िया के मकान पर	७
५	मामलसर	प्याऊ	
७	नोखा	सरकारी डोहरा	१०
१	नोखा मण्डी	उपाश्रय	४०
४	[illegible]	[illegible]	
६	[illegible]	चम्पालालजी बांठिया के मकान पर	४
६	[illegible]	पेड़ के नीचे	×
६	गोगेलाव	जैन उपाश्रय	५०
६	नागोर	लोढ़ाजी का उपाश्रय	१५
४	[illegible]	मन्दिर	
९	मुंडेरा	महेश्वरी के मकान पर	

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
६	फुलेरा जँक्शन	धर्मशाला	+
५	साभर	श्वे० जैन मन्दिर	१०
५	गुढा	धर्मशाला	
१०	कुचामण स्टेशन	धर्मशाला	दि० १४
५	मीठडी	नोहरे मे ठहरे	
४	नारायणपुरा स्टेशन	धर्मशाला	१
७	कुचामण सिटी	रिया वाले सेठ तेजराजजी मुणोत का मकान	श्वे० ७ दि० अनेक
११	रमीदपुरा	धर्मशाला	+
१४	डिडवाना	मेसरी भवन	३० मा० १०० ते
७	कोलिया	प्याऊ	२ ते
७	केराव	ठाकुर मन्दिर	
७	कटोती	रामदेवजी का मन्दिर	
६	जायल	मेसरियों की बगीची	श्वे ३०० मेसरी
१०॥	फरडोद	जैन स्थानक	११
१०	रोल	प्याऊ	
१२	नागोर	उपाश्रय	३५०

नागोर से ७३ मील बीकानेर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
६	गोगोलाव	जैन उपाश्रय	५०
७।	अलाय	पचायती नोहरा	४०
८॥	चीलो	स्टेशन पर क्वाटर	
८	नोखामण्डी	जैन उपाश्रय	४०
४	नोखा	पचायती नोहरा	२०
६	पारवो	धर्मशाला	

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	सतवाना	माहेश्वरी के मकान पर	८ माहेश्वरी
०	मालुम्बा	उपाश्रय	५
५	दु दाड़ा	पचायती नोहरा	१२५
८	मजीठ	किसनाजी हंसाजी की धर्मशाला	४
२	भकरी को बाड़ी	एक भाई के मकान पर	१५
१	कोटड़ी	जैन स्थानक	१५
६	सेवाड़ी	सेठ रतनलालजी चुन्नीलालजी के मकान पर	१
५	सांवप	जैन स्थानक	१
५	रामी	सेठ भाईदासजी लूणका के मकान पर	१०
६	करमावास	जैन उपाश्रय	८
३	समदड़ी	जैन उपाश्रय	११०
६	सेतुम्बरी	एक भाई के मकान पर	८
३	पारलु	बाहरमलजी के मकान पर	२
३॥	जांगिया	सामन्तसिंहजी ठाकुर के मकान पर	
६॥	बालोतरा	सम्प्रदाय का उपाश्रय २०११ चौमासा	५

बालोतरा से १२२ मील पाथेराव सादड़ी

६	मेवानगर नाकोड़ा	जैन धर्मशाला		
४	असोतरा	तपागच्छ का उपाश्रय	ते १	१ स्था.
६	भासोतरा	चुन्नीलालजी के मकान पर		१५
६	कुसीप	एक भाई के मकान पर		५
४	गढ़सिवाना	ढूंढिया का उपाश्रय		१५
८	मोकलसर	उपाश्रय		५०
६	भलवाड़ा	जैन धर्मशाला		५

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	प्याऊ	प्याऊ	
५	कुचेरा	उपाश्रय	१००
४	प्याऊ	प्याऊ	
५	खजवाना	उपाश्रय	१५
६	रूण	भेरूजी के स्थान पर	२०
६	नोखा	उपाश्रय	४०
६	हर सोलाव	उपाश्रय	४५
६	रजलाणी	उपाश्रय	२५
४	नारसर	मंदिर पर ठहरे	३
४	भोपालगढ	श्री जैन रत्न विद्यालय	४०
६	हीरा देसर	मंदिर पर ठहरे	४
५	विराणी	मंदिर पर ठहरे	२
६	सेवकी	मंदिर पर ठहरे	३
६	वईकडो	चंपालालजी टाटिया के मकान पर	६
६	जाजिया	मंदिर पर ठहरे	२
३	बनाडा	स्टेशन	
६	जोधपुर	सिंहपोल	११००

जोधपुर से ६८ मील बालोतरा

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
३	महामंदिर	जैन उपाश्रय	४०
३	सरदारपुरा	फाकरिया बिल्डिंग	५०
४	बासनी स्टेशन	नीम के पेड़ के नीचे	
६	सालावास	नोहरे में ठहरे	४०
८	लूणी	जैन धर्मशाला	१२

उदयपुर से ७६॥ मील चित्तोड़गढ़

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
१	आयड़	सेठ केशुलालजी ताकड़िया के मकान पर	
३॥	देबारी	एक भाई के मकान पर	
५	डबोकी	मीठमलजी सिंघवी के मकान पर	
५	बठेड़ा	एक भाई के मकान पर	
५	भटेवर	मंदिर पर ठहरे	
६	मेनार	स्कूल पर ठहरे	
३	बान्सो	मंदिर पर ठहरे	
१०	मंगलवाड़	पंचायती नोहरे की दुकाने	
६॥	भादसोड़ा	पंचायती नोहरे में ठहरे	
१२	नाहरगढ़	एक भाई की दुकान पर	
१॥	सेती	सेठ फतेलालजी मनकस्या के मकान पर	
४	चित्तोड़गढ़	श्री जैन चतुर्थ आश्रम	

चित्तोड़गढ़ से १८६ मील बड़ी सादड़ी होकर रतलाम

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
१॥	चदेरी	उपाश्रय
६	परपावली	गणेशमलजी गांग की दुकान पर
३	गड़ूब	जैन मंदिर
८	मांगरोल	पटवारी जी की दुकान पर
६	निम्बाहेड़ा	उपाश्रय
८	मल्हा	वैष्णव मंदिर
३	बिनोता	उपाश्रय
६॥	भिंडर	उपाश्रय
६	पिपल्यो	धनजी के चौतरे पर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	किसनगढ	जैन धर्मशाला	१००
८	जालोरगढ	उपाश्रय	२०० श्वे.
८	गोदन	एक भाई के मकान पर	२५ श्वे
५	आहोर	जैन धर्मशाला	२५० श्वे
१०	उमेदपुरा	जैन धर्मशाला	१०० श्वे
६	तखतगढ	जैन धर्मशाला	२०० श्वे
३	घलाणा	जैन धर्मशाला	४० श्वे
८	साडेराव	जैन धर्मशाला	५०
७	फालना	श्वे जैन धर्मशाला	२ स्था
१०	मुडारा	उपाश्रय	२००
५	सादड़ी	लोंकाशाह गुरुकुल	३००

सादड़ी से ६५ मील उदयपुर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७	राणकपुर	जैन धर्मशाला
८	मघा	जैन धर्मशाला
६	सायरा	उपाश्रय में ठहरे
६	कम्बोल	जैन मदिर
१	पदराड़ा	नाथुलालजी के मकान पर
७	त्रिपाल	एक भाई की दुकान पर
३	जशवतगढ़	एक भाई के मकान पर
६	गोगुन्दा	श्वे जैन धर्मशाला
६	भाखीगुडा	इच्छादेवी का मदिर
८	थूर	रतनलालजी कोठारी
५	विद्याभवन	विद्याभवन
२	उदयपुर	पौषधशाला

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
४	डुगला	पचायती नोहरा	
६	कानोड	पंचायती नोहरा	
६	बोयड़ा	उपाश्रय की दुकान	
६	बड़ीसादड़ी	पचायती नोहरा	
७	मानपुरा	एक भाई के बरामदे में	
७	छोटीसादड़ी	पंचायती नोहरा	
८	केसुन्दा	ग्राम पचायती तहसील	
५	नीमच छावनी	उपाश्रय	
१॥	नीमच सिटी	उपाश्रय	
४	जमूनियाकला	जैन मदिर	
११	मल्हारगढ	सेठ छगनलालजी दुगड़ के मकान पर	
६	पीपल्या	उपाश्रय	
४	बोतलगज	उपाश्रय	
७	मन्दसौर	जनकूपुरा	
॥	शहर	महावीर भवन	
६	दलौदा स्टेशन	धर्मशाला	
८	कचनारा	उपाश्रय	
५	ढोढर	उपाश्रय	
७	अरणीया	बगले के बरामदे में	
३	जावरा	उपाश्रय	
८	हसनपाल्या	जैनमन्दिर	
५	नामली	उपाश्रय	
६	सेजावता	एक का बरामदा	
४	रतलाम	नीम चौक उपाश्रय	

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७	मागल्या	त्रिलोकचन्दजी की दुकान पर
३॥	बगला	सुरेन्द्रसिंह का पेड़ के नीचे
३॥	पलासिया	जौहरी सूरजमलजी का बगला
२	इन्दौर	महावीर भवन

इन्दौर से ७८ मील खाचरोद

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
१	राजमोहल्ला	धर्मदास मित्र मण्डल
४	गाधी नगर	नये मकान पर
५॥	हातोद	उपाश्रय पर
६	बीजो	मन्दिर
२।	आमरा	मन्दिर पर
७	देपालपुर	उपाश्रय
४	बगीची	बाबा राघवदासजी
६	गौतमपुरा	उपाश्रय
५	परिजलार	चौतरे पर
७	बडनगर	उपाश्रय
१	स्टेशन	मूलचन्दजी के मकान पर
११	रुनिजा	उपाश्रय
७	पचलाणा	उपाश्रय
२	कमेण	मन्दिर पर
५	महावदो	उपाश्रय
२॥	दफड़ावदो	मन्दिर पर
२	खाचरोद	उपाश्रय २०१४ चौमासा

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	आगरा	उपाश्रय
८॥	धनारद	राम मन्दिर
६॥	धार	बनिया वाड़ी का उपाश्रय
५	पिपल्या वड़ा	आनन्द भवनालय
३	गुनावद	राम मन्दिर
७	पाल विरोद	एक ब्राह्मण के घर
६॥	बेटमा	सेठ बसन्तीलालजी के मकान पर
८	कछालिया	उपाश्रय
६	राव मोहल्ला	धर्मदास मित्र मण्डल
१	इन्दौर	महावीर भवन

इन्दौर से १८४ मील खामगांव

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
५	कस्तूरबा ग्राम	स्कूल
८	सिमरोल	धर्मशाला
६	बाई	जमना बाई का मकान
८	बलवाड़ा	धर्मशाला
५	चमरिया चौकी	पुजारी ब्राह्मण का मकान
५	बड़वाह	जैन धर्मशाला उपाश्रय
३	मोरटक्का	दिगम्बर जैन धर्मशाला
४	सनावद	गोपी कृष्ण बाहती धर्मशाला
७	बमनगांव	लक्ष्मीनारायण का मंदिर
५	रोशिया	एक भाई के मकान पर
७	मोगावाड़ी	मंदिर पर ठहरे
३	देगाव-मकान	सेठ बाबुराम के मकान पर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
३	आकोदड़ा	स्कूल
४	निम्बोद	उपाश्रय
५	पिंगरारो	चुन्नीलालजी का मकान
५	कालु खेडा	उपाश्रय
७	सुखेड़ा	उपाश्रय
५	पिपलोदा	उपाश्रय
५	शेरपुर	मन्दिर के पास उपाश्रय
६	सैलाना	उपाश्रय
४	धामणोद	उपाश्रय
४	पलसोडा	एक भाई की दुकान
६	रतलाम	नीमचौक उपाश्रय

रतलाम से १०६॥ मील धार इन्दौर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७	धराड़	उपाश्रय
४	भारी बड़ावदा	रगलालजी का मकान
४	पिपल खूंटा	रुपचन्दजी का मकान
४	बरमावर	उपाश्रय
३	तलगारा	वृद्धिचन्दजी का मकान
४	मुलथान	सेठ हीरालालजी के मकान पर
४	बदनावर	उपाश्रय
४	बखतगढ़	उपाश्रय
५	कोद	उपाश्रय
२	विडवाल	उपाश्रय
५	कानवन	उपाश्रय

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	खडवा	श्वे० जैन मदिर
६	दुलहार	स्कूल का बरामदा
३	मधाना	स्कूल
६	बोरगाव	सेठ मोतीलालजी मागीलालजी के मकान पर
६॥	देनाला	जैन धर्मशाला
५॥	आशीरगढ	जैन धर्मशाला
७॥	निम्बोला	धर्मशाला
४॥	बुरहानपुर	सागर मन्शन में स्टेशन के निकट
३	बुरहानपुर शहर	एक भाई के घर
७	साहापुर	स्कूल
७	इच्छापुर	हनुमानजी का मदिर
११	रातलाबाद	जैन उपाश्रय
४	हरताला	उपाश्रय
७	वरणगाव	देवकी भवन
६	भुसावल	सेठ स्वरूपचन्दजी वम के मकान पर ठहरे
३	साकेगाव	ग्राम पचायत का मकान
७	नसिराबाद	पचायती नोहरा
६	जलगाव	सागर भवन

जलगाव से १०१ मील जालना

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
५	कसुबे	स्कूल
६	नीरी	राम मदिर
१०	पहूर	धन्नोबाई के मकान पर
६	वाकोद	स्कूल
३॥	फर्दापुर	मील में ठहरे

मील	नाम	ठहरने की जगह
३॥	सेलगी बजन्ता	गलीच रूम
७	बर्बठा	राम मन्दिर
७॥	गोलेगांव	जीन प्रेस में ठहरे
११॥	सिल्लोड	स्कूल के बरामदे में

यहां से औरंगाबाद का रास्ता जाता है

मील	नाम	ठहरने की जगह
८	मोभरदन	बालाजी का मंदिर
८॥	केदार खेडा	हनुमानजी का मंदिर
३॥	चांपाई पड़ाव	झाड़ के नीचे
८	पागरी	मंदिर पर ठहरे
४	पिपलगांव	मल्हाररावजी की वाडी
६	जालना	उपाश्रय

जालना से रेल्वे रास्ता ३०६ मील हैदराबाद

मील	नाम	ठहरने की जगह
५	सारवाडी	हनुमान मंदिर
७	वडी	हनुमान मंदिर
८	रामपी	बालाजी का मंदिर
१॥	चोकी	झाड़ के नीचे
७	परतुर	कचडी के जीन में
१	रायपुर	हनुमान मंदिर
६	सातोना	समाधि स्तूप
६	सेलु	रामवाड़ा
६	पिपलगांव की चोकी	झाड़ के नीचे
४	कोसा	हनुमान मंदिर
६	पेडगांव स्टेशन	नीम के झाड़ के नीचे

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
८	परभणी	उपाश्रम आईल मील
७	पींगली	केसरीमलजी रतनलालजी सोनी के मकान
४	मिरखेल	स्टेशन का वरामदा
८	पूरण	उपाश्रय गुजराती का मकान
६	चुटावा	स्टेशन का बरामदा
१३	नादेड़	उपाश्रय
२	चोकी	चौकी पर
७	मुकट	हनुमान मंदिर
६	सुदखेड़	स्टेशन पर
१०	गोरठ	साईनाथ का मंदिर
२	उमरी	विनोदीराम बालचन्द के कॉटन मील पर
१०	करखेली	स्टेशन पर
८	धर्माबाद	हनुमान मंदिर
६	बासर	स्टेशन पर
६	नवीपेठ	राम मंदिर
६	निजामाबाद	गोपालदासजी का दाल का कारखाना पर
८	डिचपल्ली	लकड़ी का कारखाना पर
७	गन्नाराम	वकटराव के मकान पर
४	सिरनापल्ली	स्टेशन
६	उपलवाई	स्टेशन
७	कामारेडी	जैन स्कूल
७	जगमपल्ली	कुमटो के घर पर
४	बीकपुर	स्कूल
६	रामायमपेठ	गरणी में ठहरे
६	नारसींगी	धर्मशाला आम के पेड़ के नीचे

मील	गाम	ठहरने की जगह
११	मालाई पेठ	हनुमान मंदिर
४	तुपरान	गरणी के बरामदे में
५	मनोहराबाद	एक भाई के यहां
४	कालाकल	हनुमान मंदिर
६	मेरचल	मकान में
६	बोलारम्	उपाश्रय
३	तिरमलगिरी	सरकारी पोलीस बंगला
४	सिकन्दराबाद	उपाश्रय
४	काचिगुडा	गांधी पूनमचन्दजी की जैन धर्मशाला
२	हैदराबाद	कबिरपुरा उपाश्रय
३	समशेरगंज	राजस्थानी पुस्तकालय
२	चारकमान	पुनमचन्दजी गांधी के मकान पर
७	बेगमपेठ	पुनमचन्दजी की कोठी
३	करखाना	मोतीलालजी कोठारी का मकान पर
४	पिकट	हनुमान मंदिर
३	सिकन्दराबाद	उपाश्रय में चातुर्मास किया २०१५ का

सिकन्दराबाद से १५५ मील रायपूर

मील	गाम	ठहरने की जगह
५॥	बेगमपेठ	सेठ पुनमचन्दजी गांधी की कोठी
६॥	बेगम बाजार	रामद्वारा
१	सुलतान बाजार	गुजराती स्कूल
३	चार कमान	बड़ी बाजार, आमवाल भवन
१	कबीरपुर	उपाश्रय
२	समशेरगंज	राजस्थानी पुस्तकालय

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	शमशाबाद	कृष्ण मंदिर
८	पालयाकुलि	एक दुकान पर
३	कुतुर	स्कूल
८	सनतनगर	मारुती मंदिर
८	बालानगर	गुडपल्लि श्रीराम के मकान पर
६	राजापुरा	रेड्डिचन्द्र के मकान पर
६	जडतल्ला	रमणलाल छोटेलाल कच्छी की दुकान
१०	महबुब नगर	शिवमंदिर हिन्दी प्रचार सभा
१०	कोहटा कदरा	मंदिर पर
४	देव कदरा	समाधि पर
८	मरकल	शिव मंदिर
६	जक्लेर	स्कूल का बरामदा
८	मकतल	खीमजी नेणजी कच्छी की गरणी
७	मागनूर	स्कूल पर
४	गुमडे वेलुर	मंदिर पर
६	चीकसूगुर	मंदिर पर
७	रायचूर	उपाश्रय
१	राजेन्द्रगंज	एक भाई के मकान पर
१	रायचूर	उपाश्रय
१	रायचूर स्टेशन	बाहया भाई के मकान पर

रायचूर से २६६ मील बैंगलोर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७	उडगल खानापुर	मंदिर
५	कुदति पल्लि	स्कूल
७	तुंगभद्रा	धर्मशाला

मील	नाम	ठहरने की जगह
८	कोमगी	माईल मील
६	पेद्दुलवड	मंदिर
५	हनुमान मंदिर	मंदिर दर्शनीय स्थान
७	आरोनी	गौ धर्मशाला
९	मानापुर	मंदिर
११	आंलुर	हिन्दी प्रेमी एलुम स्कूल
६	मामन्डा	मंदिर
५॥	सीपगिरी	मंदिर
६॥	गुडपल्ल	रत्नकोट वाले के मकान पर
४	कोमकोसला	शिव मंदिर
६	चन्नापुर	हाई स्कूल
४	रागलपाडु	समाधि पर
८	वरला कोन्डा	जीव मेस पर
३	मुरदुर	स्कूल
६	मन्नापल्लि	धर्मशाला
४	मुरमापुर	नीम के झाड़ के नीचे
३	पुडक	स्कूल
६	रासमपल्लि	मंदिर स्टेशन पर नीम के नीचे
४	भवलपुर	एक भाई के मकान पर
५॥	रामाड	पचायती बोर्ड का ऑफिस
६॥	मकूर	डाक बंगला
३	मामिडीपल्लि	सरकारी मकान
६॥	इप्पलचिपल्लि	स्कूल
५॥	मरैपल्लि	स्टेशन पर
६	गुडुर	महादेव का मंदिर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
४।	हनुमान मदिर	मंदिर
४	पेनकुन्डा	पहाडी रास्ता पर
६	सोमदे पल्लि	मदिर
६॥	तालाब की पाल	झाड के नीचे
६॥	हिन्दुपुर	डाक बंगले पर
४।	बसवपल्लि	मदिर
१२	गोरी बिदनूर	डाक बंगला
८	होडेंभावि	डाक बंगला
५	एकगाम	नीम पिपल के झाड के नीचे
११	दोंड बालापुर	एक भाई के नये मकान पर
५॥	मारसदरा	ज्ञानाचार्यजी के वहा
६	यलहका	धर्मशाला
४	हब्बाल	खेती वाडी बाला स्कूल
४	मलेश्वर	सेठ गुलाबचन्दजी के मकान पर
४	चिकपेठ	उपाश्रय

बैंगलोर के बाजारों मे ४४ मील का विहार

३	शूला बाजार	उपाश्रय
२	अलसुर	उपाश्रय
३॥	बिसानपुर	जैन मदिर
६	काली तुरक	उपाश्रय
॥	मोरम्बरी	उपाश्रय
२	गन्तरूप	स्कूल
३	बिलाक पल्लि	उपाश्रय

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
१॥	ब्राउनपेठ पालिया फ्रेजर टाउन	स्कूल धर्मशाला
४	मल्लेश्वर	सेठ गुलाबचन्दजी का मकान
१	श्रीरामपुर	स्कूल
१	मागडीरोड	स्कूल
३	पेलेस गुठ हल्लि	स्कूल
५॥	मुनरेड्डी पालियम्	स्कूल
४	गांधीनगर	गुजराती स्कूल
१	टाउन हॉल	हॉल में
१॥	बसंत गुडी	मकान में
२	मामूल पेठ	स्कूल
॥	बल्लापेठ रोड	गुजराती स्कूल
२	चामराज पेठ	राम मंदिर

बेंगलोर से मण्ड्या वेस गोस्ता होकर १६१ मील मैसूर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७	कंगेरी	कमरा में
४	डाक बंगला	बंगला में
७	बिदडी	स्कूल
५	मलयाडहल्लि	स्कूल
३	रामनगर	मंदिर के पीछे
७	चिन्नपट्टनं	एक मार्ग के मकान पर
४	सठेवी	मंदिर स्कूल
६	मद्दूर	मंदिर
४	गावलगेरी	स्कूल
८	मंडिया	राम मंदिर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
५	कालेल हल्लि	स्कूल
१०॥	पाड्डुपुरा	राम मदिर
७॥	चिरकुरली	स्कूल
१२	कृष्णराजपेठ	छत्रम्
८	ककेरी	मदिर
६	श्रवण वेलगोला	धर्मशाला
६	ककेरी	स्कूल
६	कृष्ण राजपेठ	नदी मंदिर
४	तुर्कहल्लि	स्कूल
८	चिरकुरली	डाक वगला
८	पाड्डुपुरा स्टेशन	टी वी वगला
४	श्रीरगपट्टनम्	टी वी वगला
७	क्रिाचयन कालेज	कालेज
२	मैसूर	उपाश्रय जैन धर्मशाला

मैसूर से कन्नवाडी कट्टा होकर ६६ मील वेंगलोर

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
१२	वृदावन	जी टी वगला
११	पाड्डुपुरा	मंदिर
५॥	वेबरहल्लि	मदिर
५॥	हनकेरे	कारखाना के वरामदे में
५	मद्दूर	मदिर
४॥	निरगुट्टा	स्कूल
८॥	चिन्पटर्न	मदिर
७	रामनगर	छत्रम्

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७॥	मुकबाल	मंदिर
३	तावरीकेरा	स्कूल
५॥	नरसीपुरा	बगला
२॥	कनहट्टी	स्कूल
७	कोलार	छत्रम्
११	बगार पेठ	छत्रम
८	राबर्टशन पेठ	उपाश्रय
१॥	अन्डरशन पेठ	उपाश्रय
१॥	राबर्टशन पेठ	उपाश्रय
५	वेत मगलम्	डाक बगला
५	सुन्दर पालयम्	पुलिस चौकी
६	श्रीकोटा	डाक बगला
६	नायकनेर	डाक बगला
६	पेरना पेठ	मोहनलालजी के मकान पर
६	मोरासाहल्ली	स्कूल
५	गुडियातम	स्कूल
६	पसीकुडा	एक भाई के मकान पर
६	विरिंचीपुरार	छत्रम्
८	वेल्लुर	उपाश्रय
८	पुटुवाक	स्कूल
७	अरकाट	गाधी आश्रम
२	रानी पेठ	लेबर युनियन
४	आमूर	स्कूल
५॥	पेगटापुरम	सरकारी मकान पर
५॥	शोलिंगर	छत्रम्
६	पाराची	पचायती बोर्ड

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
४	आरम्बाक्कम्	कन्हैयालालजी गादिया के मकान पर
४	पेरम्बुर	स्कूल
४	शिवकांचीवरम	मेत्रो श्री नायक मैत्र के मकान पर
१॥	छोटी कांचीवरम्	चंपालालजी संघवी के मकान पर
४॥	[illegible] पेठ	हाई स्कूल
४	वालाजाबाद	अमोलकचन्दजी भाला के मकान पर
५	तिनेरी	स्कूल
६	[illegible]	संबोगम सुपिरियार के मकान पर
६	श्री पेरम्बूर	धर्मशाला छत्रम्
६	श्री रामपालियम	राम मंदिर
५	तिरुवल्लूर स्टेशन	छत्रम्
२	तिरुवल्लूर	उपाश्रय
५	सेवा पेठ	स्टेशन का मुसाफिर खाना
७	पट्टाभिराम	रतनचन्दजी भंडारी का मकान
६	तिरुमली	केवलचन्दजी सुराना का मकान
३	बड़ी पुनमली	छत्रम्
१	छोटी पुनमली	गोविन्द स्वामी के मकान
५॥	मदुराई वाईल	सिद्धकरण बाफना का मकान
४	अमजी केरा	सुगनचन्दजी दुगड़ का मकान
१॥	धर्मदास मार्ई	सूरजमल मार्ई का बंगला
३	साहूकार पेठ, मद्रास	उपाश्रय

मद्रास के बाजारों का ६१ मील विहार

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
५	पुरिपपाक्कम्	देवराज का नया मकान
३	मयलापुरम	सोहनलाल मामद् का मकान

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
२	पटालय शूलै	नेमीचन्दजी सेठिया का मकान
२॥	पेरम्बूर	उदयराजजी कोठारी उपाश्रय
२	पटालय शूलै	नेमीचन्दजी सेठिया का मकान
२	साहूकार पेठ	उपाश्रय
२	चिंतोधरी पेठ	प्रार्थना जैन भवन
॥	पोदु पेठ	चपालालजी के नये मकान पर
२	नक्शा बाजार	उपाश्रय
४	सैदापेठ	ताराचन्दजी गेलडा का मकान
२	परम कु डा	विजयराजजी मूथा का मकान
१॥	पलभनतगल	स्कूल
॥	मीनापाकम्	अगरचन्द मानमल जैन कालेज
२।	पल्लावरम्	घीसूलालजी मरलेचा के मकान पर
४	ताम्बरम्	देवीचन्दजी के मकान पर
३	कुर्मपेठ	स्कूल
१॥	पल्लावरम्	घीसूलालजी का मकान
४	परमकु डा	विजयराजजी मूथा का मकान
४	महाबलम्	श्वे० स्था० जैन बोर्डिङ्ग
३।	राम पेठ	डाक्टरनो के मकान पर
२	मेलापुर	उपाश्रय
५	ढेडी बाजार (नेहरूबाजार)	उपाश्रय
१॥	रायपुरम्	वृद्धिचन्दजी लालचन्दजी मरलेचा का मकान
१॥	तज्जार पेठ	मोतीलालजी का मकान
४॥	वोश्री पेठ	ग्रामीणी के मकान पर
२	साहूकार पेठ	उपाश्रय २०१७ का चौमासा किया।

मद्रास से १७६ मील पांडीचेरी विहार

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
५	मेलापुर	उपाश्रय
५	नन्दराम बाजार	उपाश्रय
७	मदा बक्कम्	स्वे० स्थ० जैन बोर्डिंग
८	परम्बूर	उपाश्रय
८	पुन्नामल्लम्	मालाजी का मकान
७	केसर वाडी	उपाश्रय
६	अयनावरम्	एक भाई का मकान
६	महाबक्कम्	स्वे० स्था० जैन बोर्डिंग
२	सौकारपेठ	उपाश्रय
४	पल्लमूर	जिनकरणजी मूथा का मकान
४॥	पल्लावरम्	श्रीसुगनचन्दजी का मकान
४॥	ताम्बरम्	नया उपाश्रय
७	गुडुवांचेरी	नया मकान
७	सिंग पेरूमाल कोइल	कूलम्
६	चंगलपेठ	कुन्दनमलजी का मकान
४	तिमेली	स्कूल
५	तिरुकलीकुन्नम	कूलम्
२	महाबली पुरम्	"
१	तिरुकली कुन्नम्	"
७	मदोवरम्	स्कूल
७	करमगुडी	मन्दिर
२	मधुरान्तकम्	श्री अहोबिल मठ कन्या शाला
६	सात पाकम्	स्कूल
६	अचरापाकम्	एक भाई की दुकान

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	ओंगुरु	स्कूल
६	सारम	स्कूल
५	तिंडीवनम्	जैन धर्मशाला
६	ओमेदूर	मन्दिर
६	काटरो मफाकम्	के आर युथ रगम रेडिमार का मकान
५	स्कूल	स्कूल
७	पांडीचेरी	शातिभाई का मकान

पांडीचेरी से ३१३ मील बेंगलोर सिटी

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	विल्लीनूर	मन्दिर
४॥	शूगर मिल्स	मिल का मकान
७॥	वेल वानू	सरकारी गोदाम
६	विल्लूपुरम्	सुभद्रा प्रार्थना भवन
१	पाडी बाजार	नथमलजी दुगड़ का मकान
५॥	पटागम	एक भाई के मकान पर
८॥	तिरुवेन्तनलूर	मन्दिर
८	सित्तलिंगम	मन्दिर
५॥	तिरुक्कोलूर	भवरलालजी के मकान पर
७॥	तपोवनम्	स्वामी के मकान पर
६	वीरीयनूर	स्कूल
११	तिरुवणामलै	छत्रम्
७	मालावड़ी	एक भाई के मकान पर
८	पिलूर	एक दिगम्बर भाई के मकान पर
८	पोलूर	नई बड़ी बिल्डिङ्ग

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
८॥	कसव मवाड़ी	स्कूल
८	आरनी	एक भाई के मकान पर
८॥	मोसूर	स्कूल
६॥	आरकाट	गांधी आश्रम
७	पुरत्नाक	स्कूल
८	वेल्लूर	उपाश्रय
६	वीरंचीपुरम्	छत्रम्
६	पलिकुंडा	एक भाई के मकान पर
६॥	गुडियातम	स्कूल
१०॥	पेरनापेठ	सोहनलालजी के मकान पर
५॥	कोतूर	स्कूल
६॥	आसूर	नये छत्रम् में
११॥	पेरनापेठ	सोहनलालजी कांफरिया
६	नायक मेर	डाक बंगला
६॥	वीकोटा	डाक बंगला
६	मुम्बरपालयम्	स्कूल
५	बेद मंगलम्	डाक बंगला
५	रावर्टसन पेठ	उपाश्रय
२	एन्डरसन पेठ	स्कूल
२	रावर्टसन पेठ	उपाश्रय
८	बंगार पेठ	छत्रम्
११	कोलार	छत्रम्
६	नरसापुर	धरम होम
६	पुग बाल	मन्दिर स्कूल
७॥	होस कोटा	साईं मन्दिर

मील	ग्राम	घर
४	पाढ़वपुर	ब्राह्मण
६	चीनकुली	”
५	दण्ड खेरे	”
७	सीतगट्टा	”
६	श्रवण वेल गोला	दिगम्बर
६	जिन तार	ब्राह्मण
७	चन्दराय पटनम्	”
८॥	कस केरे	”
५	नुग लेहो	”
८	लारे हल्ली	”
८	रनमन्दा हल्ली	लिंगायत
४	तीपटुर	१३ जैन घर
८	काने हल्ली	×
८	अलसी केरे	अनेक जैन घर
६	वरुड केरे	×
३	वानावारा	१ घर जैन
८	मडीकट्टा	×
८	कदूर	६ गुजराती
४	बीरूर	६ ओसवाल
७॥	चटन हल्ली	लिंगायत
६॥	तरीकेरे	७ घर ओसवाल
६	कारे हल्ली	×
५	भद्रावती	३० घर जैन
८	कुण्डली केर	लिंगायत
७	जोलताल	ब्राह्मण

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
७	बेन्ट फील्ड	पुखराजजी के बगले पर
५	सिगल पालिया	प्रेम बाग
४	बगीचा	मोहनलालजी बोहरा का
१	अलसूर	नया उपाश्रय
१	शूला	उपाश्रय
१॥	काली तूर्क	उपाश्रय
१	शिवाजी नगर	उपाश्रय
१	सपिंगसरोड	उपाश्रय
३	गाधी नगर	एक भाई के नये मकान पर
१	चीक पेठ (बैंगलोर सीटी)	उपाश्रय २०१८ का चौमासा किया

बैंगलोर के बाजारों के नाम २१॥ मील

२	शीवाजी नगर	उपाश्रय
२	आपट पालिया	कोरपरेशन का नया मकान
१	सिर्पिग्स रोड	उपाश्रय
३	गाँधी नगर	एक भाई के नये मकान पर
२	मलेश्वर	गुलाबचन्दजी के मकान पर
४	शूले	उपाश्रय
२	कुन्दन बगला	कुन्दनमलजी पुखराजजी लूकड का
४	अलसूर	जवरीलालजी मूथा का उपाश्रय
१	शूले	उपाश्रय
३	चीक पेठ	उपाश्रय
२॥	मागडी रोड	बापूजी विद्यार्थी तिलय
५	यशवन्तपुर	एक भाई के मकान पर

मील	ग्राम	घर
५	पाडपपुर	ब्राह्मण
६	चीनकुली	„
५	दण्ड खेरे	„
७	सीतगट्टा	„
६	श्रवण वेल गोला	दिगम्बर
६	जिन तार	ब्राह्मण
७	चन्द्राय पटनम्	„
८॥	कस केरे	„
५	नुग लेह्री	„
८	लारे हल्ली	„
८	रनमन्दा हल्ली	लिंगायत
४	तीपटुर	१२ जैन घर
८	काने हल्ली	×
८	अलसी केरे	अनेक जैन घर
६	घण्ड केरे	×
३	वानाबारा	१ घर जैन
८	मडीकट्टा	×
८	कदूर	६ गुजराती
४	वीरूर	६ ओसवाल
७॥	चटन हल्ली	लिंगायत
६॥	तरीकेरे	७ घर ओसवाल
६	कारे हल्ली	×
५	भद्रावती	३० घर जैन
८	कुण्डली केर	लिंगायत
७	जोलताल	ब्राह्मण

मील	ग्राम	घर
६	चन्नगिरी	४ जैन घर
७	हसनगट्टा	×
५	शान्तिसागर	२ जैन घर
७	कोडिगट्टा	लिंगायत
७	कचेगे	ब्राह्मण
८	ककड़ा	×
४	हासड़ी	×
४	दावणगेरे	८५ घर जैन

दावनगिरी से २२० मील कोल्हापुर

६	हरिहर	कलक्टर का मकान
७	चलगेरे	स्कूल
७	राणीबिदनूर	जैन धर्मशाला
८	कमोला	स्कूल
५	मोटीबिदनूर	बस स्टेण्ड
७	हावेरी	एसोसियेशन
८	कुणीमल्ली	स्कूल
६	बंकापुर	पंचायती ओक
६	सिगांव	विठ्ठल मन्दिर
४	गुरुगुडी	हनुमान मन्दिर
८	शिगहल्र	शिव मन्दिर
११	भादरगुड्डी	स्कूल
६	हुबली	कच्छी ओसवाल का उपाश्रय
४	भाईरीदे पर कोप	मन्दिर
८॥	धारवाड	श्री श्वे० धर्मशाला

मील	ग्राम	ठहरने की जगह
६	वेलूर	मठ
६	कित्तूर	लिगायत
१॥	बस स्टेन्ड	बस स्टेन्ड
१०॥	एम० के० हुबली	डाक बगला
५	बागेवाडी	स्कूल
३	कोलीकोप	बगला
३	हलगा	दिगम्बर भाई का स्थान
४॥	वेलगाव	हरिलाल केशवजी का स्थान
७	होनगा	मन्दिर
६।	सुतपट्टी	डाक बगला
७	खानापुर	एक भाई के यहा
७	शखेश्वर	बस स्टेन्ड के पास
६	कणगल	एक भाई के यहा
८	निपाणी	दीपचन्द भाई के यहा
५॥	सोडलगा	स्कूल
७॥	कागल	लीला बहन के यहा
६	गोकुल शेरगाव	स्कूल
६	कोल्हापुर	उपाश्रय

कोल्हापुर से २१० मील पुना

मील	गाव	ठहरने का स्थान	जैन घर
६॥	हालोंडी	स्कूल	सारा गाव दिगम्बर है
३	चौकाग	दि० मन्दिर	दिगम्बर है
१०	इचलकरजी	शातिलालजी मुथा नेहरू रोड	१४ घर स्था० है

मील	ग्राम	ठहरने की जगह	घर जैन
५॥	मलपे	स्कूल	०
६॥	लोणद	उपाश्रय	७ स्था० १२ दे० है
५	निरा	युगल स्टोर्म	४ जैन के है
७	वाल्हे	नाथ मन्दिर	३ जैन के है
७	जेजोरी	चावड़ी	०
५	शीवरी	मेमाई मन्दिर	१ जैन है
४	सासवड	माली समाज गृह	७ स्था०
८	वडकी	स्कूल	१ गु० का है
६	हडपसर	विट्ठल मन्दिर	४ जैन है
५	पुना	नाना पेठ उपाश्रय	अनेक घर

पूना से ७३॥ मील पनवेल

५	खिडकी	जैन धर्मशाला	६स्था ४ते. ४० दे है
८	चिंचवड	नये उपाश्रय में	३५ स्था.
५	देहुरोड	मन्दिर	६ स्था २ ते २ दे है
७	वडगाव	उपाश्रय	१५ स्था
६	कामशेट	उपाश्रय	१३ स्था
५॥	कार्ले	उपाश्रय	५ जैन
५	लोणावला	उपाश्रय	३० स्था.
८	खापोली	जैन धर्मशाला	१ स्था ३० दे है
५	खालापुर	जैन धर्मशाला	१ महेश्वरी भक्ति वाला है
६	चौक	जैन मन्दिर	१५दे के है

०

पनवेल से ३० मील बम्बई

मील	गाम	ठहरने की जगह
१	शांति सदन	रतनचन्दजी का बंगला
२	कलुशा	एक भाई का मकान
४	बंगला	सेठ कस्तुर भाई लालभाई
७	सुना	मोरारजी का ... का बंगला
४	थाना	उपाश्रय
५	मोलुंड	उपाश्रय
५	घाटकोपर	उपाश्रय

बम्बई के बाजारों में ठहरने की जगह

६	विलेपारला	उपाश्रय
९	सार	उपाश्रय
४	माटुंगा	उपाश्रय
२	शीव	उपाश्रय
३	दादर	उपाश्रय
३	चीचपोकली	उपाश्रय
३	कांदावाडी	उपाश्रय
६	कोट	उपाश्रय
	कांदावाड़ी	उपाश्रय
	बोरीवली	उपाश्रय
	मलाड	उपाश्रय
	अंधेरी	उपाश्रय

– पता –

१ भ्रजलालजी शाह एण्ड कपनी मु जय सिंगपुर जिला कोल्हापुर एस रेल्वे

२ सेठ ख्यालीरामजी इन्द्रचन्दजी वरडिया मु जयसिंगपुर जिला कोल्हापुर

३ सेठ नरोत्तमदासजी नेमीचन्द शाह ठी घरवार भाग मु सागली

४ रमणीकलालजी हरजीवनदासजी शाह C/o अरुण स्टोर्स ठी मेनरोड मु सागली

५ सेठ रतीलालजी विठ्ठलदासजी गौसलिया मु माधवनगर जिला कोल्हापुर

६ दुगडुमलजी धनराजजी बोथरा ठी गुरुवार पेठ मु तासगाव जिला-सागली

७ सेठ कालीदासजी भाईचन्दजी पेट्रोल पंप ठी पोईनाका मु सातारा

८ मेसर्स मोखमदासजी हजारीमलजी मुथा बैंकर्समरचेन्ट भवानी पेठ मु सातारा

९ सेठ नेमीचन्दजी नरसिंहदासजी लुणावत ठी भवानी पेठ मु सातारा

१० शाह जेसिंगभाईजी नागरदासजी जैन मु लोणद जिला-सातारा

११ सेठ मालचन्दजी जसराजजी पुनमिया १२३५ रवीवार पेठ मु पूना २

१२ सेठ मिश्रीमलजी सोभागमलजी लोढा मु खिड़की जिला पूना

१३ सेठ भूमरमलजी जुगराजजी लुणावत मु चिंचवड जिला पूना

१४ सेठ मुलतानमलजी बोरीदासजी सचेती मु चिंचवड जिला-पूना

१५ सेठ अन्नराजजी लालचन्दजी बलदोरा देहुरोड जिला- पूना

१६ सेठ माणिकचन्दजी राजमलजी बाफना मु वडगाव जिला पूना

१७ सेठ बादरमलजी माणकचन्दजी मु कामसेट जिला–पूना

१८ सेठ शांतिलालजी हसराजजी लुणावत मु लोणावला जिला पूना

१९ सेठ रतनचन्दजी भीखमदासजी बांठिया मु पनवेल, जिला कुलाबा

मुनि विहार

तपस्वी मुनि श्री लामचन्दजी म०

लीलुआ

ता० ३ १२ ५५

आज हम लोग ७ मुनि* चातुर्मास समाप्त करके कलकत्ता से विहार कर रहे हैं। मुनियों का चातुर्मास का समय किसी एक ही शहर में व्यतीत करना पड़ता है। आज जैन मुनि राजस्थान मध्यप्रदेश पंजाब गुजरात सौराष्ट्र आदि ऐसे प्रान्तों में ही विचरण करते हैं, जहां धर्मानुयायियों की संख्या काफी है। इन प्रान्तों को छोड़कर कलकत्ता तथा इसी तरह के अन्य सुदूर प्रान्तों में साधु साध्वियों का आगमन पहले तो करीब करीब नहीं ही था। अब भी बहुत कम है। परन्तु हम ७ मुनियों ने इतना लम्बा रास्ता पार करके यहां आने का साहस किया। यहाँ सन् १९५५ का चातुर्मास बहुत सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। ऐसा अनुभव होता है कि यदि हम जैन मुनि कुछ व्यापक दृष्टि से काम करें तो यह बंगाल बिहार, उड़ीसा आदि का क्षेत्र हमारे लिए बहुत सुन्दर कार्य-क्षेत्र सिद्ध होगा।

आज प्रातःकाल कलकत्ता से जब हम रवाना हुए, तो हमें विदा करने के लिए हजारों व्यक्ति एकत्रित हो गये थे। यह स्वाभाविक भी था। कलकत्ता भारत की व्यापारिक राजधानी है। इसलिए भिन्न भिन्न प्रान्तों से हजारों की संख्या में जैन धर्मानुयायी लोग यहां

---

* १ मुनि श्री प्रतापमलजी २ मुनि श्री हीरालालजी ३ मुनि श्री दीपचन्दजी ४ मुनि श्री बसन्तलालजी ५ मुनि श्री राजेन्द्रमुनिजी ६ रमेशमुनिजी ७ स्वयं लेखक।

व्यापार के निमित्त आये हुए हैं। खास तौर से गुजरात तथा राजस्थान के जैन-भाई बहुत बड़ी संख्या में यहां हैं। सभी ने मुनियों को भरे हुए मन से विदा किया।

कलकत्ता शहर से चलकर हम लोग चार माइल पर स्थित कलकत्ता के ही उपनगर लीलुआ में आकर रामपुरिया गार्डन में रुके हैं। चारों ओर कलकत्ता का श्रावक-समाज घिरा है। सब की आंखों में वियोग का यदि कष्ट है तो पुनरागमन की आशा भी है।

बर्दवान

ता० ११-१२-५५ :

हम बंगाल की शस्य-श्यामल भूमि को पार करते हुए निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। कभी ८ मील कभी १० मील। कभी इससे भी ज्यादा। किसी भी प्रदेश या स्थान का पूरा अध्ययन करना हो तो पाद-विहार से ज्यादा अच्छा और कोई माध्यम नहीं हो सकता। छोटे-छोटे गांवों में जाना, नदी, नाले, पर्वत पहाड़, सबको पार करते हुए ग्राम-जीवन का दर्शन करना, पद-यात्रा में ही संभव है। हम देखते हैं कि किस प्रकार किसान सवेरे से शाम तक कड़ी मेहनत करके देश के लिए अन्न पैदा करते हैं, पर वे स्वयं गरीब तथा असहाय के असहाय बने रहते हैं। उनके पास हरे-भरे मन-मोहक खेत हैं, पर उनके बाल-बच्चों का भविष्य तो सूखा का-सूखा है। स्वयं उनकी किस्मत भी हरी-भरी नहीं।

खास तौर से यह बंगाल देश तो बहुत ही गरीब है। यहां के किसानों तथा खेतीहर मजदूरों के चहरे पर न तेज है, न उत्साह है और न स्वतंत्रता की अनुभूति है। जिस बंगाल में रवीन्द्रनाथ जैसे महान् लेखक हुए, बंकिमचन्द्र तथा शरदचन्द्र जैसे महान् उपन्यासकार

हुए, जगदीशचन्द्र बसु जैसे महान वैज्ञानिक हुए, सुभाषचन्द्र बोस जैसे महान् देश सेवक हुए, चैतन्य महाप्रभु रामकृष्ण परम हंस और अरविन्द घोष जैसे महान् आध्यात्मिक पुरुष हुए इस बंगाल की आम जनता का जीवन कितना शोषित पीड़ित और बेसहारा है यह पाद विहार करते हुए अच्छी तरह से अनुभव हो जाता है।

कलकत्ता से चलने के बाद श्री रामपुर सेवड़ाफुली चन्द्रनगर मगरा पडुआ मैमारी शक्तिगढ़ आदि गाँवों में रुकते हुए बंगाल के सुप्रसिद्ध नगर वर्धमान पहुँचे हैं। पहले बिहार बंगाल उड़ीसा क्षेत्र जैन धर्म के केन्द्र रहे हैं। इस शहर का नाम श्रमण भगवान वर्धमान के नाम से पड़ा है।

हम सातों मुनि यहाँ से तीन मार्गों में बंटकर तीन दिशाओं में रवाना होने वाले हैं। मुनि श्री हीरालालजी म. झरिया की ओर मुनि श्री प्रतापमलजी म. सैंथिया की ओर तथा हमने रानीगंज की ओर विहार किया।

दुर्गापुर

ता० १८।१२।५५ :

आज हम हिन्दुस्तान के नये तीर्थ दुर्गापुर में हैं। सदियों से गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ भारत अब आजाद है और स्वतन्त्रतापूर्वक अपना नव निर्माण कर रहा है। जगह जगह नये नये उद्योग खड़े हो रहे हैं। नये नये कारखाने खुल रहे हैं। बिजली का उत्पादन हो रहा है। बाँध बन रहे हैं। नहरें निकल रही हैं। इस प्रकार देश अपनी तरक्की के लिए संघर्ष कर रहा है। इस

प्रकार के नव-निर्माण के स्थानों को भारत के प्रधान मन्त्री जवाहरलाल नेहरू ने हिन्दुस्तान के "नये तीर्थ" बताया है। दुर्गापुर भी ऐसा ही एक तीर्थ है। यहा पर एक बहुत बड़ा बाध बनाया गया है। इस बाध के निर्माण पर ७ करोड रुपये खर्च हुए हैं। अपने आप खुलने तथा बन्द होने वाले ३४ द्वार इस बाध की अपनी विशेषता है। अपार जलराशि देखकर शास्त्रों में वर्णित पद्मद्रह का विवरण आखों के सामने आ जाता है। उत्ताल प्रवाह से बहने वाली दो नहरें उत्तर एवं दक्षिण की तरफ जाती हैं। उत्तर की तरफ प्रवहमान नहर भारत की पवित्र सलिला गगा नदी मे जाकर मिल जाती है। इससे इस नहर की उपयोगिता न केवल सिचाई के लिए है बल्कि जलयान के आवागमन के लिए भी हो जाती है।

दोनों किनारों पर बने हुए भव्य उपवन इस स्थान की शोभा में चार चाद लगा देते हैं। इस तरह के अनेक बाध भारत में बन रहे हैं। आर्थिक तथा भौतिक विकास की ओर तो पूरा ध्यान दिया जा रहा है पर आध्यात्मिक क्षेत्र आजादी के बाद भी उपेक्षित-सा ही पड़ा है। जब तक समाज का आध्यात्मिक स्तर उन्नत नहीं होगा, तबतक ये भौतिक उन्नतिया भी व्यर्थ ही साबित होंगी। वास्तव में स्वतन्त्रता तभी चिरस्थाई होगी जब हमारे समाज में मानवीय सद्गुणों का उत्तरोत्तर विकास हुगा। यह बहुत दर्दनाक बात है कि आजादी के बाद दुर्गापुर जैसे नये तीर्थो के रूप में भौतिक उन्नति ज्यों ज्यों हो रही है त्यों त्यों ही देश में स्वार्थ लिप्सा, भोग लिप्सा, राज्य लिप्सा तथा भ्रष्टाचार बढ़ रहा है।

बर्दवान से दुर्गापुर के बीच हमारे पाच पड़ाव हुए। फगुपुरा, गलसी, बुद बुद, पानागढ़ तथा खरासोल। सभी गावों में गरीबी का गहरा साम्राज्य है। फिर भी सभी जगह साधुओं के प्रति असीम आदर दीख पड़ता है। भारत आध्यात्मिक देश है इसलिए हर

परिस्थिति में यहां के लोग आध्यात्मिक मार्ग के प्रति तथा उस मार्ग पर चलने वालों के प्रति पूरी श्रद्धा रखते हैं ।

आसन सोल

ता० २६-१२-५५ :

हमारा मुनि-जीवन वास्तव में एक तपो भूमि है और नित नवीन अनुभवों को प्राप्त करने का अद्भुत साधन भी है। कभी एक जगह नहीं रहना। नित्य चलते जाना। यह कितना सुन्दर है। जैसे नदी का प्रवाह नहीं रुकता उसी तरह मुनियों की यात्रा नहीं रुकती। चरैवेति ! चरैवेति !! नित्य नया रास्ता नित्य नया गांव नित्य नया मकान नित्य नये लोग नित्य नया पानी। यह भी कितने आनन्द का विषय है। इन सब परिवर्तनों में भी मुनि को समता-दृष्टि रखनी होती है। कभी अनुकूलता हो तब भी आसक्त न होना और कभी प्रतिकूलता हो तब भी दुखी न होना, यही मुनि जीवन की परमोत्कृष्ट साधना है। इस साधना के बल पर ही मुनि अपने जीवन के चरमोत्कर्ष तक पहुँच सकता है ।

> लाभा लाभे सुहे दुखे जीविए मरणे तहा ।
> समो निन्दा पसंसासु तहा माणाव माणओ ॥

सूत्र अ० १६-९१ गाथा

कभी अधिक सम्मान मिलता है कभी अपमान का जहर भी पीना पड़ता है। लेकिन मानापमान की उभय परिस्थितियों में समता रखना ही हमारा व्रत है। हम आसन सोल पहुँचे तो हमारा भव्य स्वागत हुआ। कुछ सज्जन कलकत्ता से भी आये। कुछ दूसरे स्थानों से भी आये। स्थानीय लोग भी काफी संख्या में थे।

यहा प्रवचन में मैंने लोगों को जीवन में अध्यात्मवाद को प्रश्रय देने की प्रेरणा देते हुए कहा कि "आज विज्ञान का युग है। विज्ञान ने मनुष्य के लिए अत्यन्त सुख-सुविधा के साधन जुटा दिये हैं। रेल, मोटर, हवाई जहाज आदि के आविष्कार से यातायात की सुविधाए खूब बढ गई हैं। रहने के लिए एयर कण्डी सन्ड भवन उपलब्ध हैं। खाने के लिए वैज्ञानिक साधनों से बिना हाथ के स्पर्श के तैयार किया हुआ और रैफ्रीजेटर में सुरक्षित भोजन मिलता है। तार, टेलीफोन और टेलीविजन के माध्यम से सारा संसार बहुत निकट आ गया है। और भी बहुत प्रकार के आविष्कार हुए हैं। परन्तु इन सब आविष्कारों, तथा भौतिक सुख-सुविधाओं की चका-चौंध में आध्यात्मिक जीवन को खोखला नहीं बनने देना है। आज विज्ञान में अध्यात्म की पुट नहीं है इसीलिए अणु-शक्ति के आविष्कार से सारा संसार भयभीत हो उठा है। ऐसे बमों का आविष्कार हो चुका है, जिनके विस्फोट से क्षण भर में यह संसार, उसका इतिहास, साहित्य, सस्कृति और कला का विनाश हो सकता है इसी-लिए मेरी यह निश्चित मान्यता है कि विज्ञान की इस बढ़ती हुई भौतिक प्रवृत्ति पर अध्यात्मवाद का अकुश होना चाहिए। अन्यथा जैसे बिना अकुश के मदोन्मत्त हाथी खतरनाक साबित होता है, बिना लगाम के घोड़ा खतरनाक हो जाता है, वैसे ही यह विज्ञान भी समाज के लिए अभिशाप स्वरूप ही सिद्ध होगा।"

फरीदपुर, मोहनपुर, करजोड़ा रानीगज और सादग्राम इस तरह दुर्गापुर से आसन सोल के बीच में हमारे पाच पड़ाव हुए। हम यहा २४-१२-५५ को ही पहुँच गये थे।

आज यहा पर बगाल प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन का तीसरा अधिवेशन हो रहा था। सम्मेलन के आयोजकों का आग्रह भरा

निवेदन था कि हम भी इस सम्मेलन में उपस्थित रहें और अपने विचार प्रगट करें। इसलिए मैंने सम्मेलन के मंच से अपने विचार जनता के सामने रखे। मारवाड़ी जाति ने देश की व्यापारिक समृद्धि में अपना उल्लेखनीय योग दान दिया है। परन्तु दुर्भाग्य से आज मारवाड़ी समाज में अनेक सामाजिक रूढ़ियों तथा कुप्रथाओं ने अपना डेरा जमा लिया है। इसलिए अब बदले हुए जमाने की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उन कुप्रथाओं को समाप्त करके नये ढंग से अपना विकास करने की आवश्यकता है। जब मारवाड़ी समाज युग के साथ कदम से कदम मिलाकर चलेगा तभी वह एक प्रगतिशील समाज बन सकता है। अन्यथा युग आगे बढ़ जाएगा और यह जाति पिछड़ी की पिछड़ी रह जायगी।" मेरे कहने का यही सार था क्योंकि गोरक्षा का प्रश्न उस समय विचारार्थ सामने था और गोरक्षा के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव भी उपस्थित था इसलिए मैंने कहा कि—

भारत एक कृषि प्रधान देश है और यहां की कृषि बैलों पर आधारित है, इसलिए अर्थ-शास्त्र की दृष्टि से भी गोरक्षा का प्रश्न बहुत महत्त्व का है। वैसे गाय भारतीय इतिहास में अपना सांस्कृतिक तथा भावनात्मक वैशिष्ट्य तो रखती ही है। जैन-शास्त्रों में जिन विशिष्ट श्रावकों का वर्णन आता है वे गाय का पालन करते थे यह भी शास्त्रों में अनेक स्थानों पर वर्णित है। इसलिए भारतीय जन-मानस की उपेक्षा नहीं की जा सकती और गो-रक्षा के सवाल को टाला नहीं जा सकता।

न्यामतपुर

ता० १-१-५६ :

आज वर्ष का प्रथम दिन है। १९५५ का साल समाप्त हुआ और नूतन वर्ष हमारा अभिनंदन कर रहा है। यह काल-चक्र निरतर चलता ही रहता है। कभी भी रुकता नहीं। दिन बीतते है, रातें बीतती हैं, सप्ताह पक्ष और मास बीतते हैं उसी तरह वर्ष और युग बीत जाते हैं। जो काल बीत जाता है, वह वापस लौट कर नहीं आता।

जाजा वच्चई रयणी न सा पडि निअत्तई।
अहम्म कुण माणस्स, अफला जति राइओ।।

उ अ १४-गाथा २५

जाजा वच्चई रयणी न सा पडिनिअत्तई।
धम्मच कुण माणस्स सफला जति राइओ।।

उ अ १४-गाथा -५

अर्थात जो रात्रि बीत जाती है, वह पुन लौटकर नहीं आती। इसलिए जिसकी रात्रि अधर्म में गुजरती है उसकी जिन्दगी असफल हो जाती है, और जिसकी रात्रि धर्म की उपासना करते हुए गुजरती है, उसकी रात्रि सफल होती है। किन्तु मानव कभी भी इस बात पर विचार नहीं करता। खेल कूद में वह अपना बचपन व्यतीत कर देता है, भोग-विलास में अपना यौवन समाप्त कर देता है, और बुढ़ापे में उस समय पछताता है, जब इन्द्रिया क्षीण हो जाती हैं। धर्म करने का सामर्थ्य नहीं रहता। इसलिए यह नव-वर्ष का प्रथम दिन हमें इस बात की याद दिलाता है कि समय बीतता जारहा है। उसे हम पकड़ नहीं सकते पर उसका सदुपयोग करना तो मानव के हाथ में है।

मानव स्पुतनिक में बैठकर चन्द्रमा की यात्रा करने का सपना देख रहा है, ये साधु लोग पैदल क्यों चलते हैं ? इतना समय नष्ट क्यों करते हैं। पर उन्हें इस पाद-विहार का आनंद तथा उपयोगिता का भान नहीं है। पाद-विहार के समय प्रकृति के साथ सीधा सपर्क आता है। खुली हवा, खुला प्रकाश, खुली धूप, और खुली जल-वायु के सान्निध्य में हम ऐसा ही अनुभव करते हैं, मानो हम सृष्टि की गोद में हैं। इसके अलावा कोटि कोटि ग्रामीण जनता से संपर्क करने का भी यह श्रेष्ठतम साधन है। इसलिए इस राकेट युग में जितना महत्व हवाई-यात्रा का है, उससे कहीं अधिक महत्व पद-यात्रा का है। चितरजन में रेल्वे इजिन का कारखाना देखते समय हमारे साथ करीब ३० व्यक्ति थे। उनके साथ इस प्रकार का विचार-विमर्श चलता रहा।

यहा पर एक और महत्वपूर्ण कारखाना देखा। अण्डर ग्राउण्ड मे बिछाने के लिए टेलीफोन का तार यहा पर तैयार किया जाता है। तार पर इतना मजबूत कपड़ा चढ़ाया जाता है कि वह न तो सड़े न पानी से खराब हो और न जमीन में लबे समय तक रहने पर भी क्षतिग्रस्त हो। टेलीफोन का आविष्कार सचमुच एक ऐसा आविष्कार है जो मानवीय वैज्ञानिकता का अनोखा परिचय देता है। अब तो टेलिविजन का भी अवतरण हो चुका है। तार के अन्दर मानवीय वाणी और मानव का चित्र समाहित हो जाय और वह जड़ तार दूसरी ओर ठीक तरह प्रतिबिम्बित होता रहे, यह वास्तव में आश्चर्य की बात है। अब तो यह चीज बहुत साधारण हो गई है, पर जब इसका आविष्कार हुआ होगा, तब तो यह चमत्कार ही रहा होगा।

मैथून

ता० ४-१-५६ :

चित्तरंजन से ९ मील पर यह एक और मध्य स्थान है। यहां पर भी १८ करोड़ रुपये लगाकर एक बहुत बड़ा बाँध बना है। इस क्रम में सबसे पहले तो दुर्गापुर का बाँध आता था और अब दूसरा मैथून-बाँध है। यहां पर भू-गर्भ में एक पावर हाउस संसार में अपने ढंग का अकेला होगा।

झरिया

ता० ६-१-५६ :

मैथून से बराकर, बरवा, गोविंदपुर तथा धनबाद होते हुए आज हम झरिया पहुंचे। झरिया तथा आसपास का यह सारा क्षेत्र कोयलाखानी-क्षेत्र है। यहां से लाखों टन कोयला सारे देश को जाता है। यह कच्चा कोयला यहां भी जलता है, पीछे सोने को पसीज कर जाता है। आज औद्योगिक-युग में कोयले का कितना महत्व बढ़ गया है। गांवों का यह देश अब शहरों की ओर अग्रसर हो रहा है और इस केन्द्रीकरण का यह परिणाम है कि शहरों के लोग लकड़ी से भोजन नहीं पका सकते। इस तरह कुछ विशिष्ट स्थानों पर, जहां कोयला पैदा होता है, सारे देश को निर्भर रहना पड़ता है। औद्योगिक कारखानों के लिए तथा घरेलू उपयोग के लिए जब किसी कारणवश देश के एक कोने से दूसरे कोने तक कोयला नहीं पहुंच पाता तब सब जगह कोयला महंगा हो जाता है और हाहाकार होने लगता है। पुराने छोटे छोटे घरेलू उद्योग-धंधे विकेन्द्रित ढंग से चलते थे इसलिए उन उद्योगों पर कोई संकट नहीं आता था।

इसी प्रकार जगल की सर्व-सुलभ लकडी से भोजन पकता था, इसलिए उसकी भी कोई समस्या नहीं थी।

खैर यह झरिया धनबाद-कतरास-क्षेत्र, कोयले का खजाना है और व्यापार के निमित्त राजस्थान तथा विशेष रूप से गुजरात के व्यापारी यहा पर बसे हुए हैं। इनमे जैन-श्रावक भी काफी सख्या मे हैं।

झरिया मे पूज्य मुनिश्री प्रतापमलजी म० और राजेन्द्र मुनि जी महाराज से भेंट हुई। झरिया हमारे लिए दिशा-निर्णय का स्थान है। आगे किस ओर प्रस्थान किया जाय? इसका निर्णय यहा पर करना है। काफी विचार-विमर्श हुआ। श्री संघ तो स्वाभाविक रूप से यह चाहता ही था कि हम एक वर्ष इसी क्षेत्र में विचरण करे, साथ ही मुनिश्री प्रतापमलजी म० ने भी यह परामर्श दिया कि हम सातों मुनि यकायक यह पूर्व-भारत का क्षेत्र छोडकर चले जाय, यह ठीक नहीं होगा, इसलिए इस वर्ष इधर ही रहना श्रेयस्कर है। साथ ही हमारे साथी मुनि श्री बसतीलालजी म० का स्वास्थ्य भी बहुत लंबे प्रवास के लिए अनुकूल नहीं था। इसलिए सर्व-सम्मति से इसी निर्णय पर पहुँचे कि इस वर्ष इसी क्षेत्र में विहरण करना है।

अब हम लबा प्रवास चालू न करके यहीं आस पास के गांवों में घूमने के लिए प्रयाण करेंगे। इस ओर जो जैन-समुदाय है, उसे साधुओं का सपर्क कचित् ही उपलब्ध होता है, इसलिए यहा घूमना आवश्यक भी हो गया है।

कतरास गढ

ता ९-२-५९ :

हम इस बीच भागा बलिहारी कोलियरी करकेन्द बरारी कोलियरी आदि स्थानों में भ्रमण करते रहे। इन क्षेत्रों में कलकत्ता अहमदाबाद राजस्थान आदि से भी दर्शनार्थी बराबर आते रहे। जगह जगह हमें नित नया आनन्द और उल्लास का वातावरण मिलता था। प्रायः सर्वत्र रात्रि-प्रवचन सत्संग विचार-विमर्श और छोटी-बड़ी सभाओं का आयोजन होता था। कुसंस्कारवश गरीबों ग्रामीणों और छोटी जाति के लोगों में भी बहुत से दुर्गुण घर कर गए हैं। जैसे कि शराब तो प्राय हर गांव में अपना अड्डा जमाये हुए है। हालांकि हम मुनि अपनी आत्म साधना के पथ पर ही अग्रसर होते हैं फिर भी जिस समाज में हम रहते हैं उस समाज की क्या दशा है इसका विचार करना भी हमारा कर्तव्य है। शराब एक नशीली उत्तेजक और मादक चीज है। यह ज्ञान देहात की आम जनता तक पहुंचाना हमारे पाद-विहार का खास मिशन है। हम जहां भी जाते हैं, वहां लोगों को यह समझाते हैं कि शराब से समाज में सात्विकता का विनाश होता है। और तामसिक वृत्तियां बढ़ती हैं। फलस्वरूप मुनियों के उपदेश से लोग प्रभावित होते हैं और शराब का परित्याग करते हैं। इसी प्रकार दूसरे दुर्गुणों तथा कुसंस्कारों के लिए हम लोगों को समझाते हैं। सामाजिक जीवन की सात्विक प्रतिष्ठा के लिए यह आवश्यक है कि समाज में अधिक से अधिक सद्गुणों का विकास हो और दुर्गुणों का निरसन हो।

हम अपने पाद-विहार के दौरान में ता० १८-७-५६ को भी यहां पहुंचे थे और तब १२-१३ दिन यहां रहकर गये थे। अभी फिर

२ दिन के लिए यहां आये हैं। यह एक छोटा ही, पर सुन्दर नगर है। श्रावक-समुदाय में भी बहुत उत्साह है एक जैन शाला चलती है जिसमें काफी विद्यार्थी ज्ञानार्जन करते हैं। पिछली बार जब हम आये थे, तब यहा के छात्रों के सामने २, ३ बार व्याख्यान दिया। आज छात्र जीवन उत्शृ खलता की ओर बढ़ा जा रहा है। यह सपूर्ण देश के लिए बहुत दुर्भाग्य की बात है। आज के विद्यार्थी ही कलके राष्ट्र-नायक बनने वाले हैं। कल का व्यापार, शासन, व्यवस्था इत्यादि सब सभालने के लिए हमें अपने विद्याथियों का समुचित पोषण तथा विकास करना होगा। विद्यार्थियों की जो हीन अवस्था है, उसके लिए ज्यादा तो आज की शिक्षा-पद्धति जिम्मेदार है। आजादी प्राप्त कर लेने के बाद भी शिक्षा पद्धति गुलाम भारत की ही चल रही है, तब भला विद्यार्थियों में स्वातत्र्य शक्ति का तथा चेतना का उदय कहा से हो? यदि विद्यार्थियों के भविष्य को सुरक्षित करना है तो तुरंत शिक्षा पद्धति में सुधार करना चाहिए और आध्यात्मिक स्तर को बुनियाद में रखकर शिक्षा पद्धति का निर्माण करना चाहिए।

लाल बाजार

ता० १६-३-५६ :

इस क्षेत्र में एक जाति है—'सराक'। यह शब्द 'श्रावक' से बना है। इस जाति के रीति रिवाज देखने से यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि किसी युग में ये लोग जैन श्रावक थे। पर साधु-संपर्क के अभाव में धीरे धीरे इनके सस्कार बदल गये और आज इन्हें इस बात का भान भी नहीं है कि ये जैन धर्म को मानने वाले 'श्रावक' हैं। इस जाति में काम करने की जरूरत है। भूले भटके पथिकों को सन्मार्ग पर लाना कितना बड़ा काम है, इसका अनुमान सहज

ही लगाया जा सकता है। गांव गांव में घूमना किस गांव में कितने 'सराक' हैं, इसका पता लगाना और फिर उनका ठीक तरह से संगठन करके उनमें जैनत्व का संस्कार भरना बहुत आवश्यक है। यदि ऐसा करने में कुछ साधुओं को अपना अधिक समय लगाना पड़े तो भी लगाना चाहिए। यदि इस जाति का ठीक प्रकार से संगठन हो जाय और इनमें भली-भाँति काम किया जा सके तो निश्चय ही हमें हजारों घर मिलेंगे। इन हजारों घरों के जैन बन जाने से जिस बिहार में आज जैन धर्म को मानने वाले मूल निवासी नगण्य संख्या में ही हैं उस बिहार में तथा बंगाल में भी हजारों जैन धर्मावलम्बी हो जायेंगे। इस प्रकार इस क्षेत्र में फिर से धर्मोदय हो सकेगा।

करकेन्द, धनबाद, गोविन्दपुर, बड़ा श्यामाकोचियारी बराकर आदि गांवों में हम इन दिनों में घूमे। आज कतरास बाजार में हैं। यहां सराक' जाति के १५ घर हैं। कई अच्छे कार्यकर्ता भी हैं। यहां से हम कुछ प्रचार-कार्य आरंभ करने जा रहे हैं। 'सराक' जाति में विशेष रूप से कुछ काम हो सके यह उद्देश्य है। कुछ विशिष्ट प्रकार की पुस्तकें भी तैयार की गई हैं। अच्छा परिणाम आयेगा ऐसी उम्मीद है।

जे के नगर

ता० २१-२-५६ :

यह औद्योगिक क्रांति का युग है। सारा संसार औद्योगिक विकास की ओर भागा जा रहा है। जो देश औद्योगिक क्षेत्र में आगे बढ़ जाता है वह सारे संसार में अपना प्रभुत्व जमा लेता है। आज योरोप तथा अमेरिका जैसे पश्चिमी देश इसीलिए इतने प्रगति

शील माने जाते हैं, क्योंकि वहां औद्योगिक क्रांति चरितार्थ हो चुकी है। एशिया और अफ्रीका के देश अभी तक इसीलिए पिछड़े हुए माने जाते हैं, क्योंकि यहा पर विकसित और बडे उद्योगों का अभाव है। ये पिछड़े देश पश्चिम की राह पर आगे बढने के लिए उतावले हैं और हर प्रकार से उनकी नकल करते हैं। खान पान वेष भूषा रहन-सहन सब में आज पश्चिम की नकल की जारही है। सच पूछा जाय तो एशिया और अफ्रीका के लोगों के लिए पश्चिम के लोग देवता बन गये हैं। इसीलिए आज भारत भी पश्चिम की नकल करने में ही अपने को धन्य भाग्य समझ रहा है। जहा भी देखिए वह अपनी प्राचीन भारतीय सस्कृति की परम्पराओं को तोड़-मरोड़ कर नई भौतिक सभ्यता को प्रश्रय दे रहा है। नई दिल्ली जैसे शहरों में तो ऐसा लगता ही नहीं कि हम भारत में हैं। वहां की फैशन और औद्योगिक क्रांति के परिणाम स्वरूप आई हुई सभ्यता को देखकर ऐसा ही लगता है कि यह कोई पश्चिमी देश का बड़ा शहर है।

पर आज वे देश, जहा औद्योगिक-क्रांति हो चुकी है और जहा फैशनावतार हो चुका है, बहुत चिन्तित हैं। क्योंकि विज्ञान के सहारे पर उन्होंने बडे बड़े कारखाने तो खड़े कर लिये, सामान का उत्पादन भी खूब करते हैं, पर उस सामान को खपाने के लिए बाजार नहीं मिल रहा है। जिन दिनों में चंद देशों के पास ही बड़े बड़े कारखाने थे, उन दिनों में वे देश बाहर के देशों से कच्चा माल मगाते थे, और पक्का माल खूब ऊचे दामों पर दूसरे देशों को बेच देते थे। इस तरह छोटे और अविकसित देश इन बड़े देशों का माल खपाने के लिए अपनी मंडिया और अपना बाजार उपलब्ध करते थे। पर आज इन छोटे देशों में भी कारखाने खुलने लगे है। ये छोटे देश अब स्वयं अपने यहा माल बनाकर बाहर भेजना चाहते हैं। विदेशी मुद्रा की आवश्यकता आज प्रत्येक देश

रहे हैं। इसलिए कच्चा माल बाहर न भेजकर बड़े कारखानों में उसे पक्का बनाना तथा अन्य देशों को वह माल भेजकर विदेशी मुद्रा कमाना प्रायः सभी देशों का लक्ष्य है। यह विषम स्थिति बड़े उद्योगों के कारण आई है। साथ ही इन बड़े उद्योगों ने बेकारी को भी प्रश्रय दिया है। जो काम १   आदमी मिलकर करेंगे वह काम मिल में १० आदमी कर सकते हैं। इस तरह उत्पादन बढ़ेगा, उत्पादन की आमदनी एक आदमी के पास जाएगी और अधिक लोग बेकार होंगे। एक ही साथ अनेक दोष हैं। पर कहने का अर्थ यह नहीं है कि बड़े उद्योग हों ही नहीं। केवल उनपर नियंत्रण रखने की आवश्यकता है। कुछ बड़े उद्योगों के अभाव में तो देश की अर्थ व्यवस्था में और संसार की अर्थ व्यवस्था में संतुलन हो नहीं रह जाएगा।

जे के नगर एक औद्योगिक-नगर है। एल्युमिनियम का कारखाना है। बहुत अच्छी जगह है। आबोहवा भी स्वास्थ्यप्रद है।

कतरास

ता २१-४-६१।

पिछले महीने हम कतरास आये थे। एक माह १८ दिन में हमने जो प्रवास किया वह मुख्य रूप से 'सराक' जाति में काम करने की दृष्टि से ही था। गाँव गाँव में हमें खूब उत्साह मिला। सर्वत्र अत्यंत स्वागत हुआ। यहाँ सातत्य योग से काम करने की आवश्यकता महसूस हुई। क्योंकि एक बार जब मुनियों से संपर्क आता है तब तो लोगों को प्रेरणा मिलती है और जब वह संपर्क पुराना पड़ जाता है, तब फिर से संस्कार मिटने लगते हैं। इसलिए इस जाति में सतत काम चलता रहे इसकी योजना बनानी चाहिए

और काम को एक मिशन का रूप देकर उसे व्यवस्थित बनाना चाहिए।

कतरास में मुनि श्री जगजीवनजी म० तथा मुनि श्री जयती लालजी म० का समागम हुआ। ये दोनों मुनि सासारिक पक्ष में पिता-पुत्र हैं और बड़े अध्यवसाय के साथ पूर्व भारत में विचरण कर रहे हैं। जयती मुनि के व्याख्यान बड़े हृदय स्पर्शी और बड़े सरल सुबोध होते हैं। उनके व्याख्यान तथा उपदेश सुनकर आम जनता न केवल प्रसन्न और सतुष्ट ही होती है, बल्कि प्रभावित होकर सत्याचरण की प्रेरणा भी ग्रहण करती है।

कतरास मे जैन उपाश्रय का अभाव था। पर यहा के लोगों के उत्साह ने और विशेष रूप से देवचन्द भाई जैसे प्राणवान लोगों के प्रयत्न ने उस अभाव को पूरा कर दिया है। एक भव्य-भवन का निर्माण हो चुका है।

ता० २२–४–६१ :

जैन उपाश्रय का उद्घाटन-समारोह टाटा के सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्री नरभेराम भाई के हाथों से सपन्न हुआ। आस पास के लोग काफी सख्या में उपस्थित थे।

ता० २३–४–६१ :

महावीर जयंती !

भगवान महावीर इस युग के एक क्रातिकारी महापुरुष हुए हैं। यदि हम अहिंसा, सत्य, अध्यात्म और आत्मोन्नति का प्रशस्त-पथ दिखाने वालों का स्मरण करेंगे तो उनमें भ० महावीर का नाम

जाज्वल्यमान सूर्य की तरह चमकता हुआ दिखाई देगा। जिस युग में चारों ओर हिंसा साम्प्रदायिकता और धार्मिक अंध-विश्वासों का अंधेरा व्याप्त हुआ था उस युग में भगवान महावीर ने शांति प्रेम करुणा वैराग्य अपरिग्रह, अहिंसा आदि सिद्धांतों का प्रचार करके कुमार्ग में भटकती हुई जनता को सद्बुद्धि देकर सन्मार्ग दिखाया।

यह महावीर जयंती हर वर्ष आती है। हर वर्ष इस पावन-पुनीत अवसर पर बड़ी बड़ी सभाओं का आयोजन होता है। पर सोचने की मुख्य बात यह है कि क्या हम महावीर के अनुयायी उनके बताये हुए मार्गों पर चलते हैं? यदि महावीर-जयंती मनाने वाले महावीर के आदर्शों पर नहीं चलते तो जयंती मनाने का कोई सार नहीं।

कुछ लोग बाहर से ऐसे दीखते हैं मानो वे सचमुच महावीर के पद चिन्हों पर चलने वाले बारह व्रतधारी श्रावक हैं। शास्त्र की किसी भी उलझी हुई गुत्थी को वे सुलझा सकते हैं। सब जगह उनकी तारीफ भी होती है। वे निरन्तर ज्ञान-ध्यान में व्यस्त दीख पड़ते हैं। उनका घर आगम-ग्रन्थों भाष्यों टीकाओं आदि से भरा रहता है। सर्वत्र उनकी पूछ होती है। महावीर-जयंती जैसे अवसरों पर व्याख्यान देने के लिए उनको आमंत्रित किया जाता है। सर्वत्र स्वागत होता है। मालाएं पहनाई जाती हैं। उनका व्याख्यान सुनकर श्रोतागण मंत्र मुग्ध हो जाते हैं। तालियों की गड़गड़ाहट होती है।

पर यदि वास्तविक दृष्टि से देखा जाय तो उनके जीवन में सत्याचरण का प्रायः अभाव ही रहता है। सम्यग्ज्ञान सम्यक् दर्शन तथा सम्यक् चारित्र रूपी रत्नत्रय का उनमें कहीं दर्शन नहीं

होता। यह सारा केवल वाक् प्रपंच ही रहता है। देव, गुरु और धर्म की वास्तविक पहचान से रहित उनका यह पाण्डित्य खोखला ही होता है।

इसलिए महावीर जयन्ती आत्म चिन्तन का दिन है। इस दिन यह प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि हम ऊपर के दिखावे में न उलझकर सचमुच महावीर के आदर्शों पर चलेंगे।

यहा पर महावीर-जयन्ती का खूब अच्छा आयोजन हुआ। हमने लोगों को उपरोक्त विचार समझाने का प्रयत्न किया। सायं काल थोडी दूर पर स्थित खरखरी कोल्यारी पर महावीर जयन्ती समारोह में भाग लेने के लिए मुनिगण शाम को ही चले गये।

अभी यहा पर जो आस-पास की विभिन्न कोलियारी है उन्हीं में हम विचरण करेंगे। इस क्षेत्र में अपने जैन भाई भी बड़ी सख्या में हैं। सब से सम्पर्क करना भी आवश्यक है।

करकेन्द

१–७–५६ :

समस्त जैन समाज का यह आग्रह है कि हमें इस वर्ष का वर्षावास बिहार में ही करना चाहिए। यह बिहार-प्रान्त एक ऐतिहासिक प्रान्त है। भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध की पावन-भूमि यह बिहार है। एक कवि ने बिहार प्रदेश का वर्णन करते हुए लिखा है—

"महावीर ने जहां दया का, दुनिया को सन्देश दिया।
जिस धरती पर बैठ बुद्ध ने, मानव का कल्याण किया॥

जहाँ जन्म लेकर अशोक ने विश्व प्रेम था फैलाया ।
गांधीजी ने सत्याग्रह का मन्त्र जहाँ पर बतलाया ॥
जहाँ विनोबा ने भूखों को पथ प्रेम का दिखलाया ।
लाखों एकड़ भूमि यज्ञ में दान जहाँ पर मिल पाया ॥
ओ बिहार तुम पुण्य-भूमि हो गंगा तुम में बहती है ।
गण्डक-कोसी की विभीषिका भी तुम में ही रहती है ॥"

ऐसी ऐतिहासिक भूमि में जहाँ सम्मेद-शिखर, राजगृह, पावापुरी वैशाली आदि स्थान भारत के अतीत की गौरव गाथा सुना रहे हों रहने का सहज ही मोह होता है। उस पर भी भक्ति भरा आग्रह देख कर तो मन और भी पिघल जाता है।

झरिया कोलियारी-क्षेत्र का एक प्रमुख केन्द्र है। यहाँ पर लोगों में भक्ति-श्रद्धा भी बहुत है। मुनियों के लिए सभी प्रकार की अनुकूलताएं भी हैं। झरिया के भाइयों का अत्यन्त आग्रह है। इसलिए हमने इस वर्ष का चातुर्मास-काल झरिया में व्यतीत करने का निश्चय किया।

झरिया

ता० २-७-५६ :

हम चातुर्मास करने के लिए झरिया पहुँच गये हैं। सभी लोगों में एक प्रसन्नता की लहर दौड़ गई है। इधर जैन-मुनियों के चातुर्मास का अवसर ठीक वैसा ही है मानों महीनों से भूखे किसी व्यक्ति को खीर-पूरी का भोजन मिल गया हो इसलिए उत्साह स्वाभाविक है।

प्रथम सन्देश में ही हमने यह सन्देश दिया कि "आज जन-समाज में धर्म के प्रति और साधुओं के प्रति अरुचि उत्पन्न हो रही है। पर इस सम्बन्ध में गहराई से सोचने पर सहज ही यह ज्ञात हो जायगा कि इसका कारण चन्द स्वार्थी लोगों द्वारा धर्म का तथा साधु-वेष का दुरुपयोग करना ही है। अत हम वास्तविक धर्म की जानकारी देकर लोगों की हिली हुई श्रद्धा को दृढ़ बनाना चाहते हैं। इस दिशा में जो भी प्रयत्न हो सकेगा वह हम इस चातुर्मास की अवधि में करेंगे।"

ता० २–८–५६ :

चातुर्मास सानन्द चल रहा है। धर्म प्रभावना अधिकाधिक विकासोन्मुख है। जैन जैनेतर सभी लोगों में वास्तविक धर्म के प्रति आस्था दृढ हो रही है। अन्धकार को मिटाने के लिए अन्धकार का न तो मारने की जरुरत है और न झाडु से साफ करने की। हजारों वर्षों मे व्याप्त अन्धेरे को मिटाने के लिए बस, एक दीपक जला देना ही पर्याप्त है। उसी प्रकार अज्ञानान्धकार को मिटाने के लिए विवेक का दीपक जलाना ही पर्याप्त है। प्रवचनों में विभिन्न विषयों पर सन्तुलित रूप से विश्लेषण होता है। मेरा मुख्य कथन यही रहता है कि अपने विवेक को जागृत करो। यदि विवेक की आखें खुली हैं तो किसी चीज की चिन्ता नहीं। पाप की जड़ अविवेक ही है।

शिष्य पूछता है :

कहं चरे, कहं चिट्ठे, कहमासे, कहं सए।
कहं भुंजतो भासतो, पावकम्म न बन्धई ?

द० अ० ४-७ गाथा

स्वामी—कैसे चलना कैसे ठहरना कैसे बैठना कैसे सोना, कैसे खाना कैसे बोलना हे गुरुवर ! इसका मार्ग बताइये। ताकि पाप कर्म का बन्धन न हो।

गुरु उपदेश करते हैं :

जयं चरे जयं चिट्ठे जयं मासे जयं सए ।
जयं भुञ्जतो भासंतो पावकम्मं न बन्धई ।

द० अ ४ ८ गाथा

स्वामी—यतना से अर्थात्—विवेक से चलो विवेक से ठहरो विवेक से बैठो विवेक से सोओ विवेक से खाओ विवेक से बोलो कोई भी काम विवेक और यतना पूर्वक करने से पाप-कर्म का बन्धन नहीं होता।

पर्यूषण पर्व !

ता १०-६-५६ :

पूरे वर्ष में चातुर्मास एक ऐसा समय है जिसमें साधु-संगति व्याख्यान श्रवण,त्याग-तपस्या आदि का विशेष अवसर मिलता है । चातुर्मास में भी पर्यूषण एक ऐसा समय है जिसमें मनुष्य अपने पापों को धोने एवं आत्मा को विशुद्ध बनाने की ओर सचेष्ट रहता है। पर्यूषण में भी संवत्सरी पर्व एक ऐसा दिन है जिस दिन प्रत्येक धर्म श्रद्धालु अपनी आत्मा को अत्यन्त विनम्र एवं सरल बनाकर सभी वैर-विरोधों को भूल जाता है और भगवत् चिंतन अथवा आत्म-चिन्तन में लीन हो जाता है।

पर्यूषण पर्व के अवसर यहां कानोड़ में कितना उत्साह है। नये उपाश्रय के प्रांगण में भव्य-पण्डाल बनाया गया। देखिये न, लोग

भाग भाग कर पर्यूषण पर्व की आराधना के लिए तैयारी कर रहे हैं। प्रभात फेरी से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सैकड़ों व्यक्तियों ने इसमें भाग लिया। दिन भर ज्ञान चर्चा, प्रवचन, स्वाध्याय प्रतिक्रमण आदि का कार्यक्रम रहा। गृहस्थ-जीवन सघर्षों का जीवन है। आदमी घानी के बैल की तरह गृहस्थी के कामों में व्यस्त रहता है। धर्म-ध्यान के लिए उसे समय ही नहीं मिलता। अत पर्यूषण पर्व एक ऐसा समय है, जिस अवसर पर ८ दिन के लिए कोई भी गृहस्थ अपने धधों से मुक्त होकर आत्म-निर्माण का पथ प्रशस्त कर सकता है।

तपस्या का महत्व जैन धर्म में बहुत ही विशिष्ट रूप से बताया गया है। आत्मा पर जो कर्म-बधन दृढता से अपना साम्राज्य जमाये रहते हैं, उन बधनों को जड़मूल से विनष्ट करने का एक मात्र साधन तपस्या ही है। इसलिए ये पर्यूषण के दिन आत्म-साधकों के लिए तपस्या के दिन होते हैं। यहा पर भी तपस्या की अच्छी योजना तीन दिन, चार दिन, पाच दिन, आठ दिन, नौ दिन, इस प्रकार की तपस्याए और उपवास करके लोग पूरी तरह से सासारिक कामों को छोडकर आत्म-चिन्तन में ही लीन हो जाने के लिए प्रयत्न शील रहे।

खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमतु मे।
मित्ति मे सव्व भूएसु, वेर मज्झ न केणई॥

मैं जगत के सभी प्राणियों से क्षमा याचना करता हूँ। साथ ही समस्त प्राणियों को मैं भी क्षमा करता हूँ। इस ससार में सबके साथ मेरा प्रेम है, मेरी मित्रता है, किसी के साथ वैर-विरोध तथा द्वेष नहीं है।

यह शुभ कामना प्रत्येक व्यक्ति संवत्सरी के पावन-पुनीत प्रसंग पर व्यक्त करता है और अपने अंतरतम को विशुद्ध तथा निर्मल बनाता है।

झरिया एक कोयलाधारी क्षेत्र है। थोड़ी थोड़ी दूर पर अनेक कोलियारीज हैं और उनमें बहुत से जैन-श्रावक कार्य करते हैं। इन सभी ने पर्यूषण में भाग लिया है। ७ बार स्वामि वात्सल्य का भी आयोजन हुआ। स्वामि वात्सल्य समारोह में भी आस-पास के लोगों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

ता० १६-११-६५ :

झरिया में चातुर्मास-काल पूरा करके आज यहां से विदा हो रहे हैं। चार महीने में जिनके साथ घनिष्ठ संबंध आता है और जो साधु-संपर्क में निमग्न हो जाते हैं वे इस विदा-काल में खिन्न हो जाते हैं। पर साधु निर्लिप्त रहते हैं और अपनी मंजिल की ओर प्रयाण करते हैं।

झरिया का चातुर्मास बहुत ही सफल रहा। एक नया क्षेत्र खुला। काम करने की नई दृष्टि मिली। सराक जाति में काम करने की प्रेरणा को बल मिला। चातुर्मास के दौरान में स्थानकवासी कान्फ्रेंस के प्रमुख श्री धनेचन्द भाई, श्वेताम्बर समाज के प्रमुख कार्यकर्ता श्री कानजी पानाचन्द, श्री गिरधर भाई, श्री त्र्यंबक भाई, श्री सेठ [illegible]जी रामपुरिया आदि सज्जन आए। सभी ने यह महसूस किया कि इस क्षेत्र में जो काम हुआ है वह महत्त्वपूर्ण है और इस काम को आगे बढ़ाना चाहिए। कुल मिलाकर यह चातुर्मास बहुत सफल रहा और हमारे लिए प्रेरणादायक साबित हुआ।

सिदरी

ता० २६–११–५६ :

झरिया से विदा होकर, भागा डिगवाड़ी, होते हुए हम सिंदरी आये हैं। सिंदरी में बहुत बड़े पैमाने पर खाद का निर्माण होता है। खेती के लिए खाद उतनी ही आज आवश्यक मानी जाती है, जितनी आवश्यक मनुष्य के लिए रोटी है। पौधों को खाद म ही खुराक मिलती है। राष्ट्र के नेताओं की मान्यता है कि हिन्दुस्तान में खाद के उपयोग की बात बहुत कम लोग जानते हैं। इसीलिए यहा की जमीन से पर्याप्त उपज नहीं मिलती। यदि हिन्दुस्तान के लोग एक एकड में १५ मन धान पैदा करते हैं तो जापान जैसे देश के लोग खाद आदि के सहारे से ५० या ६० मन तक साधारणत पैदा कर लेते हैं। वहां थोडी सी भी खाद व्यर्थ नहीं जाने दी जाती पर भारत में तो गोबर जैसे बहुमूल्य खाद को लोग जला डालते हैं।

सिन्दरी में वैज्ञानिक तरीकों से खाद का निर्माण किया जाता है। इस खाद से जमीन की ताकत घटती है, ऐसा कुछ वैज्ञानिकों का मत है और कुछ अर्थशास्त्री ऐसा भी कहते हैं कि यह खाद हिन्दुस्तान के गरीब किसानों के लिए बहुत महंगी पड़ती है। इसलिए इस खाद की उपयोगिता के बारे में अभी मतभेद है।

सरकार ने बहुत खर्च करके इस कारखाने का निर्माण किया है। यह देखा गया है कि जिन खेतों में यह खाद डाली गई उनमे उत्पादन की मात्रा काफी बढी। हिन्दुस्तान कृषि-प्रधान देश है। इसलिए यहा की पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि के विकास को प्राथमिकता दी गई है। यह ठीक भी है। कृषि के विकास पर ही भारत का विकास निर्भर है। यदि कृषि उन्नत गढ की हो और

भारत के किसानों का जीवन-स्तर उठे तो निश्चय ही देश भी, किसी भी देश का मुकाबला कर सकता है। पंचवर्षीय योजनाएं इस दिशा में प्रयत्नशील हैं। देखें कब मंजिल तक पहुँचते हैं।

महुदा

ता० ३-१२-५६ :

कल हम ताम्र गढ़िया में थे। वहाँ एक विचित्र ही दृश्य देखा। 'कल्याणकारी राज्य' अच्छे कर्मचारियों के अभाव में और ईमानदार प्रशासकों के अभाव में न केवल 'अकल्याणकारी' बन जाता है बल्कि अत्याचारी ही सिद्ध होता है। रेलवे विभाग भ्रष्टाचार के लिए बहुत बदनाम है। उसका एक उदाहरण कल देखा। स्टेशन-मास्टर एवं रेल-गार्ड ने मिलकर जिस तरह से सार्वजनिक संपत्ति का अपहरण किया वह सचमुच इस देश की दयनीय अवस्था का एक नमूना है। जो काम सेवा के लिए और जनता की सुविधा के लिए चलाया जाता है वही काम इस तरह जनता के लिए भार स्वरूप बन जाता है। आजादी के बाद सरकारी कर्मचारियों में व्यापक रूप से भ्रष्टाचार व्याप्त हो रहा है। घूसखोरी तो मानों एक अधिकार ही बन गया है। कहीं भी जाइये बिना घूस के कोई काम नहीं होता। कानून का पालन कराने वाली कचहरी तो घूस खोरी का सबसे बड़ा अड्डा है। यदि इसी प्रकार चलता रहा तो यह देश कहां जाकर गिरेगा कुछ कहा नहीं जा सकता।

ताम्र गढ़िया से ८ मील चलकर आज हम महुदा पहुंचे। मार्ग बड़ा सुहावना था। गुलाबी ठंड पड़ रही थी। सर्दी के दिनों में प्रकृति भी अपने पूरे निखार पर रहती है। वर्षा समाप्त हो जाती है। खेतों में धान पक जाता है। कहीं कटाई चलती है। तो कहीं

खलिहान बिछे रहते हैं। ईख की फसल भी खूब बढी हुई दीख पड़ती है। यह इतना सुहावना और मनोरम मौसम हमारी पदयात्रा के लिए भी बड़ा अनुकूल होता है। गरमियों में थोड़ी धूप तेज होने के बाद चलना कठिन हो जाता है। लेकिन सर्दियों में धूप भी बड़ी अच्छी लगती है।

यहा श्री प्रभाकरविजयजी म० से भेंट हुई। इसी तरह विहार-काल में जगह जगह विभिन्न सप्रदायों के मुनियों से मुलाकात होती रहती है। यह बडे दु ख की बात है कि हमारे साधुओं में दूसरी सम्प्रदाय के साधुओं से सपर्क बढाने की वृत्ति बहुत ही कम है। आज जैन समाज अनेक छोटे-बडे टुकड़ों में विभाजित होगया है। इतना ही नहीं ये विभिन्न सप्रदायें एक दूसरे के विरोध में अपनी ताकत खर्च करती हैं। परन्तु हमें सोचना चाहिये कि हम सब एक ही महावीर के अनुयाई हैं। फिर आपस में इतना विरोध क्यों ? अलग अलग सम्प्रदायें हैं, तो भले ही रहें। पर आपस में सबको प्रेम रखना चाहिये। जैन धर्म की आधार-शिला प्रेम, अहिंसा और अनेकान्तवाद पर टिकी है। यदि अनेकान्तवाद के प्रतिपादक जैन धर्मावलम्बी खुद आपस में झगड़ते रहेंगे तो कैसे काम चलेगा ?

मैं तो बराबर यही सोचता रहता हूँ कि हमें अपने विचारों के भेद को सामने न लाकर तथा विरोध और झगड़े की बातों को प्रोत्साहन न देकर प्रेम का वातावरण बनाना चाहिए। इसी से हमारे समाज का विकास होगा और दुनियां को हम जैनधर्म का रास्ता दिखा सकेंगे। यदि आपस में लड़ने में ही अपनी शक्ति खर्च कर देंगे तो दुनिया को क्या मार्गदर्शन करायेंगे ?

बेरमो

ता० ३०-१-५७

आज ३० जनवरी है। वह भी ३० जनवरी की शाम थी। जिस प्रार्थना के लिए जाते हुए इस युग के महान अहिंसावादी महात्मा गांधी के सीने पर एक हिन्दू युवक ने संकुचित हिन्दुत्व की रक्षा के नाम पर गोली मार दी थी। अहिंसा और शांति का सारे संसार को मार्ग दिखाने वाला हिन्दुस्तान कभी कभी कैसे हिंसकवृत्ति के मनुष्य पैदा कर देता है। महात्मा गांधी ने देश को अहिंसक रास्ते से आजाद किया। देश की सेवा के लिये अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया। उनको गोली से मार देने का दुस्साहस सचमुच बिजली भयंकर घटना थी। उस सारे दृश्य को याद करके हृदय कांप उठता है और रोम रोम प्रकंपित हो जाता है।

रात्रि को महात्मा गांधी की निधन तिथि मनाने के लिये एक सभा हुई मैंने इस प्रसङ्ग पर अपने विचार रखते हुए कहा कि "आज देश का प्रत्येक राजनीतिज्ञ और सामाजिक सेवक महात्माजी का नाम लेता है। कांग्रेस सरकार तो कदम कदम पर गांधीजी की दुहाई देती है। दूसरी राजनैतिक पार्टियां भी गांधीजी का नाम रटती हैं। पर उनके सत्य और अहिंसा के आदर्श पर चलने वाले कौन कौन हैं? यह गम्भीरता से सोचने की बात है।

इस देश के इतिहास को देखने से यह ज्ञात होगा कि यहां व्यक्ति को तो बहुत ऊंचा चढ़ाया गया, उसकी पूजा भी खूब हुई पर उसके आदर्शों का पालन करने में सदा ही उदासी बरती गई। यदि गांधीजी के साथ भी ऐसा ही हुआ तो उनके साथ न्याय नहीं होगा।

वेरमो मे मुनि श्री जयतीलालजी म० के साथ भेंट हुई। यहां पर एक नवीन जैन स्थानक का भी उद्घाटन हुआ। उद्घाटन समारोह में भाग लेने के लिये आस पास के अनेक गांवों के सज्जन आये। कलकत्ता प्रसिद्ध जैन व्यापारी श्री कानजी पानाचंद ने उद्-घाटन-रस्म अदा की और मणीलाल राघवजी सेठ ने सभा की अध्यक्षता की।

बड़गाँव
ता० ३–२–५७ :

हम अब विहार के हजारी बाग तथा रांची जिले के पहाड़ी क्षेत्रों में से गुजर रहे हैं। पहाडी क्षेत्र और जंगली क्षेत्र प्राकृतिक रमणीयता में अपना सर्वोत्कृष्ट स्थान रखते हैं। जंगली रास्ते भी बड़े डरावने होते हैं। कहीं पगडंडी तो कहीं गाडी का रास्ता। चारों ओर सुनसान। हरी भरी उपत्यकाए। ऊंचे ऊंचे पेड, घनी झाडियां कांटे कङ्कर, पत्थर। यह इस रास्ते की सौन्दर्य-सुषमा है।

हमारा देश धर्म-प्रधान देश है। लेकिन दुर्भाग्य वश धर्म, कर्म के साथ कुछ रूढियां भी चल पड़ी। बलि प्रथा भी एक ऐसी ही धार्मिक कुरूढि है। लोग भ्रम-वश ऐसा मानते हैं कि देवी देवता को बलिदान की जरूरत है। वे किसी के बलिदान से प्रसन्न होते हैं। भ० महावीर के युग में तो यह बलि प्रथा बहुत ही प्रचलित थी इसीलिये भगवान ने इसका घोर विरोध किया। आज तो यह प्रथा बहुत कम रह गई है। फिर भी अनेक जातियों में इस प्रथा को अभी भी मान्यता दी जाती है। ऐसा ही बड़गाव में भी होता है। मैंने जनता को बलिप्रथा को बन्द करने के लिये समझाते हुए अपने व्याख्यान में कहा—

"सव्वे जीवावि इच्छन्ति जीविउं न मरिज्जिउं ।
तम्हा पाणवहं घोरं निग्गंथा वज्जयंतिणं ॥
द अ० ६ ११ गाथा

अर्थात्—सब जीव जीना चाहते हैं मरना कोई नहीं चाहता। अतः किसी भी जीव का प्राणापहरण करना पाप है। कोई यदि ऐसा समझते हों कि देवी-देवता किसी जीव के प्राणापहरण से प्रसन्न होते हैं तो वे निरी भ्रमणा में हैं। आप जब किसी को जिला नहीं सकते तब आपको इसका क्या अधिकार है कि किसी को मारें। यदि देवी को भोग ही देना है तो आप अपना भोग क्यों नहीं देते। बेचारे निरीह पशुओं का जो बोल नहीं सकते अपना दुख दर्द प्रगट नहीं कर सकते भोग चढ़ाकर यदि आप पुण्य कमाना चाहते हैं तो यह सर्वथा निन्दनीय एवं अवांछनीय है। इस व्याख्यान को सुनने के बाद अनेक भाइयों ने यह प्रतिज्ञा की कि वे अब किसी भी निमित्त से किसी भी मूक प्राणी की हत्या नहीं करेंगे। यदि देवी देवताओं की पूजा का सवाल आयेगा तो वहां भी अहिंसक मार्ग का अनुसरण करेंगे।"

इस प्रकार बड़गांव में यह एक बहुत ही अच्छा काम हो गया।

भरगढ़ा

ता ७-२-५७

रास्ते में विहार करते हुए हमें आज सरकस वालों का एक काफिला मिला। हमने देखा कि मानव अपने तुच्छ मनोरञ्जन के लिए और निकृष्ट स्वार्थ पूर्ति के लिये किस प्रकार पशुओं का शोषण करता है। बलि प्रथा में तो पशु को मार दिया जाता है पर इस

सरकस में तो जिन्दा पशुओं को मारपीट के सहारे इस तरह से बन्दी बनाया जाता है और इस तरह से उन्हें तग किया जाता है कि स्मरण करते ही हृदय करुणा से भर जाता है। इसी प्रकार अजायबघरों और चिड़ियाघरों मे भी मानव मनोरन्जन के लिए पशुओं को बन्दी बनाया जाता है। खुले विचरण करने वाले पशु सीखचों में बन्द होजाने के बाद ऐसा ही महसूस करते हैं, मानों उन्हें गिरफ्तार करके जेल में रख दिया गया है। ऐसी स्थिति में यह मानने को हम बाध्य हो जाते हैं कि मानव अत्यन्त स्वार्थी है। वह अपने निकृष्ट और नगण्य स्वार्थों की पूर्ति के लिए चाहे जैसा जघन्य कर्म करने को तैयार हो जाता है। कई देशों में बैलों को लड़ाया जाता है। भैंसों का खेल किया जाता है। घोड़ों को मनोरजन के दाव पर लगाया जाता है। गैंडों का और शेरों का शिकार भी बहादुरी के प्रदर्शन का और मनोरजन का एक साधन मान लिया है जब हम यह कहते हैं कि मास खाने की प्रवृति पशु के साथ मानव का घोर अत्याचार है, तब मानव समाज की खाद्य समस्या का तर्क उपस्थित कर दिया जाता है पर मात्र मनोरंजन के लिये पशुओं पर होने वाले अन्याय को देखकर सहज ही यह भेद खुल जाता है कि मनुष्य केवल अपनी जिह्वा के स्वाद के लिये और अपनी इन्द्रिय शक्ति को बढ़ाने के लिये ही मास का सेवन करता है।

कुल मिला कर हमें अब यह तय करना होगा कि इस ससार में पशुओं को जीने का हक है या नहीं और मानव के साथ पशुओं का क्या सम्बन्ध रहे। क्योंकि पशु अपने अधिकारों की माग नहीं कर सकता और वह अपने ऊपर होने वाले अत्याचारों के विरोध में आवाज नहीं उठा सकता इसलिये उस पर मानव अपनी मनमानी करता रहे यह मानवता के भाल पर कलक का टीका है और अहिंसा वादियों के लिये लज्जा की बात है।

इस सम्बन्ध में गहराई से विचार होगा तो मात्र दवाओं के लिये अथवा वैज्ञानिक प्रयोगों के लिये होने वाला बन्दरों का निर्यात और उनका संहार तथा इसी तरह की अन्य प्रवृत्तियाँ स्वतः बंद हो जाएँगी।

रांची

ता० १४-२-७१ ।

अब हम बिहार के एक सिरे पर पहुँच गए हैं। यह बिहार की ग्रीष्म-कालीन राजधानी है। जब यहाँ का राज्य अंग्रेजों के हाथ में था तब उन्होंने प्रायः हर एक प्रान्त में कुछ ऐसे हिल स्टेशन बनाये और गर्मी के दिनों में सारा काम-काज समतल-भूमि से उठाकर पर्वतीय भूमि में ले जाने का कार्यक्रम बनाया। क्योंकि उन्हें हिन्दुस्तान का धन अपने ऐश-आराम पर खर्च करना था एवं यहाँ की गरीब हालत के लिए वे चिन्तित नहीं थे इसलिए स्वराज्य के पहले यह सब चलता रहा। पर आश्चर्य है कि स्वराज्य के बाद भी जब कि देश के निर्माण के लिए धन की आवश्यकता है, हमारे राज्याधिकारियों एवं शासकों को राजधानी परिवर्तन करने में होने वाला लाखों का खर्च कैसे स्वीकार्य है?

इसके अलावा भी ग्रीष्म-काल में अधिकांश सरकारी सभाएँ ऐसे पर्वतीय स्थानों पर होती हैं। सरकारी अफसरों के लिए दोनों ओर चाँदी बनती है। उन्हें हिल स्टेशन पर घूमने का कोई खर्च नहीं करना पड़ता भत्ता भी मिलता है और सरकार का तथा कथित काम भी पूरा हो जाता है। पर मुझे लगता है कि इस देश के लिए इस तरह की फिजूल खर्च और आराम परस्त प्रवृत्ति खतरनाक एवं घातक है।

राची जैसे क्षेत्रों में इसाई मिशनरीज का काम भी खूब चलता है। इसाई मिशनरीज के काम को देखने के दो पहलू है। एक, उनकी सेवा-भावना और दूसरी उनकी धर्म परिवर्तन कराने की भावना। मिशनरीज के लोग आदिवासी गावों में जाकर जिस प्रकार सेवा का काम करते है लोगों की देख भाल, चिकित्सा शिक्षा, सफाई आदि पर ध्यान देते हैं। वह सचमुच उल्लेखनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी है। पर वे इस सेवा के माध्यम से लोगों को इसाई धर्म मे दीक्षित करते है, यह किसी भी प्रकार से उचित नहीं कहा जा सकता।

राची एक बहुत सुन्दर नगर है। स्वास्थ्य के लिए यहा का जलवायु बहुत अनुकूल है। यहाँ पर मस्तिष्क के रोगियों के लिए भी एक बहुत अच्छा चिकित्सालय है। श्वेताम्बर, दिगम्बर मिलाकर जैन श्रावक भी काफी सख्या में हैं। पहाडो सौन्दर्य और प्राकृतिक सुषमा वर्णनातीत है। टेढ़ी मेढ़ी बल खाती सडकें नागिन सी जान पडती हैं। पर आस पास के गावों में गरीबी बहुत है। आदिवासी महिलाए पीठ पर बच्चों को बाधे हुए काम करते दीख पड़ती है।

विकास विद्यालय

ता० २६–२–५७ :

राची से हमने राजगृह की ओर प्रयाण करते समय आज यहा पड़ाव डाला। यह विद्यालय राँची की उपत्यकाओं में इतना मनोहारी लगता है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

आजादी के बाद देश का विकास कार्य करने वाले युवकों की एक बहुत बड़ी सेना चाहिए। इस सेन [illegible] विकास कार्य का सिद्धान्त पद्धति और कार्यक्रम [illegible]ाकर दर्श[illegible] आवश्यक है। इस-

लिये देश भर में सरकार ने कुछ चुने हुये प्रमुख स्थानों में इस तरह के विकास विद्यालय स्थापित किये हैं। यहाँ से प्रशिक्षण प्राप्त करके ये विद्यार्थी गाँवों में फैल जायेंगे और जन-सेवा तथा ग्राम विकास का काम करेंगे।

यहाँ प्रशिक्षण भी विविध विषयों का दिया जाता है। खेती के उन्नत तरीके, शिक्षा चिकित्सा आदि का स्वास्थ्य-विकास पशु-पालन ग्रामोद्योग आदि का प्रचार तथा इसी तरह की अन्य सामाजिक प्रवृत्तियाँ गाँव गाँव में सिखाने की शिक्षा ये विद्यार्थी ग्रहण करते हैं।

हजारी बाग

ता० ४-३-५७ :

राँची पहाड़ पर है और हजारी बाग उपत्यका पर। टेढ़ी मेढ़ी सड़क इस तरह से घूमती हुई जाती है कि देखते ही बनता है। पूरा रास्ता हरा भरा जंगल का है। कहीं कहीं जंगली फूलों की शोभा भी अनिर्वचनीय है। जगह जगह बड़ा सौंदर्य है। झरने बह रहे हैं। तालाब हैं। बीच बीच में छोटे छोटे गांव हैं। चारों ओर घन घोर जंगल फैला हुआ है। ऐसे बीहड़ रास्तों से चलने में भी विलक्षण आनन्द आता है। सरकार ने ऐसे बीहड़ प्रदेश में भी डाक बंगले काफी संख्या में बना रखे हैं। स्कूल भी बीच बीच में मिलते रहते हैं। इसलिए ठहरने की कोई दिक्कत नहीं आती।

हजारी बाग जिले का शहर है। लेकिन सफाई आदि की दृष्टि से यहाँ की नगर पालिका उदासीन ही है, ऐसा भास हुआ। वैसे हिन्दुस्तान में आम तौर से सफाई की तरफ उपेक्षा ही बरती जाती है। पर यहां तो काफी गन्दगी देखने को मिली। धर्मशाला आदि की

व्यवस्था का भी अभाव ही दिखाई दिया। लेकिन दिगम्बर जैन भाइयों के ७० घर हैं। प्राय सभी बहुत अच्छे सज्जन और भावना शील हैं।

बिहार के कई नगरों में अखिल विश्व जैन मिशन का अच्छा काम है। कई कार्यकर्ता बहुत दिलचस्पी के साथ इस काम में लगे हैं। जैन मिशन ने विदेशों में भी जैन धर्म के प्रचार का अच्छा काम किया है। पद्मा गेट में राज्य रानी श्रीमती ललिता राज्य लक्ष्मी ने उपदेश का लाभ लिया और नारी आदर्श ऊपर प्रवचन सुना। महारानी ने निरामिष भोजी रहने का व्रत स्वीकार किया। क्षत्रिय धर्म के सम्बन्ध में भी काफी विचार विमर्श एक घण्टे तक होता रहा।

कोडरमा बांध

ता० ७–३–५७ :

लगभग २६ मील के विस्तार में फैली हुई अपार जल राशि! उठती हुई लहरें! कल कल करता हुआ पानी। तीनों ओर पहाड़ियां। कितना मोहक है। स्वय प्रकृति ही कितनी सुन्दर है, उस पर यदि मानवीय कला का हाथ लग जाय, तो उसकी सुन्दरता में चार चांद लग जाते हैं। जल और वनस्पति ये दोनों चीजें तो प्राकृतिक समृद्धि के सबसे सुन्दर उपहार हैं। नदी, नाले, झरने, बावड़ी कूप, तालाब और समुद्र के रूप में जल का सौन्दर्य तथा जंगल, उपवन, खेत, बाग-बगीचे आदि के रूप में वनस्पति का सौन्दर्य सर्वत्र ससार में फैला हुआ है। जल और वनस्पति न केवल सौन्दर्य के स्रोत हैं बल्कि मानव जीवन के आधार भी हैं। यदि इस प्रकृति का योगदान मानव को न मिले, तो उसका जीवन ही असम्भव हो जाय।

कोडरमा बांध पर आकर हमने देखा कि जल में कितनी शक्ति है। कहीं कहीं तो यह जल संहारक रूप धारण करके मानव-समाज के लिए अभिशाप भी बन जाता है पर यदि मानव इस प्रकृति के साथ अन्याय न करे, उसका केवल सदुपयोग मात्र करे तो यह प्रकृति उसके लिए शक्तिशाली मददगार बन जाती है।

इस विज्ञान युग में प्रकृति पर बहुत अन्याय हो रहा है। बड़े बड़े आणविक शस्त्रास्त्रों के प्रयोग से वायुमंडल दूषित किया जारहा है। इसीलिए वर्षा आदि में अनियमितता आरही है और बाढ़ भूकंप आदि का प्रकोप बढ़ता जारहा है। मानव को संयम से काम लेने पर ही प्राकृतिक जीवन का आनंद मिल सकेगा।

झूमरी तिलैया

ता० ८-२-५७ :

यह धरती जिस पर मानव बसता है कितनी महान है। कितनी सहन शील है। भगवान महावीर ने कहा है—

"पुढवि समे मुणी हविज्जा"

अर्थात् मुनि को इस पृथ्वी के समान गंभीर, धीर, सहनशील और उदार होना चाहिए। यह भूमि भूमा है। 'भूमा' यानी अनन्त। अन्त नहीं। यह सारी सृष्टि को अपने वक्ष स्थल पर धारण किये हुए है। यह सारे संसार के लिए अपना रस देकर अन्न उत्पन्न करती है। पहाड़ों जंगलों, नदियों और समुद्रों को भी इसी ने धारण किया है। इसको खोदने से पीने का मधुर जल प्राप्त होता है। यह धरती ही करोड़ों टन कोयला पैदा करके औद्योगिक समृद्धि को स्थिर रखती है। यह पृथ्वी यदि पैट्रोल पैदा न करे तो संसार

भर का यातायात और संचार क्षण भर में ठप्प हो जाय। कहीं इसको खोदने से ताँबा, मिलता है, तो कहीं सोना और हीरे भी मिलते हैं। यह धरती क्या नहीं देती ?

झूमरी तिलैया को भी इस धरती ने एक विशिष्ट वरदान दिया है। यहां आस-पास के क्षेत्र में 'अभ्रक' नाम का एक मूल्यवान खनिज पदार्थ उपलब्ध होता है। इस खनिज पदार्थ ने लाखों मनुष्यों को आजीविका दी है और साधारण व्यक्ति भी इस 'अभ्रक के व्यापार से करोड़पति बन गये हैं। ऐसी जगह है झूमरी तिलैया।

यहां एक बहुत सुन्दर दिगंबर जैन मंदिर है। दि० जैनों के करीब १०० घर हैं। बहुत अच्छी जगह है।

गुणावा

ता० ११-३-५७ :

कहते हैं कि भगवान महावीर के प्रधान शिष्य और प्रथम गणधर गौतमस्वामी का निर्वाण इसी स्थान पर हुआ था। जहां जैन धर्म के २४ वें तीर्थङ्कर और इस युग के महान अहिंसोपदेष्टा भगवान महावीर का निर्वाण हुआ, वह स्थान, पावापुरी, माना जाता है। लेकिन इतिहास वेताओं की मान्यता है कि पावापुरी (पपापुरी) यह नहीं किंतु गोरखपुर जिले में विद्यमान है। यहां से १२ मील दूर है। गौतम स्वामी को भगवान महावीर ने अंतिम दिन अपने से दूर भेज दिया था। इस दृष्टि से यह एक ऐतिहासिक स्थान है। यहां महावीर प्रभु भी ठहरा करते थे।

पावापुरी

ता० १२-३-५७ :

यहाँ आते ही सारी स्मृतियाँ भगवान महावीर के जीवन पर चली आती हैं। यह वही स्थान है जहाँ कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा के दिन भगवान महावीर निर्वाण पद को प्राप्त हुए थे। जहाँ भगवान निर्वाण प्राप्त हुए थे वहाँ एक भव्य मन्दिर बना हुआ है। चारों ओर कमल पुष्प तालाब और बीच में स्वच्छ स्फटिक की तरह चमकता हुआ संगमरमर का मन्दिर।

यहाँ श्वेताम्बर और दिगम्बर समाज की ओर से अलग अलग मन्दिर तथा यात्रियों के लिए ठहरने का अलग अलग सुन्दर धर्मशाला का प्रबंध है।

इसके अलावा यहाँ एक नई चीज का निर्माण हुआ है। श्वेताम्बर-मूर्तिपूजक समाज के प्रभाव शाली आचार्य श्री रामचन्द्र सूरि की प्रेरणा से जहाँ भगवान का समवसरण हुआ था वहाँ आरस पत्थर का ५४ फीट ऊंचा एक समवसरण बनाया गया है। अशोक वृक्ष के नीचे भगवान की मूर्ति है और शिखर से भी देखिए ऊपर से मूर्ति दिखाई देती है। यद्यपि हम मूर्तिपूजा को महत्त्व नहीं देते गुण-पूजा और भाव-पूजा का ही विशिष्ट महत्त्व है पर स्थापत्य-कला की दृष्टि से यह सुन्दर कृति है।

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा दीपावली के दिन यहाँ पर जैन समाज के हजारों व्यक्ति तीर्थ यात्रा के निमित्त से आते हैं और भगवान महावीर को अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित करते हैं। वह दृश्य देखने लायक होता है।

जिस युग में चारों ओर हिंसा का कलुषित वातावरण छाया हुआ था, और जब मानव का हृदय दया, प्रेम, करुणा और सत्य से विचलित हो रहा था, तब भगवान महावीर ने राज-पाट, घर-द्वार, सब कुछ छोड़कर जन-कल्याण के लिए तथा सत्य और अहिंसा का प्रचार करने के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया था। उसी तरह आज भी सारा संसार हिंसा के दावानल में झुलसता जा रहा है। इसलिए हम सब लोगों का, जो महावीर के अनुयाई हैं, यह परम कर्त्तव्य है कि उनके उपदेशों को जन जन तक पहुँचाने के लिए अपना जीवन लगादें।

राजगृह

ता० १५–३–५७ :

जैन-शास्त्रों में स्थान स्थान पर राजगृह का उल्लेख मिलता है। भगवान महावीर के युग मे राजगृह प्रमुख धर्म केन्द्र था और यहा वे बार बार आया करते थे। राजगृह के परित पाच ऊंची ऊची पहाड़िया हैं। इन पहाड़ियों पर जाने के लिए रास्ता भी बना हुआ है। ऊपर श्वेताम्बरों और दिगम्बरों के मंदिर हैं। इन मंदिरों की परिक्रमा करना प्रत्येक जैन तीर्थ-यात्री के लिए आवश्यक माना जाता है, इसलिए जो यात्री पैदल ऊपर तक नहीं जा सकते, वे डोली में बैठकर ऊपर जाते हैं। पाचवें व चौथे पहाड़ के नीचे सुवर्ण मन्दिर है। और उसी के आगे एक मणि मन्दिर भी है, जिसे शालिभद्र का कूआ भी कहा जाता है।

राजा बिंबिसार को बंदी बनाकर जिस बंदीगृह में रखा गया था, वह भी यहा पर ही है। उस युग के अनेक खंडहर अवशेषों के रूप में अब भी इतिहास के स्मृतिचिन्ह बनकर खड़े हैं। जिनको देखने से हमें इस बात का भान होता है कि हमारा अतीत कितना गौरव पूर्ण था।

राजगृह न केवल भगवान महावीर की साधना का मुख्य केन्द्र था बल्कि महात्मा बुद्ध ने भी इसी स्थान को यथावत अपनी ज्ञान-आराधना का केन्द्र बनाया था। गृद्धकूट आज भी उस युग की कथाएं अपने में समेट कर खड़ा है, जहां महात्मा बुद्ध ने आत्म-चिंतन और जीवन-शोधन के क्षण व्यतीत किये थे। इसीलिए यह स्थान अन्तर्राष्ट्रीय तीर्थ बन गया है। जापान बर्मा आदि देशों ने अपने बौद्ध-विहार यहां स्थापित किये हैं। सीलोन थाईलैंड तिब्बत चीन आदि विभिन्न देशों के यात्री बराबर यहां आते रहते हैं। सरकार ने भी उनके ठहरने का अच्छा प्रबंध किया है।

यहां श्वेताम्बर एवं दिगम्बर समाज की बड़ी बड़ी धर्मशालाएँ हैं। यहां प्रतिवर्ष हजारों यात्री आते हैं और इन ऐतिहासिक स्थानों की परिक्रमा करते हैं।

राजगृह न केवल जैनों और बौद्धों का तीर्थस्थान है बल्कि यहां वैष्णव-समाज का और मुस्लिम समाज का भी उतना ही बोल बाला है। इस प्रकार राजगृह एक समन्वय भूमि है। जहां जैन बौद्ध, हिन्दु, मुस्लिम सभी का संगम होता है और सब एक दूसरे के प्रति आदर तथा प्रेम रखते हुए अपने अपने मार्ग पर दृढ़ता पूर्वक चलते हैं।

राजगृह की प्रसिद्धि का एक कारण और भी है। यहां गन्धक-जल के कई प्रपात हैं। गरम और शीतल जल के ये प्रपात स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभप्रद माने जाते हैं, इसलिए प्रतिवर्ष हजारों व्यक्ति यहां आते हैं और इन प्रपातों में अवगाहन करके स्वास्थ्यलाभ करते हैं।

नालंदा

ता २ –१–१७१

राजगृह से ८ मील चलकर हम नालंदा आये। नालंदा प्राचीन बौद्ध युग में एक अद्भुत विश्वविद्यालय था। प्रमुख रूप से बौद्ध-भिक्षुओं के विद्याध्ययन का यह केन्द्र था। यह विश्व-विद्यालय

पूर्णत विकसित एक लघु नगर ही था। आज भी उसके अवशेषों को देखने से सहज यह प्रतीत होता है कि उस युग में भी इस देश ने शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति कर ली थी। शिष्यो और गुरुओं के निवास-स्थान भी बहुत अच्छे ढग के बने हुए हैं।

संस्कृति, कला, स्थापत्य, आदि सब क्षेत्रों में भारत बहुत प्राचीन काल से आगे बढ़ा हुआ है। इस बात के प्रमाण स्वरूप नालदा जैसे विश्वविद्यालयों के अवशेष है। इसी तरह हड़प्पा की खुदाई के बाद भी बहुत से ऐतिहासिक तथ्य सामने आये हैं। अजन्ता, एलिफेंटा, एलोरा आदि गुफाए भी भारतीय कला का सच्चा प्रतिनिधित्व करती हैं।

बिहार सरकार ने 'नव-नालदा-विहार' की यहा पर स्थापना की है। यह एक ऐसा विद्यापीठ है, जहा अतर्राष्ट्रीय स्तर पर बौद्ध-दर्शन के अध्ययन अभ्यापन की व्यवस्था है। चीन, जापान बर्मा, सीलोन, श्याम आदि विभिन्न देशों के बौद्ध भिक्षु यहा अध्ययन करते हैं।

हम जिस दिन पहुँचे उस दिन एक प्रतियोगिता का आयोजन था। प्रतियोगिता का विषय था—"बौद्ध धर्म और सस्कृति से आज के युग की समस्याएँ हल हो सकती है।" इस प्रतियोगिता में विभिन्न विश्व विद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया। इसमें हम भी शामिल हुए।

दानापुर (पटना)

ता० १–४–५७ :

बिहार शरीफ और बख्त्यार पुर होते हुए हम बिहार की राजधानी पटना में २६-३-५७ को पहुँचे तब से बाकीपुर, मीठापुर

आदि मुहल्लों में होते हुए आज दानापुर आये हैं। पटना बिहार की राजधानी है। पाटलिपुत्र के नाम से यह अति प्राचीन काल में विशिष्ट महत्त्व का नगर था। सम्राट् अशोक ने यहाँ से ही बौद्ध धर्म के प्रचार का बिगुल बजाया था और करुणा प्रेम एवं भ्रातृभाव का संदेश फैलाया था। जैन कथा-साहित्य में सेठ सुदर्शन की कथा बहुत प्रचलित है। जिन्होंने ब्रह्मचर्य की इतनी उत्कृष्ट साधना की थी कि उसके प्रभाव से शूली की सजा भी फूलों के सिंहासन के रूप में परिवर्तित हो गई। ये सुदर्शन यहाँ पर ही हुए। उनका यहाँ एक मन्दिर भी है। और भी कई दृष्टियों से पाटलिपुत्र का ऐतिहासिक महत्त्व है।

इस युग में भी पटना एक सुन्दर नगर है और आजादी के संग्राम में पटना एक प्रमुख केन्द्र रहा है। डा० राजेन्द्र बाबू जैसे आजादी-संग्राम के सेनानियों का पटना गढ़ था और सदाकत आश्रम जैसे स्थान आजादी के आन्दोलनों का चक्रव्यूह रचने के लिए प्रसिद्ध थे।

पटना में खादी ग्रामोद्योग-भवन भी अपने अप्रतिम आकर्षण से विभूषित है। इसी तरह सर्वोदय आंदोलन का भी पटना प्रमुख केन्द्र है। श्री जयप्रकाशनारायण जैसे सर्वोदयी नेता पटना में ही रहते हैं। शिक्षा साहित्य संस्कृति राजनीति आदि सभी दृष्टियों से पटना का अपना खास महत्त्व है।

आज दानापुर में बिहार प्रांत के वर्तमान राज्यपाल श्री आर० आर० दिवाकर भेंट करने के लिये आए। बातचीत के दौरान में हमने जैन-इतिहास जैनधर्म और जैन संस्कृति के संबंध में विस्तार से चर्चा की। हमने दिवाकरजी से कहा कि 'आज यद्यपि भारत में

जैन अनुयाइयों की सख्या अल्प है, पर भारतीय सस्कृति, कला, और दर्शन के विकास में जैन विद्वानों तथा विचारकों का अभूतपूर्व योगदान रहा है।" ' इस पर राज्यपाल महोदय ने अपनी स्वीकृति तथा सहमति जताते हुए कहा कि "वास्तव में भ० महावीर ने अहिंसा का जो विचार विश्लेषण किया वह अपने आप में अद्वितीय स्थान रखता है। सरकार ने भी इस ओर अब धीरे धीरे ध्यान देना प्रारम्भ किया है। वैशाली का पुनर्विकास एव वहा प्राकृत जैन विद्यापीठ की स्थापना करके सरकार ने इस ओर कदम उठाया है।" राज्यपाल महोदय ने अपनी चर्चा के बीच कहा कि "आप जब पटना तक आगये हैं तो अब आपको वैशाली भी पधारना ही चाहिये। वहा जो काम हो रहा है, उसे आप देखें और आगे उस काम को किस ओर मोड़ना चाहिये यह भी सुझाए।" श्री दिवाकर जी के तथा वैशाली संघ के अत्यन्त आग्रह के कारण हमने पटना से वैशाली की ओर जाने का निर्णय किया।

सोनपुर

ता० ८–४–५७ :

आज हम सोनपुर पहुँचे। सोनपुर गङ्गा के उत्तरीय तट पर है। गङ्गा भारत की प्रसिद्धतम नदियों में से एक है। इस नदी को हिंदू धर्म में बहुत महत्त्व दिया गया है और इस नदी के किनारे बड़े बड़े मुनियों ने तपस्या की है। एक कवि ने लिखा है—

"गङ्गा जिसकी लहरों में, हुँकार जमाना भरता है।
लाखों से मानव खुश जिसके, रौद्र रूप से डरता है॥
गङ्गा जिसने मोह लिया है, भारत का सारा जीवन।
बुला चुकी जो अपने तट पर, अहिन्दी लोगों को अनगिन

जिसके उद्गम से लेकर के मिलने तक की सागर में।
परिव्याप्त है सरस कहानी पूरे धरती अम्बर में॥
जिसने छूकर हरिद्वार का फिर यू० पी० सरसब्ज किया।
और इलाहाबाद पहुँच कर यमुना को निज प्यार दिया॥
नगर कानपुर की प्यासा को गंगा ने आधार दिया।
तो काशी में तीर्थ रूप हो सब धर्मों को प्यार दिया॥
उत्तर औ दक्षिण बिहार को दो भागों में बाँट दिया।
पटना से भागलपुर होकर भार स्वयं का बाँट लिया॥
गुजरी फिर बंगाल भूमि से त्यागी का पथ अपनाया।
इतने समर्पों से बढ़कर नाम हिन्दमहासागर पाया॥

इस प्रकार की पुण्य-सलिला गंगा के उत्तरीय तट पार करके हम एशिया के प्रसिद्ध सोनपुर नगर में पहुँचे। सोनपुर की प्रसिद्धि का कारण कार्तिक में लगने वाला बसन्त मेला है इस मेले से प्रभावित होकर ही किसी यात्री कवि ने लिखा होगा—

रेल्वे प्लेटफार्म है जिसका भारत में लम्बा सबसे।
और एशिया भर का गुरुतर लगता है मेला कबसे॥
ऊँट बैल भेड़े भी आतीं, गाय भैंस घोड़े हाथी।
सब कुछ मिलता इस मेले में मिल जाता खोया साथी॥
पूर्व एशिया में न कहीं पर, इतना पशुओं का व्यापार।
मानव लाखों जुटते इसमें होजाती है भीड़ अपार॥

हमें सोनपुर से अब सीधे वैशाली के मार्ग पर ही आगे बढ़ना है। यहाँ से वैशाली केवल ५४ मील है।

वैशाली

ता० १२–४–५७ :

हम दानापुर से जिस लक्ष्य को लेकर चले थे वह आज पूरा हुआ और हम अपनी मंजिल पर कल पहुँच गए। आज महावीर जयन्ती का आयोजन हुआ। स्वयं राज्यपाल महोदय श्री आर आर दिवाकर भी इस समारोह में उपस्थित हुए एवं हमारा स्वागत किया।

यह जैन मन्दिर है। मन्दिर के पास के तालाब में मछली पकड़ने का सरकार की ओर से ठेका दिया जाता था। हमने इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करने की बात यहा के जिलाधीश के सामने उठाई कि जिस नगरी से अहिंसा का महान मत्र निकलना चाहिये, वहा निरीह मछलियों की हिंसा कैसी ? सरकार ने इस बात को स्वीकार करके ठेका प्रणाली को बन्द किया।

वैशाली के इतिहास और उसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए मैंने एक निबन्ध आज यहां तैयार किया।

रात्रि को करीब दो लाख जनता महावीर के जन्म जयन्ति मनाने इकट्ठी हुई। उनके सम्मुख वैशाली के इतिहास और उसके महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा—

वैशाली और भगवान महावीर

सर्व नगर शिरोमणी वैशाली। जहां से कि अहिंसा परमोधर्म का सूत्र प्राप्त हुआ। इसी पवित्र नगरी ने भगवान महावीर "वर्धमान" की जन्म भूमि होने का विशेष गौरव प्राप्त किया है।

वैशाली के इतिहास में बड़े बड़े परिवर्तन हुए हैं। इस नगरी ने बड़ी राजनीतिक उथल पुथल देखी। यह वही नगरी है जहां वाल्मिकी रामायण में वर्णित है—"जब राम लक्ष्मण और विश्वामित्र ने यहां पदार्पण किया था तब यहां के राजा सुमति ने विशेष स्वागत किया था"। इस नगरी के पश्चिमी तट पर "गण्डक" नामक नदी बहती है। वैशाली को 'राजानगर' कहते थे।

बुद्ध विष्णु पुराण में विदेह देश की सीमा बताते हुए लिखा है कि—विदेह के पूर्व में कौशिकी (आधुनिक कोसी) पश्चिम में गण्डकी दक्षिण में गंगा और उत्तर में हिमालय है। पूर्व से पश्चिम की ओर २४ योजन लगभग १८० मील। उत्तर में १६ योजन लगभग १२५ मील है।

भगवान महावीर एवं बुद्ध के समय में विदेह की राजधानी वैशाली ही थी। भगवान महावीर के कुल चातुर्मासों में से १६ चातुर्मास विदेह में हुए थे। वाणिज्य ग्राम और वैशाली में १२, मैथिला में ६ और १ अस्थिगांव में।

पुराणों में वैशाली :

पुराणों में इसके विशाल विशाला तथा वैशाली ये तीन नाम दिये गये हैं। पाटलीपुत्र से भी यह बहुत प्राचीन है। वाल्मिकी रामायण में विशाला के नाम से इसका और इसके संस्थापक तथा उसके वंशजों का वर्णन मिलता है। भगवान रामचन्द्र के समय से लगभग ८१ पीढ़ी पूर्व विशाला नगरी का निर्माण हो चुका था। यह भागवत्पुराण एवं वाल्मिकी रामायण से साबित है। पाटलीपुत्र का निर्माण अजात शत्रु के समय में हुआ।

वैशाली की चर्चा वाल्मिकी रामायण आदि काण्ड के ४५ वें ४६ वें तथा ४७ वें सर्गों में की गई है। पेंतालीसवें सर्ग में यह कहा गया है कि इस स्थान पर देवों और दानवों ने समुद्र मन्थन की मन्त्रणा की थी। ४६ वें सर्ग में "रानादिति" की उस तपस्या का वर्णन है जो उसने इन्द्रों को मारने वाले पुत्र की उत्पत्ति के लिये की थी। उसी सर्ग के अन्त में तथा ४७ वें सर्ग के आरम्भ में इन्द्र के प्रयत्न से "राजा दिति" की तपस्या का विफल होना वर्णन है। इसके पश्चात् ४७ वें सर्ग के अन्त में वैशाली नगरी के निर्माण का इतिहास दिया गया है।

इस प्रकार केवल चार पुराणों में वैशाली की चर्चा पाई जाती है। वे ये हैं (१) वाराह पुराण (२) नारदीय पुराण (३) मार्कण्डेय पुराण और (४) श्री मद्भागवत। वाराह पुराण के सातवें अध्याय में विशाल राजा का (द्वारा) गया में पिंडदान करने से उनके पित्तरों की मुक्ति कही गई है। उसी पुराण के ४८ वें अध्याय में भी एक विशाल राजा का उल्लेख है। पर वे काशी नरेश थे वैशाली नरेश नहीं।

नारदीय पुराण के उत्तर काण्ड के ४४ वें अध्याय में भी विशाला नरेश विशाल की चर्चा की गई है और यह कहा गया है कि वे त्रेतायुग में थे। पुत्र हीन होने से पुत्र प्राप्ति के लिए उन्होंने पुरोहितों की राय से गया में पिंडदान किया। और अपने पिता, पितामह तथा प्रपितामह का नरक से उद्धार कराया, किन्तु वहां विशाल के पिता का नाम "सत" बतलाया है। संभव है इसका दूसरा नाम "सित' रहा है।

वैशाली की व्यवस्था प्रणाली :

ब्राह्मण युग में मैथीला और वैशाली दोनों राजतन्त्र थे। लिच्छवी

राज्य में ७७०७ पुरुष थे। वे "राजन्य" कहलाते थे। वैशाली गणतंत्र की स्थापना श्रीमद् भागवत के उल्लेखानुसार 'राम और महाभारत' युद्ध के बीच हुई। वैशाली में बहुत से छोटे बड़े न्यायालय थे। विभिन्न प्रकार के राजपुरुष इनके सभापति होते थे। उस समय के न्याय प्रणाली की विशेषता यह थी कि अभियुक्त (अपराधी) को तभी दंड मिलता था, जब कि वह क्रमशः सात न्यायालयों (समितियों) द्वारा एक स्वर से अपराधी घोषित कर दिया जाता। इनमें से किसी एक के द्वारा वह (अपराधी) मुक्त भी कर दिया जा सकता था। इस प्रकार मानव स्वतंत्रता की रक्षा की जाती थी। जिसकी उपमा सम्भवतः विश्व के इतिहास में नहीं है।

लिच्छवि-गणराज्य का एक बड़ा बल था। वज्जि संघ के अन्य सदस्यों से संयुक्त रहना। जैसा कि भीष्म ने कहा था गणों को यदि जीवित रहना है तो उन्हें सदा संघ प्रणाली का अवलम्बन करना चाहिये। कौटिल्य ने भी इसी प्रकार अर्थशास्त्र में भी उल्लेख किया है।

गणतंत्र राज्य में एक कौंसिल थी। उसमें नव मल्ल और नव लिच्छवि के सदस्य थे।। गणतंत्र करीब आठ सौ वर्ष चला।

वैशाली में लिच्छवियों के ७७०७ कुटुम्ब थे। हरेक कुटुम्ब का प्रमुख व्यक्ति गण सभा का सभासद होता था और वह गण राजा कहलाता था। लेकिन गण सभा की एक कार्य कारिणी सभा होती थी। जिसे अष्टकुलक कहते थे। आठ प्रमुख गण राजा इसके सदस्य थे। और प्रायः गण सभा इनका चुनाव किया करती थी। अष्ट कुलक में से प्रत्येक का अलग अलग रंग निश्चित था। विशेष उत्सवों और अवसरों पर हर एक अष्ट कुलक अपने अपने निश्चित रंग के वस्त्रा भूषण धारण करके उसी रंग के घोड़े पर सवार होकर आते थे।

जब गण सभा की बैठक होती थी, तो उसे गण संनिपात कहा जाता था और उस बैठक के स्थान और सभा भवन का नाम "सस्थागार" कहा जाता था। उस "सस्थागार" के निकट ही एक "पुष्करिणी" थी। जो कि आज घोमपोखर (तालाब) के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें केवल गण राजन ही स्नान करने के अधिकारी थे। जब नये गण राजन का अभिषेक होता, तब वह बड़े समारोह के साथ इस पुष्करिणी में स्नान करता था।

(१) वैशाली के सन्निकट एक कुडग्राम था। उस कुडग्राम में दो बस्तियां थी, एक क्षत्रिकुडग्राम, दूसरी ब्राह्मण कुडग्राम। एक में क्षत्रियों की वस्ती अधिक थी। दूसरे में ब्राह्मणों की। इनमें दोनों क्रमश एक दूसरे के पूर्व पश्चिम में थे। दोनों पास पास थे। दोनों बस्तियों के बीच एक बगीचा था। जो 'बहुशाल" चैत्य के नाम से विख्यात था। दोनों नगर के दो दो खण्ड थे। ब्राह्मण कुडपुर का दक्षिणी भाग ब्रह्मपुरी कहलाता था। क्यों कि यहां ब्राह्मणों का ही निवास था। दक्षिण ब्राह्मण कुडपुर के नायक ऋषभ-दत्त नाम के ब्राह्मण थे। जिनकी स्त्री का नाम देवानन्दा था। दोनों पार्श्वनाथ के द्वारा जैन धर्म को मानने वाले गृहस्थ थे। क्षत्रिय कुंड के नायक का नाम सिद्धार्थ था। इसके दो भाग थे। इसमें करीब ५०० घर "ज्ञाति" क्षत्रिय थे। तथा राजा की उपाधि से मंडित थे। वैशाली के तत्कालीन राजा का नाम चेटक था। जिनकी पुत्री त्रिशला का विवाह सिद्धार्थ राजा से हुआ था।

(२) कुमारग्राम, प्राकृत भाषानुसार "कम्मार" कर्मकार का अपभ्रंश है। अर्थात् कर्म का अर्थ है, मजदूरों का गाव, अर्थात् लुहारों का गाव। यह गांव क्षत्रिय कुडग्राम के पास ही था। महावीर स्वामी प्रव्रज्या लेकर पहली रात यहीं ठहरे थे।

(३) कोल्लाग संनिवेश:—यह ग्राम क्षत्रिय कुण्डग्राम के नजदीक ही था। कुमार ग्राम से विहार कर भगवान महावीर यहाँ से पधारे थे और यहीं पारणा किया था। उपासकदशा के प्रथम अध्ययन में इस स्थान की स्थिति का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। यह नगर वाणिज्यग्राम के तथा उस बगीचे के बीच में पड़ता था।

(४) वाणीय ग्राम। यह जैन सूत्र का "वाणिज्यग्राम" बनियों का ग्राम है। गण्डकी नदी के दाहिने किनारे पर यह बड़ी भारी व्यापारी मंडी थी। यहाँ बड़े बड़े धनाढ्य महाजनों की बस्तियां थी। यहाँ के एक करोड़पति का नाम आनन्द गृहपति था। जो महावीर स्वामी का भक्त था।

बौद्ध ग्रंथों के विशेषतः दीघनिकाय अनुशीलन से पता चलता है कि बुद्ध के समय में यह नगरी बड़ी समृद्धिशाली थी। उसमें ७७७७ महल थे। वहाँ एक वेणुग्राम था। वहाँ बुद्ध ने वर्षों तक निवास किया।

जैन ग्रंथ की कल्पसूत्र में भगवान महावीर को विदेहे, विदेह दत्ते, विदेहजच्चे विदेहसुमाला अर्थात् विदेह विदेह दत्ता विदेह जात्य। विदेहसुकुमार लिखा है। वे वैशालीक भी थे। उपासी भी इसी ग्राम के रहने वाले थे। जिन्होंने २०० राजकुमारों के साथ दीक्षा ली थी।

भगवान महावीर ने प्रथम पारणा कोल्लाग सन्निवेश, में किया। जैन सूत्रों के विधान से ये दो ग्राम होते हैं। एक कोल्लाग सन्निवेश वाणिज्य ग्राम के पास दूसरा राजगृही के पास। एक दिन में चालीस मील जाना कठिन है क्यों कि राजगृही नामक स्थान यहाँ से ४ मील पड़ता है। अतः यही कोल्लाग सन्निवेश है।

भगवान महावीर ने प्रथम चातुर्मास अस्थिक ग्राम में दूसरा राजगृही में किया। राजगृही जाते समय श्वेताम्बिका नगरी से होकर गये और तदूनन्तर गंगा को पार कर राजगृही में पहुँचे। बौद्ध ग्रन्थों से मालूम होता है कि श्वेताम्बिका श्रावस्ति से कपिल वस्तु की ओर जाते समय रास्ते मे पड़ती थी।

भगवान महावीर :

भगवान महावीर का निर्वाण "पावापुरी" मे माना जाता है। वह पावापुरी जो अभी मानी जाती है। उससे बिलकुल विपरीत बौद्ध ग्रन्थों के अनुशीलन मे मालूम पड़ता है कि यह जिला गोरख-पुर के पडरोना के पास पप-उर ही है। उस पावापुरी के अन्दर मल्ल गणतंत्र राज्य था। गणतंत्र की सीमा विदेह देश में मानी जाती है। राजगृही अग देश मे है। और वहा का राजा अजातशत्रु गणतन्त्र राज्यों से बिलकुल विरुद्ध था। सगीति परियासुत (दीघनीकाय का ३३ वा सुत) के अध्ययन से पता चलता है कि यह मल्ल नामक गणतन्त्र लोगों की राजधानी थी। जिसको नये सस्थागार (संथागार) में बुद्ध ने निवास किया था। यह भी पता चलता है कि बुद्ध के आने के पहले ही "निगट्ठ नात पुत्र" का निर्वाण हो चुका था। बौद्ध ग्रन्थों में महावीर "निगट्ठ नात पुत्र श्री के नाम से प्रसिद्ध है। भ० महावीर का जन्म ई० स० ५९९ वर्ष पूर्व हुआ था। निर्वाण ५२७ वर्ष पूर्व।

विदेह दत्ता महावीर की माता का नाम था। आचारग सूत्र मे इस प्रकार लिखा है "समणस्सण भगवओ महावीरस्स, अम्मा वासिट्ठस्स गुत्तातिसेण तिन्नि नाम तजह। तिशला इवा, विदेह दिन्नाषा, पियकारिणी इवा। यह नाम उनकी माता को इसलिए मिला था कि उनकी माता त्रिशला विदेह देश की नगरी वैशाली के

गण सत्तात्मक राजा चेटक की पुत्री थी। यह प्रान्त विदेह नाम से प्रसिद्ध था। इसी कारण माता त्रिशला को विदेह दत्ता कहा गया है।

निरयावलियाओं के अनुसार राजा चेटक वैशाली का अधिपति था और उसे परामर्श देने के लिए नौ मल्लि और नौ लिच्छवि गण राजा रहा करते थे। मल्ल जाति काशी में रहती थी और लिच्छवी कोशल में। इन दोनों जातियों का सम्मिलित गणतंत्र राज्य था। जिसकी राजधानी वैशाली और गणपति का अध्यक्ष चेटक था। वैशाली नगरी में हैहय वंश में राजा चेटक का जन्म हुआ था। इस राजा की भिन्न भिन्न रानियों से ७ पुत्रियां थी। (१) प्रभावती (२) पद्मावती (३) मृगावती (४) शिवा (५) ज्येष्ठा (६) सुज्येष्ठा (७) और चेलना। प्रभावती वीतिभय के उदयन से पद्मावती चंपा के दधिवाहन से मृगावती कौशाम्बि के शतानिक से शिवा उज्जयनी के प्रद्योत से और ज्येष्ठा कुण्डग्राम के वर्धमान के बड़े भाई नन्दिवर्धन से सुज्येष्ठा और चेलना उस समय कुमारी ही थी।

अहिंसा के अवतार सत्य के पुजारी शान्ति के अग्रदूत भगवान महावीर का जन्म चैत सुदी १३ के दिन मध्यरात्री के पश्चात हुआ था।

अर्वाचीन वैशाली :

वैशाली बहुत ही प्रतिष्ठा प्राप्त स्थान है। यह तो निर्विवाद वस्तु है। जैन धर्म की अपेक्षा बौद्धों ने इस नगरी को बहुत महत्व दिया है। अभी भी बौद्ध राष्ट्रों में अनेक स्थानों में वैशाली नाम के नगर इसकी स्मृति के रूप में बसाये हैं। विदेशों से प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में बौद्ध भिक्षु एवं गृहस्थ वैशाली की यात्रा को आते हैं और यहां की धूल पवित्र मानकर अपने सिर एवं शरीर पर लगाते हैं। पूछने पर वे कहते हैं कि यह धूल तथागत के चरणों से पवित्र बनी हुई है। वर्तमान समय में वैशाली कोटे से

ग्राम के रूप में है। पटना से उत्तर की ओर २३ मील आगे बढ़ने पर यह ग्राम आता है। अभी भी यहा महाराजा चेचट का अजय दुर्ग भग्नावशेष के रूप में अतीत की वीर गाथाएं और पवित्रता का नाद गूंज रहा है। इस दुर्ग में से सरकार द्वारा खुदाई करने पर कुछ महत्वपूर्ण वस्तुएं निकली हैं जिनको सुरक्षित म्युजियम बना कर रखी गई।

इस दुर्ग से पश्चिम की ओर निकटतम एक तालाब है, जिसमें लिच्छवी गणतन्त्र के निर्वाचित अधिनायकों को ही स्नान करने का अधिकार था। इसका अभी नाम बोमपोखर है।

वैशाली से पूर्व में आधा मील आगे बढने पर एक हाई स्कूल आता है जिसका नाम तीर्थङ्कर भगवान महावीर हाई स्कूल है। यह हाई स्कूल स्थानीय व्यक्तियों द्वारा ही सचालित है। और वैशाली के अन्दर एक जनता द्वारा वैशाली सघ स्थापित किया हुआ है। जो कि इस ग्राम के विकास के लिए प्रति पल प्रयत्नशील रहता है।

भगवान महावीर का जन्म स्थान :

हाई स्कूल के उत्तर में २ मील की दूरी पर एक] वासु कुण्ड नामक ग्राम है। यह वही ग्राम है जो कि क्षत्रिय कुण्ड ग्राम के नाम से प्रसिद्ध था। यहा पर भ० म० के कुछ वशज लोग रहते हैं। उनके पास वंश परम्परा से कुछ एकड़ जमीन थी। जिसका कि वे सरकार को भूमिकर तो देते थे, किन्तु उस पर खेती नहीं करते थे। सरकारी कर्मचारियों द्वारा इसका कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि यह वह स्थान है जहा महावीर का जन्म हुआ। परन्तु उन्हें यह मालूम नहीं था कि महावीर कौन है? क्योंकि महावीर हनुमानजी को भी कहते हैं।

सरकार के इतिहास विभाग ने इतिहास एवं कल्पसूत्र आदि ग्रन्थों का अवलोकन किया। और निश्चय किया कि यहा सिद्धार्थ पुत्र महावीर का जन्म हुआ है। यह शुभ समाचार विस्तार पूर्वक भग-

वान महावीर के वंशजों को मालूम हुआ तो बहुत ही उत्साह से यह जमीन बिहार सरकार को इसके विकास के लिए दे दी। करीब चार वर्ष पूर्व इसी स्थान पर भारत गणतन्त्र के राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के कर कमलों द्वारा एक शिलालेख का शिलान्यास किया गया है। जिसके एक तरफ हिन्दी में भ० म० के जन्म का वर्णन है और दूसरी तरफ प्राकृत भाषा में।

सरकार द्वारा जयन्ती समारोह :

वैशाली में करीब १५ वर्ष से प्रत्येक चैत्र सुदी १३ के दिन भ० महावीर का जन्म बिहार सरकार की तरफ से मनाया जाता है। इस प्रसंग पर करीब डेढ़ से २ लाख आदमी बहुत ही उत्साह पूर्वक उपस्थित होते हैं। और भ० म० के प्रति अनन्य श्रद्धा व्यक्त करते हैं। मुझको भी दिनांक १९४-५० ई० को बिहार सरकार के गवर्नर श्री आर आर० दिवाकर एवं वैशाली संघ के अति आग्रह से इस जयन्ती समारोह में सम्मिलित होने का एवं जनता को भ० म० का सन्देश सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

जैन प्राकृत इन्स्टिट्यूट :

भारत में मुख्यरूप तीन संस्कृतियों का संगम स्थान है। जैन, बौद्ध एवं वैदिक संस्कृति। भारत सरकार तीनों संस्कृतियों को जीवित रखने के लिए तीन इन्स्टिट्यूट चला रही है। बौद्ध संस्कृति के लिए नालन्दा वैदिक संस्कृति के लिए मिथिला (दरभंगा) एवं जैन संस्कृति के लिए वैशाली जैन प्राकृत इन्स्टिट्यूट मुजफ्फर में चला रही है। इसके प्रति वर्ष हजारों का व्यय सरकार करती है। इस इन्स्टिट्यूट के लिए निजि भवन बनाने का वैशाली संघ का निर्णय करने पर वासुकुण्ड ग्राम की जनता ने १३ बीघा जमीन सरकार को भेंट की है। जिस पर कि हमारे राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू ने करीब चार वर्ष पूर्व शिलान्यास किया है। और साहु शान्तिप्रसाद जैन तथा

अन्य सद् गृहस्थ यहा अतिथि गृह, उपासना गृह आदि की योजना० बना रहे हैं।

इस प्रकार वैशाली जैनियों के लिए सभी तीर्थ स्थानों की अपेक्षा बहुत ही महत्त्व रखती है। अत समस्त जैनों से अनुरोध है कि वे अपनी कोन्फरेन्सों के मास्यक्षायक समन दूर कर इस पवित्र भूमि के विकास के लिए जल्दी से जल्दी प्रयत्न शील बनें। अन्यथा बौद्ध धर्मावलम्बी इस पवित्र भूमि को अपने हस्तगत कर लेंगे। इसमें कोई शंका नहीं है क्योंकि वे हजारों की सख्या में विदेश से आते हैं। और कुछ न कुछ निर्माण कार्य करके जाते हैं। किन्तु जैन अभी तक इस तरफ जागृत नहीं हुए हैं। अत इस ओर अपना ध्यान आकृष्ट करें। ऐसी आशा है।

वासुकुंड

ता० १४-४-५७ :

सरकार ने खोज करके यह निर्णय किया है कि अहिंसा के महान उपदेष्टा भगवान महावीर का जन्म-स्थान यहा पर ही है। यह जगह वैशाली से २ मील दूर है। महावीर जन्म दिन के अवसर पर यहा की साधारण जनता भी यहा पर दीपक जलाती है और लड्डू चढ़ाती है। यहां पर ही प्राकृत विद्यापीठ का शिलान्यास किया गया है और राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के हाथ से शिलालेख की स्थापना की गई है। यहाँ पर, मीनापुर मे और वैशाली में आमतौर से लोग निरमिष भोजी हैं, यह भी महावीर प्रभु की परम्परा का प्रमाण है। यद्यपि अभी तक तो जैन लोग महावीर का जन्म स्थान एक दूसरी ही जगह मानते आये हैं, पर ऐतिहासिक प्रमाणों से यहीं पर महावीर का जन्म स्थान सिद्ध होता है।

मुजफ्फरपुर

ता० २५–४–५७ :

यह शहर बिहार का एक प्रमुख नगर है। बिहार में खादी का जो काम चलता है, उसका प्रधान केन्द्र यहाँ पर ही है। सैंकड़ों कार्यकर्ता खादी के इस प्रधान कार्यालय में काम करते हैं और बिहार भर में विस्तृत लाखों रुपये के खादी कार्य का संयोजन करते हैं।

यहाँ पर ५ घर जैनों के हैं। बाकी गुजराती घर १६ और मारवाड़ियों के १० घर हैं। यहाँ पर ही अगला चातुर्मास किया जाय ऐसी आग्रह भरी प्रार्थना यहाँ के निवासियों की तरफ से आ रही है। हम ११-४-५७ को यहाँ आये तब से प्रतिदिन व्याख्यानों के कार्यक्रम रहते हैं और जनता अपार हर्ष तथा उत्साह के साथ भाग ले रही है। भले ही जैन श्रावकों के घर न हों पर लोगों में जो अनन्य श्रद्धा-भक्ति दीख पड़ती है, वह आश्चर्य पैदा करने वाली है।

ता० २६–४–५७ :

यहाँ की जनता के आग्रह को टालना कठिन था। इसलिए आखिर हमने यही निर्णय किया है कि इस वर्ष का चातुर्मास मुजफ्फरपुर में व्यतीत किया जाय। भक्त की भक्ति आखिर रंग लाती ही है। जो लोग जैन धर्मानुयायी भी नहीं हैं और जिनके साथ हमारा कोई पूर्व परिचय भी नहीं है उनकी इस प्रकार से अनिर्वचनीय भक्ति तथा श्रद्धा जब दृष्टिगोचर होती है, तब यह मानने के लिए हम बाध्य हो जाते हैं कि भक्त के सामने भगवान को भी झुकना पड़ता है।

जब हमने यह निर्णय किया कि अगला चातुर्मास यहां पर ही बितायेंगे तो सहज प्रश्न उपस्थित हुआ कि चातुर्मास के पहले के समय का कहां सदुपयोग किया जाय ? समस्या के साथ ही समाधान छिपा रहता है । नेपाल जाने का विचार तुरन्त सामने आया क्योंकि हजारी बाग की महारानी ललिता राज्य लक्ष्मी ने पहले ही नेपाल की विनति की थी,वे खुद नेपाल के राज्य कुमारी हैं । तथा मुजफ्फरपुर एक तरह से भारत नेपाल की सीमा के पास का ही शहर है । अत यह स्वाभाविक ही था कि नेपाल-यात्रा का कार्यक्रम बनाया जा सके । विचार विमर्श के बाद आखिर हमने यह निर्णय किया कि चातुर्मास के बीच का समय नेपाल यात्रा करके उपयोग में लाया जाय ।

रून्नि

ता० २८-४-५७ :

नेपाल की ओर हम बढे जा रहे हैं । उत्तर बिहार का यह प्रदेश भी अत्यंत सुहावना है । यहां के लोग अत्यत सरल और मेहनती होते हैं । आज हम अम्बर चरखा विद्यालय में ठहरे हैं । गाधीजी ने चरखे को अहिंसा का प्रतीक बनाया और चरखे के आधार पर सारे देश को सगठित करके आजादी हासिल की । उन्होंने विकेन्द्रित अर्थ व्यवस्था की मौलिक कल्पना उपस्थित की और कहा कि बडे बडे कारखानों मे मानवता शोषित है । इसलिए घर घर में उद्योगों की स्थापना होनी चाहिए और चरखा एक ऐसा ग्रामोद्योग है, जो गांव-गाव और घर घर में प्रवेश पा सकता है ।

पहले का चरखा बहुत अविकसित था । बुद्धिजीवि वर्ग के लोग 'बुढ़िया का चरखा' कहकर उसकी हसी उडाते थे । तब गांधीजी ने चरखे में सुधार करने की तरफ ध्यान दिया बांस चरखे से लेकर

किसान चक्र धरखाचक्र और सुदर्शन चक्र के रूप में उसके विविध रूप सुविकसित होते गए। गाँधीजी के निधन के बाद भी चरखे का कार्यक्रम उनके शिष्यों ने जीवित रखा और इसी के परिणाम स्वरूप अम्बर चरखे का आविष्कार हुआ।

अम्बर चरखा गरीबों के लिए प्राणप्रद सिद्ध हुआ। जो चरखा मिल के मुकाबले में किसी तरह टिक नहीं सकता था उसमें अम्बर चरखे ने नई क्रांति पैदा की और मिल के सामने भी खड़ा रह सके ऐसी एक चीज देश को मिलगई। हिन्दुस्तान में आज 'अम्बर चरखा' बहुत लोक प्रिय सिद्ध हो रहा है।

१ यहाँ पर इसी अम्बर चरखे का प्रशिक्षण दिया जाता है। आजकल करीब ९० स्त्रियाँ प्रशिक्षण ले रही हैं। ३ महीने में अम्बर चरखे की पूरी शिक्षा प्राप्त हो जाती है।

सीता मढी

ता० २६–४–५७ :

हम अकेले साधु अपनी मंजिल पाने के लिए बढे चले जा रहे हैं। रास्ते में कहीं सम्मान तो कहीं अपमान। ठीक भी है। आज साधु वेष के नाम पर जो दम चलता है,उसके कारण लोगों को साधुओं के प्रति कुछ नफरत पैदा हो तो आश्चर्य ही क्या है? कोई साधु भंग और गांजे का सफोचाव होता है तो कोई मूर्खों मरने के बजाय साधू वेश धारण किये हुए हैं। कोई लोगों को उनका भविष्य बता कर ठगता है तो कोई किसी दूसरी तरह से अपना स्वार्थ सीधा कर लेता है।

सीतामढ़ी, उत्तर बिहार का एक प्रमुख नगर है। यहा पर सरावगियों के ५ घर हैं। हमने व्याख्यानों का कार्यक्रम भी रखा और धर्म चर्चा भी खूब हुई। धर्म चर्चा में एक ऐसा रस है जो जीवन की शुष्कता को मिटा देता है और उसे मधुर सुखद बना देता है। लोग आते है तरह तरह के सवाल पूछते है शास्त्रों की बातें सामने आती है तर्क वितर्क होते हैं और इन सबके बाद एक सुखद समाधान मिलता है। धर्म चर्चा में भिन्न धर्मों, शास्त्रों, ग्रन्थों, परम्पराओं आदि का विश्लेषण होता है और इन सब में जो जीवन को समुन्नत बनाने का मार्ग मिलता है उसे स्वीकार करने की प्रेरणा होती है। इस दृष्टि से धर्म चर्चा का महत्व प्रवचन से कम नहीं। प्रवचन मे वक्ता किसी विशिष्ट समय का विश्लेषण करता है। पर धर्म चर्चा में प्रश्नकर्ताओं के साथ वक्ता का तादात्म्य सबंध जुड़ जाता है। हमारी यात्रा मे इस प्रकार धर्म चर्चा का अवसर खूब आता है।

सीतामढ़ी चम्पारण जिले का मुख्य शहर है। यह वही चम्पारण जिला है, जहा महात्मा गांधी ने ऐतिहासिक किसान सत्याग्रह किया था। किसानों पर होने वाले अन्याय के विरोध में जब गाधीजी ने आवाज उठाई तो सारे देश की नजरें चम्पारण की तरफ लग गई थी। सत्याग्रह के इतिहास में चम्पारण का एक तीर्थ स्थान की भाति महत्वपूर्ण स्थान है।

लोकहा

ता० २-५-५७ :

आज हम जिस गाव में ठहरे है, वहा हमने देखा कि छुआ-छूत का भूत अभी तक काफी मात्रा में विद्यमान है। यहा तक कि एक मुहल्ले के लोग दूसरे मुहल्ले में पानी भरने के लिए भी नहीं

जाते। इसी तरह एक जाति की कोई स्त्री यदि पानी भरती हो तो दूसरी जाति की स्त्री तब तक वहां नहीं आयगी जब तक वह स्त्री वहां से हट न जाय।

हिन्दुस्तान को इस स्पृश्या स्पृश्य के रोग ने बहुत नीचे गिराया है। मानव-मात्र की समानता के सिद्धान्त से दूर होकर ऊँच-नीच की भ्रांति पूर्ण मान्यताओं में यह देश फंसा इसीलिए इसे गुलाम होना पड़ा गरीबी के दल दल में फंसना पड़ा और दुनिया के पिछड़े हुए देशों में इसकी गिनती होने लगी।

इस देश में कोई भी चीज चरमोत्कर्ष अवस्था में पहुँच जाती है इसलिए आदर्श और व्यवहार में एक लम्बी खाई उत्पन्न हो जाती है। एक तरफ तो अद्वैतवाद का सिद्धान्त चलता है। जड़ चेतन सब में ईश्वर के होने का तत्त्व प्रतिपादित किया जाता है। दूसरी ओर मानव-मानव के बीच घृणा के बीज बोये जाते हैं। ऊँच नीच की संकुचित दीवारें खड़ी की जाती हैं। यह स्थिति कितनी भयावह दुखद और हास्यास्पद है। यह गांव नेपाल का है हमने नेपाल में "गौर" से प्रवेश किया। यह प्रदेश नेपाल की तराई प्रदेश कहा जाता है। तराई प्रदेश में शिक्षा की बहुत कमी देखने में आई। गरीबी भी अधिक है।

वीर गज

ता ४-५-६७।

यह नेपाल का प्रवेश-द्वार है। वीरगंज में प्रवेश करते ही मन में उत्साह की लहर दौड़ गई। एक महीने की परीक्षा और पद यात्रा के बाद नेपाल का प्रवेश द्वार आया। सुरम्य प्राकृतिक सौन्दर्य के

वातावरण में जाते हुए यदि मन आनन्द-विभोर हो उठे, तो इसमें क्या आश्चर्य ? मनुष्य जब अपनी मंजिल के निकट पहुँचता है तो उमंगें दुगुने जोश के साथ लहरा उठती है।

उधर रक्सोल, हिन्दुस्तान का आखरी रेल्वे स्टेशन है और इधर ऊंचे हिमालय के मस्तक पर बसा हुआ रमणीय नेपाल है।

वीरगंज एक मध्यम स्थिति का कस्बा है। यहां मारवाड़ी भाइयों के भी १५० के लगभग घर हैं। कालेज भी है। यहां से नेपाल जाने के लिए रेल्वे मिलती है।

अमलेखगंज

ता० ८-५-५७ :

यह स्थान स्थल प्रदेश का आखिरी स्थान है। रेल्वे भी यहां समाप्त होजाती है। आगे दुर्गम घाटियों में से एक सड़क का मार्ग है जिसके द्वारा ही सारा यातायात सम्पन्न होता है। इसे त्रिभुवन राजपथ कहते हैं। भारत की सैन्य टुकड़ियों ने इसे बनाई है। सड़क भी साधारण स्थिति की है। नदी के किनारे से बढता हुआ मार्ग अत्यन्त सुहावने दृश्यों से भरा है। ऐसा घनघोर जगल कि जिसकी कल्पना ही की जा सकती है। इस घनघोर जगल से आच्छादित दोनों ओर ऊंची पहाड़ियां तथा कलकल करती हुई बहने वाली स्वच्छ सलिला सरिता! नेपाल की राजधानी काठमाडू तक ऐसा ही सुहावना दृश्य है।

अमलेख गज एक अच्छा व्यापार केन्द्र है। एक ओर सारा स्थल प्रदेश तथा दूसरी ओर पर्वतीय प्रदेश काठमाडू आदि। इन दोनों का मध्यबिन्दु है यह अमलेखगज, जो दोनों को जोड़ने का

काम करता है। यहाँ भी मारवाड़ी व्यापारियों के १९ घर हैं। मारवाड़ी समाज एक ऐसा व्यापार कुशल समाज है जो दुर्गम से दुर्गम स्थान में भी पहुँच कर व्यापार-कार्य करता है। व्यापार समाज की सुव्यवस्था के लिए अत्यन्त आवश्यक है। हालांकि आज तो व्यापार में प्रामाणिकता, नैतिकता और सेवा भावना का अभाव हो गया है। व्यापार को केवल अधिकाधिक अर्थ-संग्रह का साधन बना लिया गया है। परन्तु यदि शुद्ध व्यापारिक नियमों के अनुसार प्रामाणिकता पूर्वक व्यापार किया जाय तो उसमें मारवाड़ी समाज का उल्लेखनीय योगदान माना जा सकता है।

मैंसिया

ता ६-५-५७ :

नेपाली भाइयों से अच्छा संपर्क आ रहा है। इस प्रकार से जैन साधुओं का संपर्क इन लोगों के लिए सर्वथा नई बात है। इस लिये यहाँ उत्सुकता के साथ आते हैं। हमने अपना यह नित्यक्रम बनाया है कि रात्रि-काल में नेपाली भाषा में नेपाली भाइयों द्वारा ही भजन कीर्तन हो। यह कार्यक्रम बड़ा रुचिकर सिद्ध हो रहा है। नेपालियों में ईश्वर और देवी देवताओं के प्रति बहुत श्रद्धा होती है। इसलिए वे बड़े तन्मय होकर भजन कीर्तन का कार्यक्रम करते हैं।

पहाड़ों पर रहने वाले ये नेपाली स्त्री पुरुष बड़े परिश्रमी पुरुषार्थी और सरल स्वभाव के होते हैं। यहाँ स्त्रियाँ भी पुरुषों की तरह ही काम करती हैं। खेती की मुख्य जिम्मेदारी स्त्रियों पर ही होती है। ये लोग पर्वत चोटियों पर लघु-काय कुटिया का निर्माण बड़े चातुर्य के साथ करते हैं। कुटिया का रूप बहुत सुहावना होता

है। दूर से ऐसा ही प्रतीत होता है मानो कोई ऋषि कुटिया ही है। इन कुटियाओं के आस पास छोटी छोटी क्यारियों मे ये लोग खेती करते है। दूर से ऐसा लगता है मानों ये क्यारिया नहीं वल्कि झोपड़ियों में जाने के लिये पहाड़ पर सीढ़ीयों का निर्माण किया गया है पर ये सच में सीढीया नहीं वल्कि क्यारिया होती है। जगह २ पर निर्मल स्वच्छ सलिल के स्रोत और झरने मन को मोह लेते हैं। प्रकृति मानों सोलह शृङ्गार करके यहा धरती पर अवतरित हो गई है। माग भी इस प्रकार टेढ़ी मेढ़ी घाटियों के बीच से निकलता है कि दूर से आभास तक नहीं होता कि आगे मार्ग जा रहा है। ऐमा ही लगता है मानों एक पर्वत श्रेणी दूसरी पर्वत श्रेणी से सटकर खडी है, पर आगे जाने पर रहस्य खुल जाता है और स्पष्ट ही ये पर्वत श्रेणिया एक दूसरी से बहुत दूर हो जाती हैं।

इस प्रकार के मार्गों में से हम आगे बढ़े चले जा रहे हैं। यहां से दो रास्ते हैं एक रास्ता सडक का है जो कि करीब ८ मील के चक्कर का है दूसरे भीमफेरी का है जो पगरास्ता पहाड़ियों पर से नेपाल काठमाडू जाता है।

भीमफेरी

ता० १०–५–५७ :

यह भीमफेरी एक ऐतिहासिक स्थान है। ऐसा कहा जाता है कि लाक्षागृह से बचकर भागे हुए पाण्डवों ने इसी जगह विश्राम पाया था। और भीम ने यहीं पर हिडम्बा के साथ पाणिग्रहण (फेरी) किया था।

इधर पहाड़ी जातियों के लोग बहुत असंस्कृत भी मासाहारी तथा निर्दयी इतने कि खुले बाजारों में भैंसें काटते हैं।

राक्षसों की कल्पना ऐसे ही लोगों के आधार पर निर्मित हुई होगी। नेपाल के आड़े-टेढ़े रास्ते और ऊंची-नीची घाटियों की झोपड़ियों में रहने वाले ये लोग आज के युग के लिए चुनौती हैं। यह एक आवश्यक काम है कि इन लोगों का सुधार किया जाए तथा इन्हें मांसाहारी असंस्कृतिक जीवन से मुक्ति दिलाई जाए।

जिस युग में नेपाल की राजधानी काठमांडू तक पहुंचने के अन्य विकसित मार्ग नहीं थे तब भीमफेरी के पैदल-रास्ते से ही लोग काठमांडू पहुंचा करते थे। अब भी वह रास्ता है। पर भैंसिया से काठमांडू तक ८ मील की एक सड़क हिन्द-सरकार ने बनाई है। जिसका नाम त्रिभुवन राजपथ है। ८२९९ फीट की चढ़ाई नापकर इस मार्ग से ही हमें काठमांडू पहुंचना है।

कुलेखानी

ता० ११–५–५७ :

भैंसिया और भीमफेरी के बीच में एक गांव है पुरसी। इस गांव से काठमांडू तक तार के सहारे से चलने वाली डोलियों का मार्ग है। वह मार्ग आज हमने भीमफेरी से १ मील पूर्व दूर देखा। पहाड़ की चढ़ाई बहुत कठिन है। इसलिए इस आकाश-मार्ग का निर्माण किया गया है।

रास्ते में गढ़ी-पुलिस चौकी आई। यहां पर कस्टम के साथ विदेशी-यात्रियों के सामान और पासपोर्ट की जांच की जाती है। हमसे भी पासपोर्ट के लिए पूछा गया। हमने अधिकारियों को बताया कि जैन साधुओं के कुछ विशिष्ट प्रकार के नियम होते हैं। ये किसी एक देश के नहीं होते। सारे संसार में सुख-विचरण करने

यात्रि ऐसे साधुओं के लिए किसी प्रकार का प्रतिबन्ध भी नहीं होता। ये अप्रतिबद्ध विहारी होते हैं। ऐसा समझाने पर अधिकारी मान गये और हमें आगे बढ़ने का मार्ग मिला।

एक वह भी युग था, जब नेपाल, हिन्दुस्तान का ही अंग था। बर्मा, सिलोन और अफगानिस्थान तक भारत की सीमाएं थी, तथा यहां जैन धर्म की बोल बाला थी पर एक यह भी युग है जब किन्हीं मुनियों को नेपाल आदि देशों में मुक्त-प्रवेश का भी अधिकार नहीं है। संपूर्ण मानव-जाति एक है और सारे संसार में प्रत्येक मनुष्य को कहीं भी स्वतंत्र विचरण का अधिकार प्राप्त हो, तभी विश्व-मानुषत्व की एवं विश्व-बंधुत्व की कल्पना साकार होगी। कम से कम उन राष्ट्रों में, जो कभी एक ही राष्ट्र के अंग रहे हैं मुक्त-प्रवेश की सुविधा मिलनी ही चाहिए।

चितलांग

ता० ११-५-५७ :

प्रातःकाल हम कुलेखानी में थे। सायंकाल यहां आये। कुलेखानी तो नदी के किनारे पर ही बसा है। चितलांग तक रास्ते में पानी के झरनों का अपरिमित आनन्द मिला। नदियों व नालों पर झूलने वाले पुल बने हुए हैं। इन पुलों के नीचे से गुंजारव करता हुआ पानी बहता है। एक झरने की शब्द-झंकृतियां कानों में गूंजती ही रहती है कि दूसरा झरना आजाता है। इनकी संख्या इतनी अधिक है कि गिनती करना भी संभव नहीं। जैसे कोई वाद्य बज रहा हो, या स र ग म का आलाप हो रहा हो, ऐसा ही भान होता है।

इस क्षेत्र के लोग [illegible] समाप्त करके अपने अपने घरों में [illegible] कार्य ही है।

बाजार का और व्यवसाय का जीवन इन गांवों में नहीं के बराबर है। अतः इन लोगों के लिए रात्रि चिर शांति तथा विश्राम का संदेश लेकर आती है। आज कल शहर में जहां व्यापार तथा उद्योग ही जीवन के संचालन का प्रधान माध्यम है सूर्यास्त के बाद चहल-पहल आरम्भ होती है। बारह-एक बजे तक सिनेमा चलता है। होटल चलते हैं। लोग जागते हैं बिजली के तेज प्रकाश में रहते हैं इससे न केवल प्राकृतिक नियम टूटता है बल्कि शरीर पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है विदेशों में कई जगह बाजार २४ घंटों लगता है। इन जैन मुनियों के लिए तो कहीं भी एक व्यवस्थित जीवन-क्रम रहता है। सूर्यास्त से पहले पहले आहार आदि की क्रियाओं से निवृत्त हो जाते हैं। रात्रि का उपयोग विश्राम चिन्तन और ध्यान योग में करते हैं।

यहां के लोग जिस प्रकार खेती करते हैं, वह विशेष दर्शनीय है। ऊंचा-नीचा पहाड़ी प्रदेश होने के कारण हल-बैल से तो खेती हो नहीं सकती। सारी खेती हाथ से ही होती है। यहां के नेता कहते हैं हाथ से की जाने वाली खेती न केवल सुन्दर होती है। बल्कि उसमें उत्पादन भी ज्यादा होता है। एक एक पौधे से किसान का सीधा संपर्क आता है। फिर कुछ अर्थ शास्त्रियों का यह भी कहना है कि एक समय ऐसा आयेगा, जब इस धरती पर मनुष्य संख्या अत्यधिक बढ़ जाने से बैलों को खिलाने के लिए और उनका पालन करने के लिए मनुष्य के पास जमीन ही नहीं बचेगी। यहां के लोगों ने तो प्राकृतिक अर्थशास्त्र से हाथ की खेती स्वभावतः ही अपना ली है। खेती का दृश्य इतना कलात्मक होता है कि देखते ही बनता है। कौन कहता है कि इन जनपद देहाती किसानों को कला का ज्ञान नहीं है।

काठमांडू

ता० १३-५-५७ :

नेपाल की यह सुप्रसिद्ध नगरी और राजधानी है। २४ मील के घेरे में दूर दूर बसी हुई नेपाल की इस रमणीय नगरी में पहुँच कर एक सतोष हुआ। काठ मांडू आधुनिक सभी साधनों से सम्पन्न है। वैसे नेपाल का पूरा क्षेत्रफल ५४,३४३ वर्ग मील है। जिसमें ३१,८२० गाव है और लगभग १ करोड की आबादी है। नेपाल का हृदय है काठमाडू। साधुओं के भक्त नेपाल नरेश ने किसी युग में अपने परम श्रद्धास्पद गुरुदेव के लिए एक ही वृक्ष की लकड़ी का एक 'काष्ठ मंडप' तैयार करवाया। धीरे धीरे आगे चल-कर काष्ठ मडप के नाम को ही आम जनता ने काठमांडू कहकर प्रसिद्ध कर दिया।

यहीं है विश्व विख्यात हिन्दुओं के पशुपति नाथ का विशाल मन्दिर, जिसके सामने वागमती नदी अपने स्वच्छ प्रवाह के साथ बहती है। भगवान नीलकठ की एक सुषुप्तावस्था की प्रतिमा भी यहीं पर है, जिसके दर्शन के लिए यात्रियों को जलकुड के बीच जाना पड़ता है। वहा निरन्तर २२ धाराएँ गिरती है। इसी तरह प्राचीन कला-वैभव से सम्पन्न अनेक बुद्ध, कृष्ण आदि के मन्दिर काठमाडू में एक छोर से दूसरे छोर तक फैले हुए हैं।

यहा पर कहीं कहीं बुद्ध की प्रतिमाओं पर सर्प का चिन्ह भी देखने को मिलता है। एक विद्वान जैन यात्री ने इस प्रसग का उल्लेख करते हुए लिखा है "भगवान बुद्ध की प्रतिमा पर सप का जो चिन्ह है, उससे जैन तीर्थङ्कर पार्श्वनाथ की प्रतिमा का अद्भुत साम्य है। बारह वर्षीय दुर्भिक्ष के समय आचार्य भद्रबाहु ने नेपाल

में प्रवास किया था। पार्श्वनाथ उनके इष्ट थे। उन्होंने शायद पार्श्वनाथ की प्रतिमाएं स्थापित करवाई हों और वे ही कालान्तर में बुद्ध-प्रतिमाओं के रूप में परिवर्तित हो गई हों। जैन साधुओं की नेपाल यात्रा स्थगित होने से हजारों वर्षों का परिणाम यह हो सकता है कि जिन-मूर्तियों को बुद्ध मूर्तियों के रूप में लोग पूजने लग जांय। बुद्ध परिचित रहे हैं, इसलिए पार्श्वनाथ का परिचय बुद्ध में समाहित हो गया हो।"

(राह के संघर्ष पृष्ठ १७)

नेपाल में द्वितीय भद्रबाहु स्वामी बारहवीं शताब्दी में विचरण कर रहे थे उनको पूर्वों का ज्ञान था उनसे ज्ञान संपादन करने के लिये स्थूलीभद्रजी ने अपने दो साधुओं को लेकर नेपाल की ओर प्रयाण किया था तब नेपाल की विकट पहाड़ियों की व्यार चढ़ाई से घबराकर स्थूलीभद्रजी के दो साथी साधु पुन. लौट गये और सिर्फ स्थूलीभद्रजी भद्रबाहु स्वामी की सेवा में पहुँचे। सुना है कि नेपाल में १५ वीं शताब्दी तक जैन धर्म था।

ता० २७-५-५७ :

दो सप्ताह तक नेपाल की इस राजधानी में बिताकर आज हम विदा हो रहे हैं। इस अरसे में जो मुख्य कार्यक्रम रहे उनमें से एक है नेपाल राज्य के कुछ प्रमुख व्यक्तियों से मिलना और दूसरा है २५ सौ वर्ष के बाद सारे संसार में मनाई जाने वाली बुद्धजयंती में भाग लेना।

जिन प्रमुख व्यक्तियों से मिलन हुआ उनमें से नेपाल नरेश श्री महेन्द्र वीर विक्रम वर्तमान प्रधान मन्त्री टंकप्रसाद आचार्य समरक जनरल श्री केशर शमशेर जंगबहादुर आदि के नाम विशेष

रूप से उल्लेखनीय है। सभी के साथ जैन धर्म अहिंसा आदि विषयों पर बडी गभीरता के साथ विचार-विमर्श हुआ। सभी ने जैन साधुओं के जीवन मे उनकी आचार-क्रियाओं में और उनके व्रतों को जानने मे बडी अभिरुचि प्रगट की।

बुद्ध जयती का आयोजन वैसे तो सारे ससार में हो रहा है पर भारत तथा एशिया के अन्य बौद्ध देशों में बड़े जोर-शोर के साथ यह कार्यक्रम मनाया जा रहा है। हर जगह पर लाखों रुपये व्यय हो रहे हैं और विशाल पैमाने पर आयोजन किये जा रहे हैं यहा पर भी बहुत बड़े रूप में समारोह था, इस समारोह में मैंने अहिंसा के सूक्ष्म विश्लेषण के साथ बुद्ध के जीवन पर प्रकाश डाला--

"२५ सौ वर्ष पहले हुए महात्मा बुद्ध से ५६ वर्ष पूर्व भगवान महावीर हुए हैं जिन्होंने ससार को जो प्रेम, करुणा और मैत्रि का मार्ग बताया था, उसकी आज भी उतनी ही आवश्यकता है। क्योंकि ससार विनाश के कंगारे पर खडा है। आणविक प्रतिस्पर्धा ने सपूर्ण मानव जाति के लिए खतरा पैदा कर दिया है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर आख गडाए बैठा है। अपनी आर्थिक समृद्धि के लिए दूसरे को गुलाम बनाने में आज के राजनीतिज्ञ किंचित भी नहीं झिझकते। ऐसी दशा मे दुनिया का भविष्य अत्यत अधकार पूर्ण है'।

इसके अलावा एक और मुख्य आयोजन हमने किया। जैन, बौद्ध, और वैदिक धर्मावलम्बी एक साथ मिलकर एक अहिंसा सम्मेलन में आये। यह सम्मेलन नेपाल में १५०० सौ वर्ष के बाद सर्व प्रथम था। इस तरह के सम्मेलनों की आज भी कितनी आवश्यकता है, यह कहने की जरुरत नहीं। क्योंकि सभी

धर्मावलम्बियों के कंधों पर आज के समस्त संयुक्त वातावरण में यह जिम्मेदारी है कि आतंक, भय और हिंसा से संत्रस्त मानव को अहिंसा का मार्ग दिखाएं। धर्म स्थापना का यही वास्तविक उद्देश्य है। धर्म के छोटे मोटे साम्प्रदायिक मतभेदों को लेकर लड़ने से अब काम नहीं चलेगा। आज का मानव अंधेरे में कुछ टटोल रहा है, उसे मार्ग नहीं मिल रहा है। जब अहिंसा का प्रकाश फैलेगा तब अपने आप मनुष्य सतर्क होकर आगे बढ़ सकेगा।

इस सम्मेलन में भी मैंने अहिंसा का तात्विक विश्लेषण उपस्थित किया —

शक्ति का अजय स्रोत अहिंसा

(सामाजिक जीवन छोड़कर किसी गिरि कन्दरा में बैठकर कोई कहे कि मैं अहिंसा का पालन कर रहा हूँ तो यह कोई बड़ी बात नहीं। बड़ी बात है—दूकान पर सौदा लेते और देते समय यहां तक कि किसी को दण्ड देते और युद्ध करते समय भी अहिंसक बने रहना। मुनिश्री का यह विश्लेषणात्मक भाषण अहिंसा के सम्बन्ध में नई दृष्टि नया विचार और नया चिन्तन देगा और तार्किक बुद्धि को नया समाधान।—सं०)

'मानव-विचार, मनन और मंथन में सूक्ष्म शक्तियों का पुंज है। यह अपने जीवन को नितान्त उन्नत बना सकता है। वैसे तो प्राणी मात्र में शिवत्व और बुद्धत्व जैसे गुणों की उपलब्धि की सम्भावनाएं हैं, किन्तु वे अपनी शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलताओं के कारण दैवी सम्पत्ति के महत्व को हृदयङ्गम करने में बहुत

कष्ट अथवा स्वप्न है। नारकीय जीवों में शान्ति का अभाव रहता है तथा वे वातावरण से अभिभूत रहने के कारण, निरन्तर व्यथित एवं अशान्त रहते हैं। उनका सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि वे मानवों के समान अपने हिताहित कृत्याकृत्य को परख नहीं सकते। विवेक-बुद्धि का उनमें अभाव है। स्वर्गीय देवतागण भोग-विलासमय जीवन व्यतीत करते हैं, जिससे केवल तप और त्याग से प्राप्त परमानन्द से वे वंचित ही रहते हैं। इस भांति केवल मानव ही एक ऐसा विचारशील एवं मननशील प्राणी है, जिसमें अपने वास्तविक हिताहित कृत्याकृत्य को परखने की विलक्षण क्षमता पाई जाती है। मानव ही अपने जीवन की संजीवन-विद्या के रहस्य को समझ सकता है।

समस्त भारतीय वाङ्मय एवं प्राचीन उपलब्ध साहित्य की सर्व प्रथम सर्व प्रमुख अन्तर्चेतना एवं अन्तर्प्रेरणा है—अहिंसा। हमारे समस्त पुराण एवं इतिहास ग्रन्थ अहिंसा के गुरु-गम्भीर उद्घोष से गुञ्जित हैं। सर्वत्र ही इस बात पर जोर दिया गया है कि मानव-जीवन की सफलता एवं सिद्धि के लिए अहिंसा तत्त्व को जानना अत्यावश्यक है। यह अहिंसा तत्त्व वास्तव में अखिल शक्तियों का अजस्र स्रोत है। वैसे तो अहिंसा तत्त्व की विशद व्याख्या महाकाय ग्रन्थ द्वारा ही विवेचित की जा सकती है, फिर भी उसका सूक्ष्म आभास करना ही आज के प्रवचन का मूलोद्देश्य है।

अहिंसा के दो प्रमाण पक्ष हैं, जिनका हृदयङ्गम किया जाना सबसे पहले आवश्यक होगा। अहिंसा, विधेयात्मक होती है एवं निषेधात्मक भी। अहिंसा का साधारण अथवा विविध अर्थों में प्रयोग का अभिप्राय है—किसी को पीड़ा नहीं पहुँचना, हिंसा न करना। यह तो केवल अहिंसा का निषेधात्मक अभिप्राय हुआ।

किन्तु अहिंसा का एक और अधिक गहन एवं रहस्यात्मक अभिप्राय भी है जिसका आशय है—अपने जीवन की विविध शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक क्रियाओं प्रक्रियाओं द्वारा किसी प्रकार की अशान्ति विक्षोभ एवं विषाद की अनुभूति होने की सम्भावना ही नष्ट हो जाए।

निषेधात्मक अहिंसा—इस तत्त्व के भी अनेक पक्ष हैं, जो मननीय एवं विचारणीय हैं। यह किसी गुण-विशेष का द्योतक न होकर एक सर्वतोमुखी आध्यात्मिक अनुशासन का प्रतीक है। सूक्ष्म दृष्टि से देखे जाने पर इसमें सभी उत्तम गुणों का समावेश पाया जाता है। उदाहरणार्थ क्षमा से अभिप्राय है—यदि कोई व्यक्ति, अपनी इच्छा के विरुद्ध भी व्यवहार करे, तो भी हमारे हृदय में उसके लिए रञ्चमात्र भी रोष न उपजे। यही नहीं, हम उसके अज्ञान का बोध कराने के अभिप्राय से उसके साथ ऐसा मधुर एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार करें कि उसे अपनी भूल का स्वयं ही अनुभव हो जाए। क्षमा की परिणति एवं चरम अभिव्यञ्जना यही है। ध्यान पूर्वक विचार करने पर ज्ञात होगा कि क्षमा के इस सक्रिय रूप के मूल में अहिंसा ही प्रमुख आधार है। जो व्यक्ति क्रोध या आवेश के परिणाम में स्वयं जला जा रहा है उसके साथ आक्रोशपूर्ण व्यवहार तो उसकी क्रोधाग्नि में घृत-सिंचन का काम ही करेगा। ऐसा करने से तो स्वयं क्लेश की प्राप्ति एवं दूसरे को भी क्लेश का परिणाम मिलने के सिवाय कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। ऐसे में स्वयं अहिंसक भाव को अपनाने से ही आत्म-सन्तोष एवं पर-मार्ग प्रदर्शन सम्भव हो पायेंगे। जो अपने साथ बुराई करे, उसके साथ हम मृदु-मिष्ट व्यवहार करें—जहर देने वाले को अमृत दें और पत्थर बरसाने वाले पर फूलों की बिखेर करें—ये सभी उदारतापूर्ण व्यवहार निषेधात्मक अहिंसा का संयमनमय पक्ष है।

विधेयात्मक अहिंसा—अहिंसा तत्त्व का गहनतर एवं रहस्यात्मक तत्त्व ज्ञान है और तदनुसार अपने जीवन का नव सृजन है। उससे आध्यात्मिक अर्थ-दृष्टि की उपलब्धि होती है। यह एक प्रकार से मानव जीवन का सुसंस्कृत, सुविकसित एवं समुज्ज्वल विकास का राज-मार्ग है। उससे सभी प्राणियों में समान भाव, शान्ति-पूर्ण व्यवहार एवं धैर्यशीलता के अद्भुत गुणों की सिद्धि होती है। यह विधेयात्मक अहिंसा की साधना, निरन्तर अध्यवसाय स्वात्मानुशासन एवं तपस्या की अपेक्षा रखती है और जल्दबाजी में सिद्ध नहीं हो सकती। श्रद्धा, विश्वास एवं तदर्थ कष्ट सहन की उद्यतता, उसके अनिवार्य उपकरण हैं। अहिंसा के इस बलशाली पक्ष से नीच विचार, अधीरता एवं क्षुद्रता के अवगुण विनष्ट हो जाते हैं। महाकवि मिल्टन ने अपनी एक विश्रुत कविता में कहा है कि—"अहिंसा एवं क्षमा अपूर्व गुण हैं, जिनके द्वारा मानव सर्वोत्तम सिद्धियों को प्राप्त कर सकता है और मानव-गुणों का मुख्य द्वार अहिंसा अथवा निर्वैर ही है।"

प्रेम अहिंसा का उद्गम स्रोत है। इसका प्रारम्भ होता है ममत्त्व से। और इसकी परिणति होती है तादात्म्य में। जब दूसरे के दुःख दर्द को हम अपना दु.ख दर्द मानने लगते हैं तो हमारे मन में अहिंसा का प्रादुर्भाव होता है। इस भांति यह स्पष्ट है कि अहिंसा तथा उत्तम व्यवहार के मूल में प्रेम ही मौलिक तत्त्व है। प्रेम-मूलक अहिंसा के द्वारा ही एक दूसरे को परखने का अवसर मिलता है। ऐसी अहिंसा के राज्य में भय का अस्तित्व नहीं रहता। आज मानव को जितना भय एवं त्रास अन्य मानवों के द्वारा मिलता है, उतना तो उसे सिंह या सर्प से भी मिलने की आशा नहीं रहती। इसका कारण यही है कि मानव-हृदय में प्रेम का स्थान स्वार्थ ने प्राप्त कर लिया है। अहिंसा और प्रेम नैसर्गिक मानव गुण

हैं। उनके क्रियात्मक व्यवहार के लिये हमें किन्हीं साधनों एवं व्यापारों की खोज करनी नहीं पड़ती। दूसरे शब्दों में इसी को यों भी कहा जा सकता है कि अहिंसा तो अपने आप में स्वयंभू है किन्तु हिंसा के प्रयोग के लिए हमें दूसरों की अपेक्षा रहती है। एक प्रकार से यदि व्यापक दृष्टि से देखें तो समस्त कर्म व्यापार एवं प्रत्येक क्रिया का आधार या तो अहिंसा है अथवा हिंसा। हिंसायुक्त आचरण एवं चिन्तन से मानव पाशविक बन जाता है। इसके अतिरिक्त अहिंसा के आचरण से मानव की प्रकृति में दिव्यत्व की प्रतिष्ठा होती है।

भगवान् महावीर ने कहा है

एवं खु नाणिणो सारं जन हिंसइ किंचणं। —सू० १ १ ३ ४।

ज्ञान का सार तो यही है कि किसी भी प्राणी की हिंसा न करना आघात न पहुँचाना अथवा पीड़ा न देना। दूसरे शब्दों में समस्त प्राणियों को आनन्द पहुँचाने में ही ज्ञान की सार्थकता है। उपयुक्त सूत्र में अहिंसा के निषेधात्मक एवं विधेयात्मक—दोनों ही पक्षों की विशद एवं सम्पूर्ण परिभाषा आगई है। उपयुक्त सूत्र की पूर्ति हमें दशवैकालिक सूत्र में मिलती है, जहां कहा गया है कि— "अहिंसा निउणा दिट्ठा" अर्थात्—दक्ष वही है जो कि अहिंसा के प्रयोग में निपुण है। इन थोड़े से शब्दों में गर्भित अहिंसा की विराट व्याख्या बारम्बार मननीय है।

हिंसा क्यों नहीं करनी चाहिये इसको भी स्पष्ट किया गया है। उत्तराध्ययन-सूत्र में सव्वे पाणा पियाउया। अ० १८, ब० ३। सभी प्राणियों को जीवित रहना ही प्रिय है। कोई भी किसी भी अवस्था में मृत्यु एवं दुःख को नहीं चाहता। इसलिए किसी को भी दुःख या

मृत्यु अभीष्ट नहीं है, इसको सदा सर्वदा ही ध्यान रखना उचित है, अहिंसक व्यवहार इसीलिये सभी प्राणियों के लिए प्रेय भी है और श्रेयस्कर भी। इसी तत्त्व को यों कहा गया है—

"पाणे य नाइवाएज्जा .. निज्जाइ उदगं व थलाओ ॥" उ० ८-९

जो व्यक्ति प्राणियों का वध नहीं करता, वह उसी भांति हिंसा कर्मों से मुक्त हो जाता है, जैसे कि ढालू जमीन पर से पानी बह जाता है। उसको जन्म-मृत्यु के बीच परिव्याप्त विभिन्न हिंसात्मक कार्य कलापों की कालिमा नहीं लग पाती और वह आद्योपान्त आत्म शुद्ध बना रहता है। इसी हेतु भगवान महावीर ने शान्ति की उपलब्धि का मार्ग बताते हुए यों कहा है—'क्रमश प्राणीमात्र पर दया करना ही शान्ति प्राप्त करना है।'

इस प्रकार अहिंसा तत्त्व की यदि व्यापक परिभाषा की जाये तो आध्यात्मिक दृष्टि से अहिंसा का व्यावहारिक स्वरूप है—राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया, लोभ, भीरुता, शोक आदि निकृष्ट भावों का परित्याग। केवल प्राणियों के प्राणों का हनन ही हिंसा नहीं है वरन् वास्तविक बात तो यह है कि जब तक मानव हृदय में क्रोध भाव आदि विद्यमान है, तब तक किसी के प्रति बुरा बर्ताव न करते हुए भी वह हिंसा से विमुक्त नहीं है। अहिंसा एक देशीय एवं सर्व देशीय—दो प्रकार की मानी जाती है। सांसारिक जीवन बिताने वाला व्यक्ति सर्व देशीय अहिंसा का पालन तो नहीं कर सकता, किंतु फिर भी वह नित्य प्रति के सामाजिक कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुए एक देशीय अहिंसा का पालन करता ही रह सकता है। अहिंसक गृहस्थ, बिना प्रयोजन के या प्रयोजन से प्रेरित होकर दोनों ही अवस्थाओं में तुच्छ से तुच्छ प्राणी को भी कष्ट नहीं पहुँचायेगा। साथ ही देश रक्षा एवं समाज रक्षा के अभिप्राय से यदि उसे किसी

कर्त्तव्य प्रेरणा से प्रेरित होकर शस्त्र शस्त्रों तक का प्रयोग भी करना पड़े तो वह अहिंसा व्रत का खण्डन नहीं माना जायेगा क्योंकि ऐसे शस्त्र प्रयोग में मौलिक प्रेरक तत्त्व तो वही 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' ही है।

धर्मानुयायी गृहस्थ केवल स्थूल हिंसा का परित्याग कर पाता है। स्थूल हिंसा से अभिप्राय है—निरपराधी प्राणियों का संकल्प पूर्वक दुर्भावना या स्वार्थ से प्रेरित होकर हिंसा न करना। किसी भी प्राणी का भोजन के निमित्त मात्र हरण न करना। प्रत्येक प्राणी को उपयुक्त समय पर भोजन की आवश्यकता होती है। उसे खाने का कभी भी बाधक न प्रयत्न न करे। जैन शास्त्रों में—"भत्त पाण विच्छेदे" नामक दोष से गृहस्थ दूर रहे ऐसा उल्लेख है, अर्थात्—अपने आश्रित व्यक्ति से उसकी सामर्थ्य से अधिक काम लेना तथा उसे समय पर भोजनादि न देना भी हिंसात्मक दोष है। किसी भी प्राणी को अनुचित बन्धन में डालने से 'बन्धन' नामक हिंसात्मक दोष लगता है। किसी को मारना पीटना या गाली देना आदि 'वर्ण विच्छेद' दोष कहलाते हैं। मारने की अपेक्षा अपराधी का व्यवहार भी महादोष माना जाता है। इन पाँच प्रकार के हिंसात्मक दोषों से परे रहना ही व्यावहारिक जीवन में अहिंसा का प्रयोग करना एवं हिंसा से दूर रहना है।

आध्यात्मिक दृष्टि से अहिंसा पथ के पथिक को इस भांति सोच विचार करना चाहिये कि जिसे मैं मारना चाहता हूँ वह भी मैं ही हूँ जिसके ऊपर मैं आधिपत्य स्थापित करना चाहता हूँ, वह भी मैं ही हूँ। जिसको मैं पीड़ा पहुँचाना चाहता हूँ वह भी मैं ही हूँ। आत्म-योग की दृष्टि के अनुसार जिसे दूसरे व्यक्तियों के साथ मैं भला या बुरा बर्ताव करना चाहता हूँ वह भी मैं ही हूँ दूसरों को

बंधन में डालना, वस्तुत स्वय को ही बंधन में डालना है।" इस प्रकार का निरन्तर चिन्तन साधक को अहिंसक जीवन की ऊंची आदर्श भूमि पर ला खड़ा करता है।

गृहस्थ जीवन की भूमिका पर, जीवन निर्वाह करने वाले व्यक्ति को चार प्रकार की हिंसा से बचना आवश्यक है—संकल्पी, विरोधी आरम्भी और उद्यमी। हिंसा के, इस दिन प्रतिदिन के जीवन में आरोप की परिभाषा करनी आवश्यक है। सबसे पहले हम संकल्पी हिंसा को ही लें। किसी विशेष संकल्प या इरादे के साथ किये गए, हिंसात्मक व्यापार को 'संकल्पी' हिंसा कहा गया है। शिकार खेलना मांस भक्षण करना आदि संकल्प कार्यों में 'संकल्पी' हिंसा होती है।

'विरोधी' हिंसा का अभिप्राय है—किसी अन्य द्वारा आक्रमण किये जाने पर उसके प्रतिकार करने में जो हिंसात्मक कार्य करना पड जाता है उससे। यह आक्रमण अपने व्यक्तित्व पर समाज पर या देश पर, किसी पर भी, किसी के द्वारा कभी किया जा सकता है। ऐसे संकट काल में अपनी मान प्रतिष्ठा अथवा आश्रितों की रक्षा के लिये युद्ध आदि में प्रवृत्त होने को 'विरोधी' हिंसा कहा जाएगा। गृहस्थ जीवन में ऐसे अनेक प्रसंग उपस्थित हो सकते हैं। ऐसे अवसर पर पीठ दिखा कर भागना अथवा जी चुराना, तो गृहस्थ अथवा सामाजिक कर्त्तव्य से प्रतिकूल होना है। हाँ, अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा यदि विरोध को अपनी व्यवहार कुशलता से टाला जाना सम्भव हो, तो उसके टालने का प्रयत्न अवश्य ही किया जा सकता है।

अमरीका के राष्ट्र निर्माता अब्राहम लिंकन के कहे गये कुछ स्मरणीय शब्द यहाँ उल्लेखनीय है—'युद्ध एक नृशंस कार्य है। मुझे उससे घृणा है। फिर भी न्याय या देश रक्षार्थ युद्ध करना

वीरता है। अपने देश की अखंडता के लिये किये गये धर्म-युद्ध को मैं न्याय समझता हूँ। मुझे उससे दुःख नहीं होता। एक जैनाचार्य का इस सम्बन्ध में कथन है—

'केवल दण्ड ही निष्पक्ष रूप से इस लोक की रक्षा करने में समर्थ होता है। किन्तु राजा द्वारा समान बुद्धि एवं निष्पक्ष भाव से प्रेरित होकर यथा दोष चाहे वह शत्रु हो या अपना पुत्र हो उसके साथ न्यायपूर्ण आचरण किया जाना उचित है। ऐसा दण्ड ही इस लोक में या परलोक में रक्षा करने वाला सिद्ध होता है।"

आरम्भी हिंसा मानव की नित्य प्रति की सहज जीवन-चर्या में भी जो हिंसात्मक कार्य-व्यवहार बिना संकल्प के बनते ही रहते हैं। उनसे लगे हुए दोष का नाम आरम्भी हिंसा है। मानव को धर्म-कर्म के लिये भी शरीर की रक्षा अभिप्रेत है। तथा भूख-प्यास के निवारण और आतप शीत वर्षा आदि से संरक्षण इन में भी स्वाभाविक रूप से हिंसा होती रहती है। उसे हिंसा का 'आरम्भी' दोष कहा जाता है। 'हितोपदेश' में एक 'आरम्भी हिंसा के सम्बन्ध में एक मनोहर कथा को हरिणी के मुख से कहलाया गया है—

"जब वन में पैदा होने वाले शाक-सब्जी घास-पात आदि के खा लेने से ही किसी भी प्रकार उदर-पूर्ति की जा सकती है, तो भला फिर इस आग लगे पेट को भरने के लिये महा पाप क्यों करें!

जैनाचार्य श्री हरि विजय सूरि आदि के सम्पर्क में आने से जब सम्राट् अकबर के मन में अहिंसा के प्रभाव से विवेक-बुद्धि जागृत हुई उसका अबुलफज़ल ने यों वर्णन किया है कि— सम्राट्

अकबर ने कहा कि यह उचित नहीं जान पड़ता कि इन्सान अपने पेट को जानवरों की कब्र बनाये। मांस भक्षण मुझे प्रारम्भ से ही अच्छा नहीं लगता था। प्राणी रक्षा के संकेत पाते ही मैंने माँस भक्षण त्याग दिया।"

'उद्योगी हिंसा' आजीविका-सम्बन्धी वृत्ति के निर्वाह करते समय स्वतः होती रहने वाली हिंसा को कहते हैं, जोकि कृषि आदि कर्मों मे, जाने-अनजाने बन ही जाती है। फिर भी कृषि एवं वाणिज्य के मूल में लोक मगल एव लोक-हित की भावना रहने पर 'उद्योगी हिंसा' के दोष का यत्किञ्चित परिमार्जन भी होना सम्भव होता है। इस भाति हम देखते हैं कि जीवन क्या है? एक सतत सग्राम है। इसमे अनन्त परिस्थितियों में होकर निकलना पड़ता है। किन्तु फिर भी यदि मानव अहिंसा के जीवन-सूत्र का निर्वाह करता हुआ इस धर्म-युद्ध में प्रवृत्त होता है तो उसकी विजय स्वत ही सुनिश्चित रहती है। सभी महा पुरुषों की जीवन घटनाएँ इस तथ्य की साक्षी है कि उन्होंने अपने अपने कर्त्तव्य-निर्वाह की दुर्गम यात्रा मे सदा ही 'अहिंसा को सर्व-प्रथम माना है।

मानव एक चेतनाशील प्राणी है। किसी कारण वश उसकी यह चेतना शक्ति मन्द पड़ जाती है, तब वह आततायी एव अत्याचारी हो जाता है। फिर भी उसकी नैसर्गिक सुषुप्त चेतना कभी न कभी जाग ही उठती है। तब उसे अपने किये हुए अज्ञानमय कार्यों पर पश्चाताप भी होता है। सिकन्दर, नेपोलियन, हिटलर आदि सभी ने अपनी जीवन सन्ध्या में यह अनुभव अवश्य किया कि उनके जीवन-काल में उनसे अनेक अन्यायपूर्ण एव अनुचित कार्य बन पड़े, जिनका निराकरण करने के लिए उनके पास अन्त में कोई भी उपाय नहीं रहा। अपनी महत्त्वाकाक्षाओं की पूर्ति की धुन में उन्होंने असख्य नर-नारियों के हँसते खेलते जीवनों को

भ्रंस कर डाला। सारांश तो यही है कि हिंसा में निरन्तर प्रवृत्त रहने पर भी अन्त में अहिंसा की ही स्नेहमयी गोद में मानव को शांति एवं विश्रान्ति मिल पायेगी।

आज के अविश्वासपूर्ण वातावरण में, इस बात पर विश्वास करना कठिन होता है कि हिंसक विचारों द्वारा आयु-बल क्षीण होते रहते हैं। निरन्तर हिंसात्मक विचारों में लीन रहना—निश्चित मृत्यु की ओर अग्रसर होने का ही द्योतक है। हिंसापूर्ण विचारों से मानव की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। उसकी शांति नष्ट हो जाती है। सद्वृत्तियाँ चली जाती हैं। इस भांति वह अनजाने ही सर्व नाश एवं मृत्यु के गह्वर में स्वयं ही खोता चला जाता है।

वैज्ञानिक अभ्युदय के इस युग में अहिंसा सम्पूर्ण विश्व के लिए आवश्यक है। आज का मानव भौतिक पदार्थों के मायामोह में मतिमूढ़ हो रहा है। फिर भी उसका प्रत्यक्ष परिणाम सभी के समक्ष है। एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति से आतंकित एवं भयभीत है। एक देश दूसरे देश से शंकित एवं त्रस्त है। अणुबम आदि अनंत परम संहारकारी अस्त्र-शस्त्रों की होड़ से आज मानव-जाति के भविष्य पर भयंकर घटनाएँ आ जाती हैं। चन्द्रलोक में भी अपनी सत्ता जमाने की महत्त्वाकांक्षा रखने वाला मानव कहीं अपनी इस घातक, संहारक उपकरण निर्माण की विघातक होड़ द्वारा कभी अपना अस्तित्व ही न मिटा ले इसकी सदा ही आशंका बनी रहती है। इस विश्व-व्यापी अविश्वास आतंक एवं हिंसा का निराकरण केवल अहिंसात्मक संजीवन विद्या की साधना द्वारा ही सम्भव है।

अहिंसा के प्रयोग के लिए, प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पहलू पर व्यापक क्षेत्र खुला हुआ है। समाज का प्रत्येक नागरिक

अपने-अपने क्षेत्र एवं परिस्थिति के अनुसार अहिंसात्मक जीवन अपनाने की साधना में प्रवृत्त हो सकता है। एक डाक्टर या चिकित्सक यदि अपनी चिकित्सा वृत्ति एवं भेषज क्रिया का लक्ष्य मात्र धनोपार्जन न रखकर, लोक सेवा रख पाए, तो वह अधिक से अधिक अर्थों में एक अहिंसक जीवन बिताने में समर्थ हो सकता है। यदि कृषक ससार के भरण पोषण की भावना से अन्न का उत्पादन करे, तो वह भी अहिंसा व्रत का व्रती कहा जा सकता है। व्यापारी लोक-हित को यदि प्रथम स्थान दे एव धनार्जन को दूसरा, तो वह भी 'उद्योगी' हिंसा-दोष से बचा रह सकता है। श्रीमद् भगवद्-गीता के अंतर्गत् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाया है कि—'जो व्यक्ति अपनी परिस्थिति के अनुसार अपने उत्तरदायित्व एव स्व-धर्म का निर्वाह करता है, वह चिरस्थायी एव शाश्वत श्रेय का भागी बनता है।'

इस सजीवन-विद्या की महाशक्ति 'अहिंसा' की आराधना-साधना द्वारा मानव ऊँची से ऊँची आध्यात्मिक सिद्धि का अधिकारी बन सकता है। भगवान् महावीर का आविर्भाव, महात्मा बुद्ध से ८२ वर्ष पूर्व हुआ था। उन्होंने अहिंसा की अमोघ शक्ति का ज्ञान जन-साधारण को हृदयगम कराया एव २५ सम्राटों ने उनके धार्मिक उद्‌बोधन को सुनकर राजपाट का परित्याग करके अपरिग्रह व्रत अपनाया था। उन्होंने श्रेणिक महाराजा बिम्बसार द्वारा, उसके संपूर्ण राज्य में हिंसा निषेध करवा दिया था। उन्हीं की प्रेरणा पाकर लाखों कोटयाधीशों एवं लाखों सुकुमार ललनाओं ने वैभव पूर्ण जीवन को ठुकराकर, वैराग्य वृत्ति स्वीकार की थी। आज भी भगवान् महावीर द्वारा प्रवर्त्तित जैन-धर्म के कारण विश्व में अहिंसात्मक भावनाओं एवं सिद्धान्तों का प्रचलन व अगीकरण पाया जाता है।

(२५०१ वीं बुद्ध जयंती, स्थान नैपाल)

नेपाल यात्रा का इस तरह के सर्वजनोपकारी कार्यक्रमों का आयोजन होने से बहुत महत्त्व बढ़ गया।

नगर के अनेक प्रमुख लोगों के अलावा वर्तमान खाद्य मंत्री श्री सूर्य बहादुर साह पोस्ट उपमंत्री श्री देवमानजी, प्रधान न्यायाधीश श्री अनिरुद्ध प्रसादजी आदि के साथ हुई मुलाकात तथा धर्म चर्चा भी खूब याद रहेगी।

अब यहां से जिस रास्ते से होकर आये थे उसी रास्ते वापस भारत के लिए लौट आया हूँ। नेपाल-यात्रा बड़ी सुखद अनुभव वाली सब जनोपकारी एवं संस्मरणीय रहेगी। ऐसे प्रदेशों में जाने से ही वास्तविक दुनिया का ज्ञान होता है और नई नई बातें सीखने-समझने का अवसर मिलता है

रक्सोल

ता० १–६–५७ :

नेपाल की दुर्गम दुरूह घाटियां लांघ कर अब हम पुन हिन्दुस्तान में प्रवेश कर रहे हैं। रक्सोल दोनों देशों के मध्य में पड़ने के कारण एक अच्छा सेंटर बन गया है। यहां से नेपाल और मुजफ्फरपुर के बीच के लिए एक सीधे राजमार्ग का निर्माण हो रहा है। यहां से सीतामढ़ी दरभंगा, समस्तीपुर मुजफ्फरपुर आदि के लिए रेलें जाती हैं। हम भी इसी रास्ते से आगे बढ़ने वाले हैं। उत्तर बिहार की पूरी परिक्रमा हो जाएगी उत्तर बिहार का भारत में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। यहां कई विशिष्ट एतिहासिक स्थान भी हैं और इस क्षेत्र के लोगों ने देश के विकास में अपना उल्लेखनीय योग दिया है। क्योंकि हमें चातुर्मास के लिए मुजफ्फरपुर पहुँचना है, इसलिए समय तो थोड़ा ही है पर इस थोड़े समय का ठीक ठीक उपयोग करके उत्तर-बिहार का पूरा परिचय तो प्राप्त कर ही लेना है।

दरभंगा

ता २४-६-५७ :

हम दरभगा में २० जून को पहुँचे। यहा के लोगों की भक्ति और आग्रह ने हमें ४ दिन रोक लिया। दरभगा सस्कृत-प्रचार की दृष्टि से काशी के बाद सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। मिथिला-क्षेत्र का केन्द्र होने से दरभगा का अनूठा ही महत्त्व हो गया है। हमने यहा चार व्याख्यान दिये। व्याख्यानों में शहर की आम जनता बड़ी सख्या में आती थी।

जिन विषयों पर व्याख्यान हुए, वे इस प्रकार हैं—

(१) आज के युग की समस्याएँ कैसे हल हो ?
(२) व्यावहारिक जीवन मे अहिंसा का प्रयोग
(३) मानव के कर्त्तव्य
(४) मानवता के सिद्धात

लोगों का आग्रह रहा कि अगला चातुर्मास यहा पर ही सपन्न किया जाय। इस तरह यहा आना बहुत सार्थक रहा। मारवाड़ी भाइयों के भी यहा पर दो सौ घर हैं। एक राजस्थान विद्यालय भी है। हमने राजस्थान विद्यालय का निरीक्षण किया। अच्छे ढग से चल रहा है। विद्यार्थियों से दो शब्द कहते हुए मैंने बताया कि "आप आज विद्यार्थी हैं, लेकिन जब पढ लिखकर बड़े बनेंगे, तब आपके कधों पर देश के निर्माण तथा संचालन की जिम्मेवारी आयेगी। आप ही नेता, विचारक, डाक्टर, वकील, प्रोफेसर, उद्योगपति, व्यापारी आदि बनेंगे। अत आपको अभी से अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए। यदि आप अभी कुसगति, व्यसन, आलस्य,

प्रमाद उच्छृंखलता आदि दोषों के शिकार हो जायेंगे तो आगे कैसे राष्ट्र की बागडोर संभाल सकेंगे ? यह विचार करने की बात है। इसलिए अभी से अपने जीवन में संयम सदाचार आदि सद्गुणों को स्थान दीजिये। कोई भी आदमी आत्म-गुणों के आधार पर ही बड़ा बन सकता है। आज के विद्यार्थी अविनीत और उद्दंड होते हैं यह ठीक नहीं है। विद्या के साथ विनय तथा नम्रता आनी चाहिए।"

समस्तीपुर

ता० १ –६–५७ :

यहाँ पर आने से स्थानीय जन-समाज में एक विशेष प्रकार का औत्सुक्य फैल गया। हमें देखने के लिए, चर्चा तथा वार्तालाप करने के लिए विविध प्रकार के लोग आने लगे। हम जब १८ तारीख को यहाँ आये तो विभिन्न स्थानों पर व्याख्यान देने के लिए आग्रह भी होने लगे। आखिर ३ व्याख्यान स्वीकार किये। पहला व्याख्यान मारवाड़ी ठाकुरवाड़ी में 'विश्व की समस्याएं" विषय पर हुआ। इस व्याख्यान से आम लोगों में विशेष रुचि देखी गई। दूसरा व्याख्यान जैन मारवाड़ में हुआ जिसका विषय था 'दैनिक जीवन में अहिंसा का प्रयोग।" तीसरा व्याख्यान नई धर्मशाला में 'विकास के मूलभूत सिद्धांत' के संबंध में हुआ। समस्तीपुर में भी ३ दिन का दिलचस्प वातावरण रहा।

पूसारोड स्टेशन

ता० २–७–५७ :

पहले यहाँ पर भारत प्रसिद्ध कृषि महा विद्यालय था। जिसमें विभिन्न प्रकार की कृषि संबंधी वास्तविक शिक्षा दी जाती थी। अब वह महा विद्यालय नई दिल्ली में इसी नाम से चल रहा है।

यहा पर अभी गाधीवादी कार्यकर्ताओं के बहुत बड़े २ केन्द्र चलते हैं। एक कस्तूरबा महिला विद्यालय और दूसरा खादी ग्रामोद्योग कार्यक्रम। दोनों में कुल मिलाकर सैंकड़ों भाई-बहन काम करते हैं। कस्तूरबा विद्यालय महिलाओं के शिक्षण का और उन्हें ग्राम सेविका बनाकर गावों मे भेजने का आदर्श कार्य कर रहा है। इस विद्यालय की बहनें प्रान्त भर में फैली हुई हैं और गावों में अशिक्षित महिलाओं को शिक्षा देना, ग्रामोद्योग सिखाना, सिलाई सिखाना, सफाई सिखाना, उनके गदे बच्चों को नहलाकर उन्हें तैयार करना, उनको नाचना, गाना भी सिखाना, बीमारों की सेवा करना आदि करुणा मूलक काम करती हैं। इनका सचालन बिहार शाखा कस्तूरबा स्मारक निधि की ओर से होता है। यहा की सचालिका सु श्री सुशीला अग्रवाल बहुत ऊचे विचारों की और सेवा-त्यागमय जीवन बिताने वाली ब्रह्मचारिणी तरुणी हैं। ये पहले किसी कालेज में प्रोफेसर थी। अब सब कुछ छोड़कर सेवा का काम करती हैं। एक यहा माताजी हैं जिन्हें लोग 'गायों की माताजी' के नाम से पुकारते हैं। वे भी बहुत उच्च कोटि की सेवा-भावी महिला हैं। और भी बहुत सी बहनें हैं। यह सस्था राष्ट्र के लिए आदर्श कार्य कर रही है।

यहा की दूसरी मुख्य प्रवृत्ति खादी ग्रामोद्योग की है। खादी का आरंभ से लेकर अंत तक समग्र दर्शन यहा होता है। कपास पैदा करना, धुनना, कातना, कपड़ा बनाना, इसी तरह चरखे तैयार करना आदि सब काम यहा होते हैं और सिखाए भी जाते हैं। यह सस्था एक गाव की तरह बहुत बड़े पैमाने पर बसी हुई है। इस सस्था की ओर से आसपास के देहाती-क्षेत्र में जो काम चल रहा है, वह भी दर्शनीय एव उल्लेखनीय है। अबर चरखे द्वारा स्वावलबन करने और गरीबी मिटाने का एक सफल प्रयोग यहा पर

हो रहा है। दिनभर खेती करने के बाद रात को स्त्री-पुरुष-बच्चे सब चंवर चर्खा चलाते हैं। उनकी यह मान्यता है कि यह मजदूरी का तो सबसे बड़ा साधन है ही देश में जो बेकारी का भूत है उसे भगाने के लिए यह अचूक प्रयोग है। गांधीजी ने ग्राम स्वाव लंबन का जो चित्र अपने मस्तिष्क में बनाया था वह यहां पर साकार-जैसा होता दीख रहा है।

यदि हम इस यात्रा में पूसारोड न आते तो एक कमी ही रह जाती। ये दोनों संस्थाएं बहुत दर्शनीय हैं। राष्ट्र सेवा का यदि सरकार के अलावा कोई ठोस आर्थिक कार्यक्रम चल रहा है तो वह सर्वोदय वालों की ओर से चल रहा है ऐसा कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

मुजफ्फरपुर

ता० ६–७–५७।

पूसा से हम लोग बखरी पीपरी तथा रोहुआ होकर आये हैं। इन तीनों गांवों में रात्रि प्रवचन हुआ। लोगों ने बहुत उत्साह के साथ स्वागत किया। धर्म चर्चा की ओर व्याख्यान सुना। इस क्षेत्र में वैष्णव ब्राह्मणों की तादाद काफी है। ये सब शुद्ध शाकाहारी होते हैं।

चातुर्मास व्यतीत करने के लिए आज हम पुन मुजफ्फरपुर आगये हैं। चार महिने तक यहां रह कर हमें अपने आध्यात्मिक जीवन का विकास करते हुए जन मानस को आध्यात्मिक चिन्तन की ओर प्रवृत्त करने की कोशिश करनी है। क्योंकि आखिर साधु का कर्तव्य यही तो है। उसे अपने और समाज के आध्यात्मिक जीवन की ओर निरन्तर ध्यान रखना है। जो साधु अपने इस

पावन कर्तव्य से विमुख हो जाता है वह अपने उद्देश्य तक पहुँचने में सफल नहीं हो सकता।

यह नया क्षेत्र है इसे तैयार करना हमारा काम था अत हमने सम्प्रदाय के भेदभावों को जनता के सामने न रखते हुए हमने मानवता के सिद्धान्त ही जनता के सन्मुख रखे।

ता० २-६-५७ :

इस चातुर्मास का सबसे मुख्य कार्यक्रम आज सानंद सम्पन्न हुआ है। यह कार्यक्रम सास्कृतिक सप्ताह समारोह का था। ता० २५-८-५७ को सप्ताह आरम्भ हुआ और आज समाप्त हुआ। इन ७ दिनों में विविध विषयों के सम्बन्ध में विद्वान वक्ताओं ने जो विचार प्रस्तुत किये, वे न केवल विद्वतापूर्ण थे बल्कि चिन्तनीय एवं मननीय भी थे।

कार्यक्रम इस प्रकार रहा:—

ता० २५-८-५७ रविवार :—

सभापति—डा० सुखदेवसिंह शर्मा, M A Ph., D ,
प्राध्यापक, दर्शन विभाग,
लङ्गटसिंह कालेज, मुजफ्फरपुर।
वक्ता—डा० हीरालाल जैन, M. A., LL B , D Litt ,
निर्देशक, प्राकृत जैन विद्यापीठ, मुजफ्फरपुर।
विषय—भारतीय सस्कृति और उसको जैन धर्म की देन।

ता० २६-८-५७ :

सभापति—डा० एस० के० दास, M A ,P R S Ph D ,
अध्यक्ष, दर्शन विभाग, लङ्गटसिंह कालेज।

वक्ता—श्री चन्द्रानन ठाकुर, लंगटसिंह कालेज।
विषय—वेदान्त दर्शन।

ता० २७-८-५७ :

सभापति—पं० रामनारायण शर्मा M.A., वेदान्ततीर्थ
साहित्याचार्य, व्याकरणशास्त्री साहित्यरत्नादि,
अध्यक्ष—संस्कृत विभाग लंगटसिंह कालेज।
वक्ता—पं० सुरेश द्विवेदी वेद व्याकरण वेदान्ताचार्य
प्रिंसिपल धर्मसमाज संस्कृत कालेज मुजफ्फरपुर।
विषय—वैदिक संस्कृति।

ता० २८-८-५७ बुधवार:—

सभापति—डा० हीरालाल जैन, M.A. LLB D Litt.,
वक्ता—डा० वाई मसीह,
प्राध्यापक, दर्शन विभाग, लंगटसिंह कालेज।
विषय—वर्तमान युग में धर्म का स्थान।

ता० २९-८-५७ बृहस्पतिवार:—

सभापति—पं रामेश्वर शर्मा
वक्ता—मुनि श्री रामचन्द्रजी महाराज।
विषय—अहिंसा एवं विश्वमैत्री।

ता० ३०-८-५७ शुक्रवार:—

सभापति—प्रिंसिपल राम प्रसाद
रामदयालुसिंह कालेज मुजफ्फरपुर।

वक्ता—श्री रामस्वरूपसिंह, M.A
दर्शनविभाग, लगटसिंह कालेज ।
विषय—वर्तमान युग में धर्म की आवश्यकता ।

ता० ३१–८–५७ शनिवारः—

सभापति—डा० वाई० मसीह, M A, Ph D, (Eden) D. Litt,
दर्शनविभाग, लगटसिंह कालेज ।
वक्ता—प्रिंसिपल एल० घोष,
महन्त दर्शनदास महिला कालेज ।
विषय—ईसाई धर्म ।

ता० १–६–५७ रविवारः—

सभापति—प्रिंसिपल एल० घोष,
महन्त दर्शनदास महिला कालेज ।
वक्ता—श्रीमती रत्नाकुमारी शर्मा, अध्यक्षा हिन्दी विभाग,
महन्त दर्शनदास महिला कालेज ।
विषय—बौद्ध धर्म ।

ता० २–६–५७ सोमवारः—

सभापति—श्री सीताराममसिंह, M A,
प्राध्यापक, इतिहास विभाग, लंगटसिंह कालेज ।
वक्ता—श्री राजकिशोर प्रसाद सिंह, M A,
अध्यक्ष, इतिहास विभाग, रामदयालुसिंह कालेज ।
विषय—सैन्धव सभ्यता ।

इस कार्यक्रम में मुजफ्फरपुर की जनता ने आशातीत संख्या में भाग लिया। संस्कृति ही जीवन के विकास की सीढ़ी है। मानव-समाज प्रकृति की ओर बढ़े यह परम आवश्यक है। आज तो चारों ओर विकृतियाँ दिखाई दे रही हैं। खान पान रहन-सहन वेष-भूषा बोल चाल इत्यादि सब कार्मों में देखादेखी दिखावटीपन, आडम्बर, स्वार्थ और अप्रामाणिकता का समावेश हो रहा है। यह दिशा संस्कृति की नहीं बल्कि विकृति की है। अतः जगह-जगह सांस्कृतिक समारोहों के द्वारा जनता को शिक्षित करने की जरूरत है और उसे सांस्कृतिक-जीवन अपनाने की प्रेरणा देनी चाहिए। मुजफ्फरपुर में सांस्कृतिक सप्ताह के इस आयोजन ने एक प्रकार की वैचारिक जागृति उत्पन्न की और लोगों को यह अनुभूति हुई कि उन्हें अपने जीवन में संयम स्वाध्याय आध्यात्मिकता आदि को प्रश्रय देना चाहिए और प्रत्येक प्रवृत्ति के पीछे एक निश्चित उद्देश्य होना चाहिए। इस सांस्कृतिक सप्ताह से यहाँ की जनता बहुत प्रभावित हुई एवं जैन-धर्म की विशालता एवं सर्व धर्म समन्वय करने की स्याद्वाद नीति की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

ता० ३-११-५७ :

मुजफ्फरपुर के इस चतुर्मास में विभिन्न मुहल्लों और बाजारों में आध्यात्मिक विषयों पर प्रवचन होते रहे एवं जनता को सद् प्रेरणा मिलती रही। इसके साथ ही महिला-जागृति की ओर भी विशेष ध्यान दिया। क्योंकि बिना दोनों चक्कों के समाज रूपी रथ आगे नहीं बढ़ सकता। पर आज भारतीय समाज में और विशेष रूप से उच्च एवं मध्यमवर्ग में महिलाओं की दशा अत्यंत शोचनीय है। उनमें शिक्षा का तथा अच्छे संस्कारों का अभाव है। उन्हें किसी प्रकार की स्वतंत्रता नहीं है, अतः वे हर क्षेत्र में बहुत पिछड़ी हुई हैं। इसलिए हमने इस पहलू की ओर विशेषरूप से ध्यान दिया।

पहला महिला सम्मेलन ता० १३-१०-५७ को गंगाप्रसाद पोद्दार स्मृति भवन में किया गया। दूसरा सम्मेलन ता० १८-१०-५७ को हुआ। तीसरा सम्मेलन ३१-१०-५७ को किया गया। चौथा सम्मेलन आज महिला मण्डल में हुआ। इन सम्मेलनों का स्वरूप काफी विराट था और कुल मिलाकर हजारों स्त्रियों ने भाग लिया।

इन सभी प्रवचनों में हमने नारी-जागृति के लिए विशेषरूप से प्रेरणा देते हुए कहा कि—

"नारी ही समाज की रीढ़ है। मा, पत्नी और बहन के रूप में उस पर बहुत बड़े-बड़े सामाजिक उत्तरदायित्व हैं। किन्तु आज हर क्षेत्र में चाहे, शिक्षा का क्षेत्र हो, चाहे सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्र हो, चाहे दूसरा कोई क्षेत्र हो पुरुष ने नारी को किनारे कर रखा है। यह स्थिति स्वस्थ नहीं है। नारी समाज को अपने उत्तर-दायित्वों का भान करना चाहिए और उसे हर क्षेत्र मे आगे बढ़ना चाहिए।

आज नारी के पीछे रहने का बड़ा कारण उसकी रुढ़िवादिता एव अशिक्षा है। यदि वह इन दो रोगों से मुक्त होकर जीवन पथ में आगे बढे तो निश्चय ही अनेक क्षेत्रों में उसे पुरुषों से अधिक सफलता प्राप्त होगी।"

ता० ८–११–५७ :

ता० ६-७-५७ को यहां चातुर्मास व्यतीत करने के लिए हम आये थे और आज यहा से आगे रवाना हो रहे हैं। संयोग के साथ ही वियोग जुड़ा है और आने के साथ ही जाना जुड़ा है। यही प्रकृति का नियम है और इसी नियम के सहारे पर संपूर्ण सृष्टि चल रही है।

डा० हीरालालजी तथा डा० नथमलजी टांटिया जैसे धुरंधर जैन विद्वानों का सहयोग सदा याद रहेगा। वे खास विदा के अवसर पर भी उपस्थित थे। इसी तरह इस भाईयों की बस्ती में भाईभाइयों ने हमें जो सहयोग दिया प्रचार कार्य में हमारा साथ दिया और आध्यात्मिक मार्ग को समझने का प्रयत्न किया, वह सब प्रशंसनीय है। विहार के समय पर गद्‌-गद्‌ हृदय से विदाय देने के लिये हजारों भक्त सावन भादवा की तरह अपने नेत्रों में आंसु धाराएं बहाते हुए २ मील तक चले। उस समय का दृश्य बड़ा करुणाप्रद था और चातुर्मास की महान् सफलता, का वही एक बड़ा सबूत भी है।

आरा

ता –१७–११–७०।

आरा में दिगंबर समाज के काफी घर हैं। कई विद्वान भी यहां पर हैं। दिगम्बर समाज की ओर से महिला-शिक्षण और महिला जागृति का यहाँ पर जो काम हो रहा है, वह बहुत ही उल्लेखनीय है। इस प्रकार के केन्द्र देश के कोने कोने में होने से ही स्त्री-शक्ति का जागरण संभाव्य है।

आरा का सरस्वती पुस्तकालय भी अपने आप में एक अनुपम संग्रह है। पुस्तकें मानवजाति की सबसे बड़ी निधि होती है। मनुष्य का ज्ञान-कोष पुस्तक में ही संचित रहता है। आदमी चला जाता है, पर पुस्तक में प्रतिष्ठापित उसका अनुभव और ज्ञान सदा अमर रहता है। अगर मानव समाज के पास पुस्तक न होती तो आज जो हजारों वर्ष पुराना वेद पुराण सूत्र आगम त्रिपिटक कुरान

बाइबिल, रामायण महाभारत आदि हमें उपलब्ध है. यह कहां से मिलता। इसीलिए ज्ञान भंडार, आगम भंडार, पुस्तकालय आदि का बहुत महत्त्व होता है। यहां के सरस्वती पुस्तकालय में भी महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का संग्रह कनड़ी भाषा में करीब १५००० हस्तलिखित पुस्तकों का ताड़पत्र पर है।

शांतिनाथ मन्दिर में दिगम्बर जैन मुनि श्री आदिसागरजी के साथ व्याख्यान देने का अवसर मिला। जनता पर इस प्रेम पूर्ण मिलन का अत्यत अनुकूल प्रभाव पड़ा। हम सभी संप्रदायों के जैन मुनि अनेकान्तवादी भगवान महावीर के पुजारी हैं। पर आपस में प्रेम पूर्वक व्यवहार नहीं रखते। इससे जैन धर्म की स्थिति क्षीण होती जा रही है। मान्यताओं और सिद्धांतों में मतभेद होने के बावजूद आपसी प्रेम का व्यवहार नहीं तोड़ना चाहिए।

इसी प्रकार श्री चन्द्रसागरजी महाराज के साथ भी जो मिलाप हुआ वह सदा स्मरण रहेगा।

आज भगवान महावीर का पवित्र शासन दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी मूर्तिपूजक, तेरापंथी आदि विभिन्न संप्रदायों में बटगया है। एक संप्रदाय वाले दूसरी सम्प्रदायवालों को अपने में शामिल करने की धुन में रहते हैं। तथा एक दूसरे के विरुद्ध वातावरण तैयार करने में शक्ति लगाते हैं। इससे जैन धर्म का आगे विस्तार नहीं हो पाता। अत इस समस्या के बारे में जैन विद्वानों को गंभीरता से विचार करना चाहिए।

सहसराम

ता० २४–११–५७ ।

सहसराम मुगल युग में एक महत्त्वपूर्ण नगर था। इसलिए अब इसका ऐतिहासिक महत्त्व माना जाता है। शेरशाह ने १४४५ में एक

सुन्दर जलागार यहां पर बनाया था, वह अभी भी इतिहास-जिज्ञासु पर्यटकों के लिए आकर्षण एवं दिलचस्पी का केन्द्र है। इसी पक्के जलागार के बीच में वह "रोजा" बना हुआ है जिसे देखने के लिए दूर दूर के लोग आते हैं।

सहसराम एक केन्द्र-स्थान है। यहां से चारों ओर जाने के लिए पक्के राजमार्ग बने हुए हैं। पटना धनबाद कलकत्ता दिल्ली आगरा आदि की ओर सड़कें गई हैं।

सड़क पर ही भामीराम कन्हीचरण की जो धर्मशाला है उसमें हम लोग ठहरे। यहां से हमें मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र होते हुए आन्ध्र-हैदराबाद की ओर आगे बढ़ना है। लंबा रास्ता है।

वाराणसी

ता० १६-१२-५७ :

वाराणसी भारत का प्रसिद्ध तीर्थ ही नहीं है बल्कि वह विद्या संस्कृति और साहित्य का एक अमूल्य केन्द्र भी है। एक ही शहर में २ विश्व विद्यालय और वे भी अपने अपने ढंग के अद्वितीय।

हमने हिन्दू विश्व विद्यालय और संस्कृत विश्व विद्यालय का निरीक्षण करके यह महसूस किया कि काशी नगरी सचमुच विद्या की नगरी है। हिन्दू विश्व विद्यालय तो अपने आप में एक सुन्दर नगर ही है। इसकी स्थापना पं० मदन मोहन मालवीय के सद्प्रयत्नों का परिणाम है उन्होंने दिन रात एक करके इस संस्थान को खड़ा किया। ४ फरवरी १९१६ में तत्कालीन वाइसराय लार्ड हार्डिंग ने इसका शिलान्यास किया। सन् १९२१ में मेढ़ मिसेस के

राजकुमार प्रिंस ओफ वेल्स ने इसका उद्घाटन किया। पाच स्क्वायर मील की परिधि के अन्दर लगभग १३०० एकड़ भूमि में विश्व-विद्यालय बना हुआ है। छात्रालय, महाविद्यालय, अध्यापकों के निवास, पुस्तकालय, चिकित्सालय आदि की सुन्दर इमारतें शिल्प कला की दृष्टि से उत्कृष्ट नमूने की हैं। विश्व विद्यालय के मध्य में लाखों रुपये खर्च करके विश्वनाथजी का एक दर्शनीय मंदिर भी बनाया गया है। यहा पर जैन दर्शन के अध्ययन का भी विशेष प्रबंध है। पहले भारत विश्रुत जैन विचारक प० सुखलालजी जैन दर्शन के अध्यापक थे और आजकल उन्हीं के शिष्य तथा प्रकाण्ड विद्वान प० दलसुख मालवणिया अध्यापक हैं।

विश्व विद्यालय से संबद्ध एक जैन संस्था भी है जो पंजाब की श्री सोहनलाल जैन-धर्म प्रचारक समिति की ओर से चलती है। इस सस्था का नाम है— श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम। हम यहा पर भी आकर रहे। अधिष्ठाता पं० कृष्णचन्द्राचार्य तथा मुनि भाईदानजी से मिलाप हुआ। यह सस्था जैन-समाज की उत्कृष्ट सेवा कर रही है। जैन-विषयों पर एम ए, आचार्य ओ पी. एच डी के अध्ययन के लिए, छात्रवृति, निवास, पुस्तकालय आदि की सुविधाएँ दी जाती हैं। एक उच्चस्तर का मासिक पत्र 'श्रमण'' भी यहा से निकलता है। काशी के घाट भी बहुत सुन्दर हैं, इसलिए बहुत प्रसिद्ध हैं। गंगा नदी काशी के चरणों को पखारती हुई आगे बढ़ती है।

न केवल हिन्दुओं के लिए बल्कि जैनों और बौद्धों के लिए भी काशी तीर्थ स्थान है। तीन जैन तीर्थंकरों के चरणों से काशी नगरी पवित्र हुई है। हम एक दिन भेलूपुर के श्री पार्श्वनाथ मन्दिर में भी रहे। इस ऐतिहासिक मन्दिर के दर्शनों के लिए हजारों जैन धर्मावलम्बी प्रतिवर्ष आते हैं।

बौद्धों का तीर्थ स्थान सारनाथ है। ऐसा बताया जाता है कि तपस्या करते समय महात्मा बुद्ध के पांच शिष्य उन्हें छोड़कर यहां आगये थे। इसके बाद बोधगया में बुद्ध को बोधि (आत्म ज्ञान) मिली। तब बुद्ध ने सोचा कि सबसे पहले मुझे अपने उन पांचों शिष्यों को ही उपदेश देना चाहिए। अतः वे बोधगया से चलकर वाराणसी आये और सारनाथ में ठहरे हुए अपने पांचों शिष्यों को प्रथम उपदेश दिया। वह प्रथम उपदेश ही धर्म चक्र प्रवर्तन के रूप में विख्यात हुआ। यही स्थान पर सारनाथ होने के कारण इसका बहुत महत्त्व माना जाता है।

हम बनारस में ता० ५-१२-५७ को ही आगये थे। यहां १३ दिन रहकर विभिन्न स्थानों का पर्यवेक्षण किया। यहां पर भूतपूर्व तेरापंथी मुनि श्री हस्तीमलजी 'सुमन' से मिलाप हुआ। वे बहुत अच्छे विचारक और सर्वोदय कार्यकर्ता हैं। बनारस में सर्वोदय का साहित्य प्रकाशन मुख्य रूप से होता है। अखिल भारत सर्व सेवा संघ इस काम को करता है। विभिन्न पहलुओं से विविध प्रकार का साहित्य यहां से निकाला गया है। इस प्रकार लगभग दो सप्ताह का वाराणसी प्रवास बहुत अच्छा रहा। यहां पर स्थानकवासी समाज के करीब ३० घर हैं। बाकी श्वेताम्बर तथा दिगम्बर समाज के घर काफी संख्या में हैं। और सभी बिना भेद भाव के आपस में अच्छा व्यवहार रखते हैं।

पली

ता २८-१२-५७।

पैदल यात्रा में अनुकूल तथा प्रतिकूल अनेक परिस्थितियों में से गुजरना पड़ता है। हम महगांव से पली पहुंचे। रास्ते में

आहारादि की सुविधा न मिली। हम "पञ्जी" गाव के श्रीमान राजा राम के मकान पर पहुँचे। राजारामजी बाहर गए हुए थे; केवल महिलाएँ ही थी। सिफ तीन घर का छोटा गाव। हमको भूख और प्यास लग रही थी, अत हमने छाछ की याचना की। बहनों ने कुछ छाछ बहराई और हम आगे चले। करीब १ मील की दूरी पर स्कूल में रात्री विश्राम किया।

श्री राजारामजी जब घर आये तो महिलाएँ उनसे बोली कि आप तो बाहर गए हुए थे और पीछे से यहा मु ह बाधकर दो डाकू आये थे। अपना घर वगैरा देखकर गये हैं और स्कूल में हैं। यह सुनते ही श्री राजारामजी ने आस-पास के ३-४ व्यक्तियों को एकत्रित कर, लाठिया भाले वगैरा ले जहा हम ठहरे हुए थे वहा आये। स्कूल में सर्व प्रथम श्री राजारामजी भाला लेकर आये और बोले तुम कौन हो? कहा रहते हो? कहा से आये हो? उनका विकराल रूप देखकर हम डरे नहीं और हसते हुए कहा—हम जैन साधु हैं, और पैदल यात्रा करते हुए हम नागपुर की तरफ जा रहे हैं। हम पैसे वगैरा-धातु मात्र नहीं रखते हैं। और पैदल यात्रा द्वारा ससार की सेवा करते हैं।

इस प्रकार निखालस भाव के शब्द सुनकर वे रोने लगे, और बोले—हमने आपका बहुत बड़ा अपराध किया। माफ करना। हम तो आपको डाकू समझते थे क्योंकि आप जैसे मुनियों का यह प्रथम दर्शन हमको हुआ है। सभी लोगों ने करीब दो घंटे तक सतसग किया, और बहुत प्रभावित हुए।

सतना

ता० ३–१–५८ :

नया वर्ष नया प्रदेश नया वातावरण नया क्षेत्र नया सम्पर्क! सब कुछ नया! नवीनता ही जीवन है।

"पदे पदे यन्नवता मुपैति तदेव रूपं रमणीय तायाः!"

यह कालचक्र घूमता ही रहता है। दिन बीतता है, सप्ताह, मास, महीना भी चला जाता है और वर्ष भी देखते देखते व्यतीत हो जाता है। इस प्रकार वर्ष और युगों के साथ ही मनुष्य की आयु भी बीत जाती है। इस काल-चक्र को कोई भी पकड़ कर नहीं रख सकता।

हम बंगाल से चले बिहार में आये नेपाल को निहारा उत्तर प्रदेश का भ्रमण किया और अब मध्यप्रदेश में बढ़े चले आ रहे हैं। सतना मध्यप्रदेश का एक छोटा पर रमणीय नगर है। यहां से बनारस १८० मील है और जबलपुर ११८ मील। जबलपुर होते हुए हमें आगे बढ़ना है।

जबलपुर

ता० ३०–१–५८ :

आज महात्मा गांधी का निधन-दिवस है। महात्माजी को जो मृत्यु प्राप्त हुई वह एक शरीर की मृत्यु थी। वीर-मृत्यु थी। उसको तो यों कहिये कि उनका बलिदान था। उन्होंने अपने जीवन में अहिंसा, सत्य और सामंजस्य की सफल साधना की। अंत में हिन्दू मुस्लिम विद्वेष को मिटाने की साध मन में लेकर वे चले गए।

२६ जनवरी को जबलपुर में जो गणतंत्र दिवस समारोह हुआ उसके संदर्भ में आज का दिन बड़ा भयानक सा मालूम देता है। क्योंकि जिस व्यक्तिकी तपस्या से भारत में गणतंत्र का उदय हुआ वही व्यक्ति एक भारतीय हिन्दू की गोली का शिकार हो गया।

हम १६ जनवरी को जबलपुर पहुँचे और कल यहां से आगे विहार करना है। इस अरसे में जबलपुर के शहर, और कैंट एरिया दोनों में रहे। दोनों ही क्षेत्रों में कत्ल खाने बंद हों, इस आशय का प्रस्ताव भी पारित किया गया। एव उसी से गणतंत्र के रोज कत्ल खाने बन्द रहे।

जबलपुर मध्यप्रदेश का विशिष्ट नगर है। सारे मध्यप्रदेश की राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन करने में इस नगर का प्रमुख योगदान है। नित्य प्रवचन और धर्म चर्चा होती रही।

नागपुर

ता० २४-२-५८ :

मध्यप्रदेश से महाराष्ट्र। शिवाजी का मराठा देश। भारत के इतिहास में महाराष्ट्र की अपनी विशिष्ट देन है। शिवाजी जैसे देश भक्त राजाओं से लेकर तिलक एवं गोखले तक की कहानी भारतीय इतिहास में गौरव के साथ कही जाती रहेगी। न केवल राजनीतिज्ञों की दृष्टि से बल्कि संतों की दृष्टि से भी महाराष्ट्र उर्वर भूमि रही है ज्ञानदेव, नामदेव, तुकाराम, स्वामी रामदास और भी ऐसे कितने ही संतों ने भारतीय संत परम्परा की प्रथम श्रेणी को सुशोभित किया और आज भी आचार्य विनोबा जैसे स

गांधीजी ने भी महाराष्ट्र को अपना कार्यक्षेत्र बनाया था और जमनालालजी बजाज जैसे साथी भी उन्हें महाराष्ट्र की भूमि से ही प्राप्त हुए थे। गांधीजी की तपोभूमि वर्धा और सेवाग्राम यहाँ से केवल ४० माइल है जिन दिनों में आजादी का आन्दोलन चल रहा था उन दिनों में सारे देश की नजरें वर्धा और सेवाग्राम पर रहती थी।

इस महाराष्ट्र भूमि से होकर जब हम गुजर रहे हैं तो यहाँ की ये समस्त विशेषताएँ हमारे मन पर एक विशिष्ट प्रभाव डालती हैं।

नागपुर हिन्दुस्तान का शिखर है। कलकत्ता बंबई मद्रास और दिल्ली ये चारों यदि इस देश के मजबूत स्तंभ हैं और बाकी सारा देश इन स्तंभों पर खड़ा महल है तो नागपुर सारे देश के ठीक बीच में सुशोभित होने वाला शिखर है ऐसा कहना अत्युक्ति नहीं।

जैनशाला के विद्यार्थियों और शहर के नागरिकों ने हमारा भाव भरा स्वागत किया।

नागपुर में कुछ दिन रुककर आगे बढ़ेंगे। रास्ता तय करना है नेपाल देश के उत्तरी सिरे पर है और मद्रास दक्षिणी सिरे पर है। हमें हैदराबाद होकर आगे मद्रास एवं दक्षिण भारत की ओर बढ़ना है।

हिंगन घाट

ता० १२-२-१८१

हिंगनघाट एक छोटासा सुन्दर नगर है। यहाँ पर स्थानक वासी समाज के भी अच्छे घर हैं। मूर्तिपूजक समाज के लोग भी

अच्छी संख्या में हैं। स्थानक, मन्दिर उपाश्रय सभी हैं। चातुर्मास के लायक गाव है। भाव-भक्ति बहुत अच्छी है।

यहां पर कपड़े की मिलों के कारण आस-पास के मजदूरों का तथा व्यापार का अच्छा केन्द्र है। कुछ बाग बगीचे भी अच्छे हैं।

हम आये, तो भाई बहनों ने अच्छा स्वागत किया। जैन-समाज के रूप में सभी लोग आये। वातावरण बहुत सुन्दर रहा। वास्तव में यही तो जैन-धर्म का सच्चा लक्ष्य है। यदि जैन लोग आपस में ही छोटे छोटे मतभेदों को लेकर झगड़ते रहेंगे तो दुनिया को प्रेम, मैत्री, तथा अहिंसा का पाठ कैसे पढा सकेंगे।

बोलारम

ता० १८–५–५८ :

यहा स्थानकवासी समाज के ३० घर हैं। पहुँचने पर खूब स्वागत हुआ। प्रतिदिन प्रवचन होते रहे। सिकन्दराबाद से काफी संख्या में श्रावकगण व्याख्यान सुनने आते थे।

मुनिवर श्री हीरालालजी महाराज एवं दीपचन्दजी महाराज से मिलाप हुआ। इस तरह के मिलन से सारी पूर्व-स्मृतिया जागृत हो उठती है और सात्विक- सौजन्य व भक्ति का सागर उमड़ पड़ता है। आज मुनिराजों से मिलन होने पर वैसा ही आनन्द हुआ जैसा किसी बिछुड़े के मिलने पर होता है। साधु तो आत्म-साधना करने वाला मुक्त विहारी होता है पर गुरु परम्परा की डोर से वह बंधा हुआ भी है। यह डोर बहुत कोमल है और इस डोर में एक ही गुरु-परम्परा में विहरण करने वाले एक दूसरे से दूर होकर भी बंधे ही रहते हैं।

- इस वर्ष का चातुर्मास सिकन्दराबाद करना है। अतः यहाँ से सीधे सिकन्दराबाद के लिए ही विहार होगा।

सिकंदराबाद

ता २५-६-५८

चातुर्मास करने के लिए आज सिकन्दराबाद में प्रवेश करने पर समस्त संघ ने हार्दिक स्वागत किया। बालक-बालिकाओं ने एक भव्य जुलूस बनाकर सुन्दर दृश्य उपस्थित कर दिया था। मुनियों का चातुर्मास के लिए किसी भी नगर में आना उस नगरवासी जनता के लिए अत्यंत आनन्द और उल्लास की बात होती है। चार महीने तक लगातार धर्म प्रवचन श्रवण का लाभ भी तो अपने आप में एक महनीय लाभ है।

ता १५ अगस्त ५८:

यह आजादी का दिन! १५ अगस्त १९४७ की वह रात्रि में जब सारा संसार सो रहा था तब हिन्दुस्तान जाग रहा था और स्वातंत्र्य की खुशियाँ मना रहा था। आज आजादी प्राप्त हुए ११ वर्ष हो गये एक बहुत बड़ी क्रांति हुई कि सदियों से राजनैतिक गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ देश मुक्त हुआ पर वह क्रांति अधूरी थी। क्रांति की पूर्णता तो तभी होती जब इस देश के लोग आत्म-जागृति का और आन्तरिक स्वातन्त्र्य का पाठ सीखते। आजादी के इतने वर्ष बाद भी देश में दुःख दैन्य पाप भ्रष्टाचार हिंसा भेदभाव आदि दोष घटने के स्थान पर निरन्तर बढ़ते ही जा रहे हैं। क्या आजादी का अर्थ व्यर्थ जाता है। कभी नहीं। आजादी का अर्थ

संयमित स्वातन्त्र्य से है। पर देश में संयम के स्थान पर, अनुशासन के स्थान पर असंयम और उद्दंडता बढ़ रही है।'

१५ अगस्त के अवसर पर आयोजित एक विशाल सार्वजनिक सभा में मैंने उपरोक्त विचार प्रस्तुत किये।

ता० २१–८–५८ :

एस० एस० जैन विद्यार्थी संघ ने एक विराट सभा का आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता प्रमुख नागरिक श्री ताताचार्यजी एडवोकेट ने की। विषय रखा गया "भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता" मैंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "संस्कृति के टुकड़े नहीं किये जा सकते। संपूर्ण मानव संस्कृति अखण्ड है। अत भारतीय और अभारतीय इस तरह के भेद संस्कृति में नहीं हो सकते। मानव-संस्कृति पर जब हम विचार करेंगे, तब इतना ही कह सकते हैं कि मानव दो प्रकार के होते हैं सत् और असत्। अत संस्कृति भी दो प्रकार की हो सकती है—सत संस्कृति एवं असत संस्कृति। ये दोनों तरह की संस्कृतिया हर जाति और हर देश में पाई जाती है। भारत में यदि महावीर हुए तो गोशालक भी हुए। राम हुए तो रावण भी हुए। कृष्ण हुए तो कंस भी हुए। इसी तरह भारत से बाहर भी मुहम्मदसाहब तथा ईसा मसीह जैसे सत हुए हैं।

प्रत्येक मानव को सत संस्कृति के आधार पर अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए।

ता० २१–६–५८ :

२१–६–५८ को क्षमापना पर्व मनाया गया प्रगति समाज की ओर से, आज सभी संप्रदायों के लोग मिलकर क्षमायाचना करें, ऐसा

आयोजन किया गया। हमने इस आयोजन में सहर्ष शामिल होना स्वीकार किया। दिगंबर पंडित, तेरापंथी साधु सागर मुनि मूर्तिपूजक साधु प्रभावविजयजी आदि ने भी इस आयोजन में भाग लिया। इस तरह के आयोजनों से परस्पर प्रेम और मैत्रि बढ़ती है। विविध संप्रदायों को मानने के बावजूद आखिर सब तो सभी एक जैन धर्म ही है। आयोजन खूब सफल रहा।

पर्युषण पर्व भी बहुत उत्साह और शान के साथ मनाया गया। स्वाध्याय प्रवचन, तपस्या पौषध प्रतिक्रमण सभी कार्यों में स्थानीय समाज ने अत्यंत उत्साह के साथ भाग लिया। इस प्रकार हमारी शिखरजी यात्रा तक की पैदल यात्रा सफल समाप्त हुई।

●●●●

यात्रा संस्मरण

卐

कलकत्ता से १६१ मील झरिया

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
१५	सेवड़ा फूली	अग्रवाल भवन	अग्रवाल भाई अच्छे सज्जन हैं।
६	चन्द्रनगर	अग्रवाल भाई के यहा	,, ,, ,,
६	मगरा	मारवाडी राइस मिल	तीन घर मारवाड़ी भाईयों के।
६	पाडुवा	सिनेमा	सरदारमलजी काकरिया।
१२	मेहमारी	मारवाड़ी राइस मिल	
६	शक्तिगढ	बंगाली राईस मिल	
८	वर्धमान	रमजानी भवन	गुजराती मारवाड़ी के बहुत घर हैं।
५	फगुपुरा	स्कूल	
६	गलसी	स्कूल	

मील	ग्राम	स्थान	विशेष वर्णन
१॥	मुरकुर	पचेश्वर महादेव मन्दिर	
६॥	पानागढ़	हजारीमल बनारसीदास	बीस मारवाड़ी भाई के घर हैं।
१॥	परासोल	स्कूल	
८	फरीदपुर थाना	थाना का बरामदा	
३	मोहनपुर	डाक बंगला	
४	करजोड़ा	पेट्रोल पम्प	
२	रानीगंज	धर्मशाला	यहां गुजराती स्था० जैन के १० घर हैं
४	सावग्राम कोलियारी	कोलियारी	
६	आसनसोल	स्कूल	
७	मिर्झापुर रोड	भीमसेनजी के यहां	
७	बहनपुर	बाम्बे स्टोर	यहां गुजराती भाईयों के तथा मारवाड़ी भाईयों के १० घर हैं।
६	श्यामलपुर	शांतिलाल एंड कंपनी	गुजराती मारवाड़ी भाईयों के अनेक घर हैं।
६	बराकर	मारवाड़ी विद्यालय	
१३	बगा	डाक बंगला	
८	गोविन्दपुर	मन्दिर	मारवाड़ी के ७ घर हैं।
७॥	धनबाद	मेहता हाउस	गुजराती मारवाड़ी भाईयों के अनेक घर हैं।
४	झरिया	स्थानक	१२ घर हैं।

मील	ग्राम	स्थान	विशेष वर्णन
५	करकेन्द	धर्मशाला	गुजराती मारवाड़ी भाईयों के बहुत घर हैं।
६	कतरास	स्थानक	३० घर हैं।
११	माताडीह् कोल्यारी	गेस्ट हाउस	गुजराती भाईयों के घर हैं
७	बागमारा	नवलचन्द महेता	मारवाड़ी जैन के अनेक घर हैं।
७	चन्द्रपुरा	स्टेशन	
७	घोरी कोल्यारी	गेस्ट हाउस	
६	बेरमो	स्थानक	
६	बोकारो बोध	दयालजी भाई	
७	साडिम	दि० जै० मन्दिर	
६	बडगाव	रामसती भवन	
६	दिगवाड्	स्कूल	
४	रामगढ	बी० ओ० सी० पेट्रोल पप	
९	चुटुपालु	डाक बगला	
५	ओर मांझी	सुशीला भवन	
५	विकाश विद्यालय		
७	राची	गुजराती स्कूल	

रांची से १९८ मील पटना

मील	ग्राम	स्थान	विशेष वर्णन
७	विकाश विद्यालय		
१०	चुटुपालु		
९	रामगढ़		
७	कुजु	जगदीश बाबू	एक घर गुजराती का है।

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
१	मवरपुर	धर्मशाला	
३	पटना	श्वे० जैन मन्दिर	

पटना से २०६ मील नेपाल

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
६	सोनापुर	हाई स्कूल	यहा की जनता धर्म प्रेमी है
४	हाजीपुर	गाधी आश्रम	" " "
८	चानिधनुकी	श्री तृप्तिनारायणसिंह	" " "
६	लालगंज	जगन्नारायण शाहु	" " "
६	भगवान पुररति	मन्दिर	" " "
३	वैशाली	जैन विश्राम गृह	यहा श्री तीर्थङ्कर भगवान हाई स्कूल है
२॥	वासुकुण्ड	जैन मन्दिर	यहा से दो फर्लाङ्ग पर एक स्थान है जहा भगवान महावीर का जन्म स्थान है ।
२	सरौया कोठी	एक सोनी के मकान पर	ग्राम ठीक है
६	करजाचट्टी	रामलखन शाह	" " "
७	पताही गोला	सेठ नागरमल वका का बगीचा	" " "
२	मुजफ्फरपुर	मारवाड़ी धर्मशाला	नागरमल बका आदि मारवाड़ियों के ६०० घर हैं यहा प्राकृत जैन इन्स्युच्युट चलता है
८	धरमपुरा	प्राईमरी राष्ट्रीय स्कूल	ग्राम साधारण
२॥	रामपुरा हरी	हाई स्कूल	ग्राम ठीक है
६॥	रुन्नि	अंबर चरखा संघ विद्यालय	" " "

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
१०	अमलेसगंज	विश्वनाथ दीनानाथ की गादी	मारवाड़ी ● दुकानें हैं यहा से रेल का यातायात बद हो जाता है।
६॥	रोडसेस की चोकी	चोकी	
६॥	हटोडा	चेनराम मारवाड़ी	४ घर मारवाड़ी के हैं
६	भेंसिया	कृष्णमन्दिर	यहा से सड़क काठमाडु को जाती है। और पैदल रास्ता भी है।
६	भीमफेरी	धर्मशाला	यहां से पहाड़ की विकट चढाई चालू होती है।
४	कुलेखानी	धर्मशाला	ग्राम साधारण
८	चितलाग	धर्मशाला	" " "
६	थानकोट	रामेश्वर श्रेष्टि का मकान	" " "
६	काली माटी	सुन्दरमल रामकुवार	ग्राम ठीक है
१॥	काठमाडु	दुर्गाप्रसाद घडसीराम	मारवाड़ियों के ६० घर हैं

वीरगंज से १५८ मील मुज्जफरपुर

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
२	रक्सोल	भारतीय भवन	यहा मारवाड़ी भाइयों के १० घर हैं
७	आदापुर	बंशीधर मारवाड़ी	तीन घर मारवाड़ी के हैं
७॥	छोडादाना	स्टेशन	
७॥	छोडा सहन	विश्वनाथ प्रशाद जयवाल	मारवाड़ी के ६ घर हैं
३॥	चेनपुर	स्टेशन	

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
६	बेरगनिया	महावीर प्रसाद मारवाड़ी	मारवाड़ी के ६ घर हैं
५	ढेंग	बाबू सूर्यनारायण सी बी	
४	समा समोल	योगिन्द्र माधवी त्रिपाठी	
६	रीगा	सुगर फैक्ट्री गेस्ट हाउस	मैनेजर सुरजकरण श्रीपारिक जोधपुर वाले तथा अन्य ४ घर जैन के हैं
५	सीतामढ़ी		
६	मासर पकड़ी	जयकिशोर बाबू	ग्राम अच्छा है
४	बासपट्टी मधुबाजार	बसन्तीराम रामसुन्दर	सु का ४ घर मारवाड़ियों के हैं
८	जनकपुर रोड (पुपरी)	धर्मशाला	१० घर मारवाड़ियों के हैं
४	रामपुर पचासी	स्कूल	शिवजी साहु आदि अच्छे हैं
८	कमतोल	शिव मन्दिर	सूर्यनारायणजी सिन्दी आदि अच्छे सज्जन हैं
७	मोहम्मदपुर	शिवनारायण मारवाड़ी	
६	दरभंगा	अमरचन्द बालचन्द लूणिया	मारवाड़ियों के १०० घर हैं
३	कटहीया सराय	अमरचीलाल महादेव	ग्राम अच्छा है
८	किशनपुर	रामचन्द्र गोयले	
५	जमाईन्दपुर	महन्तजी के मठ में	
७	समस्तीपुर	जैन मार्केट	जैन के तथा मारवाड़ी के ८ घर हैं
७॥	मालपुर	दुर्गामाता का मन्दिर	ग्राम अच्छा है

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
५	पुपा स्टेशन	कालुराम चत्रभुज मारवाड़ी	अम्बर चरखा एवं कस्तुरबा राष्ट्रीय स्मारक निधि की ओर से महिला विद्यालय चल रहा है।
७	बखरी	ठाकुरबाड़ी	ब्राह्मण बस्ती अधिक है
५॥	पीलखी	स्कूल	अनिन्द्र बाबू आदि अच्छे सज्जन हैं
८	राहुआ	वैष्णव मठ	ब्राह्मणों की अच्छी बस्ती है तथा बहुत प्रेमी हैं
३॥	मुज्जफरपुर	मारवाड़ी धर्मशाला	यहा की प्रजा प्राणवान है

मुज्जफरपुर से १२५ मील सासाराम

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
३	भगवानपुर चट्टी	नागरमलजी बंका का बगीचा	यहां धर्म प्रेम अच्छा है
७॥	करजा	रामदेव मिश्र	ग्राम ठीक है
३	पोखरेरा	मधुमंगल प्रसाद	जनता भाविक है
३॥	सरैया कोठी	भगवान प्रशाद साहु	ग्राम ठीक है
३	बखरा	हाई स्कूल	ग्राम ठीक है
४	मकेर	शिवचन्द मिश्र	,, ,,
४	सोनोटो (भाथा)	ईश्व विकास सघ की ओफिस	,, ,,
६॥	गरखा	मठ	मनिलाल शाहु आदि अच्छे सज्जन हैं
२	अनुनि	कमालपुर बोड ऊपर प्रा स्कूल	ग्राम साधारण
६	छपरा	जैन मन्दिर	ललनजी जैन आदि अच्छे सज्जन हैं

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
७	बलेरापुर	बेसिक सिनियर स्कूल	ग्राम अच्छा है
७	आरा	हरप्रसाद जैन धर्मशाला	जैन बस्ती अच्छी है
४॥	उदवन्त नगर	मठ	गाँव ठीक है
८॥	गड़हनि	मठ	गाँव साधारण
६	सेमराँव	सरयु विद्या मन्दिर	ग्राम अच्छा है कुछ दूरी पर है
६	पीरो	धर्मशाला	गाँव अच्छा है
४॥	सहजनि	देव नारायणसिंह	„ „ „
७	विक्रमगंज	मंडिया	„ „ „
५	मंडिया	रामभागसिंहजी के	„ „ „
८॥	नोखा	शंकर राईस एण्ड मिल्स	मालिक अच्छा है
५	करगहर	ठाकुर बलदेव सिंह	ग्राम साधारण
७	सासाराम	धर्मशाला	मारवाड़ी के अच्छे घर हैं

सासाराम से ११० मील मिरजापुर

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
७॥	शिवसागर	शिव मन्दिर	सद्देव साधु बड़े सज्जन हैं
२	डेकारी	बुनियादी विद्यालय	जंगल में
६	कुदरा	नवयुवकों जैन के गोले पर	सत्याग्रहियों के ठीक घर हैं
५॥	पुसौली	व्यापारी मिडिल स्कूल	
७॥	मोहनिया	सत्यनारायण मील	मील मालिक सज्जन
७॥	दुर्गावती	श्री महन्तजी का स्थान	महन्तजी बड़े सज्जन
११	सय्यदराजा	चोथमल लक्ष्मीनारायण धर्मशाला	चोथमलजी आदि लोग बड़े सज्जन हैं

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
५	चन्दोली	प्राईमरी स्कूल	ग्राम ठीक है
५	जन्सो की मठी	मठ	यहां के बाबाजी बड़े सज्जन हैं
५	मोगल सराय	परमार भवन	गुजराती भाई बड़े सज्जन हैं
७॥	बनारसी	अंग्रेजी कोठी	तथा जैन के ३० घर हैं
२	भेलुपुर	दिगम्बर जैन मन्दिर	
१०	राजा तालाब	राजकीय लोटा जाली उत्पादन केन्द्र	ग्राम साधारण
४।	मिरजा मुराद	धर्मशाला	ग्राम के लोग बड़े सज्जन हैं
७॥	वायूसराय	डाक बंगला	श्रीरामजी वर्णलाल आदि लोग सज्जन हैं
७	औराई थाना	बड़ा मन्दिर	सभापति रामनाथजी ब्राह्मण आदि लोग बड़े सज्जन हैं
२॥	सहसेपुर अमरटोला	धर्मशाला	राधा कृष्ण अग्रवाल आदि लोग बड़े सज्जन हैं
७	मिरजापुर	बुढेनाथ श्वे जैन मन्दिर	श्वेताम्बर दिगम्बर भाइयों की अच्छी बस्ती है

मिरजापुर से ६६ मील रींवा

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
६	समग्रा	मन्दिर	ग्राम अच्छा है
८	वलसी	मठ	सज्जनता की कमी है

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
४	लालगांव	डाक बंगला	ग्राम अच्छा है
६	बराधा	प्राईमरी स्कूल	ग्राम ठीक है
७	महेशपुर	धारकाराम बनिया	साधारण ग्राम
९	हरामगंज	संस्कृत महाविद्यालय	ग्राम साधारण है
५	मऊरियाहर	सरकारी क्वार्टर	
६	हनुमना	धर्मशाला	मारवाड़ी ५ घर हैं
८	बरकरी	स्कूल	लालचन सेठ आदि लोग बड़े सज्जन हैं
८।	मऊगंज	शिव मन्दिर	ग्राम साधारण है
४	पनि	स्कूल	ग्राम ठीक है
६।।	सिमोर	स्कूल	आगे पाखिया ग्राम अच्छा है।
७।।	पटपरा	सुमतप्रकाशसिंह	ग्राम ठीक है
११	सुरमा	सोलाराम	मध्यम बस्ती ठीक है
१२	रीवा	जैन धर्मशाला	दि० जैन के १२ घर हैं

रीवा से २२७ मील नागपुर

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
८।।	बेला	तेजसिंह ठाकुर	ग्राम ठीक है
७	रामपुर	दशीराम की धर्मशाला	दशीराम हलवाई अच्छा सज्जन है
६	लक्ष्मणपुर	हाई स्कूल	ग्राम अच्छा है
४	माधोगढ़	हाई स्कूल	राघवेन्द्रप्रसाद तिवारी जी बड़े सज्जन हैं
६	सतना	जैनमन्दिर	श्वे० जैन के १ एवं दि० जैन के १२ घर हैं

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
६॥	लगरगवा	केबिन	
६॥	उचेहरा	कामदार बिल्डिंग	ग्राम ठीक है
४॥	इचोल	स्कूल	जगल
४॥	मैयर	दि जैन मन्दिर	दि० जैन के १० घर हैं
८॥	कुसेढि	जगन्नाथ प्रशादजी मिश्र	ग्राम ठीक है
८	अमदरा	जूनियर हाई स्कूल	" "
६	पकरिया	स्कूल	
६	झूठेही	स्कूल	बचुप्रशादजी शुक्ल आदि बड़े सज्जन हैं
५	कोलवारा	स्कूल	ग्राम साधारण
७॥	कटनी	श्री सम्पतलालजी जैन	रबर फेक्टरी वाले
८॥	पीपरोद	पूर्णचन्द जैन	दि जैन के ३ घर हैं
८॥	तिवारी सलेमाबाद	जैनमन्दिर	दि जैन के ५ घर हैं
३	छपरा	पंचायत का मकान	ग्राम साधारण है
४	धनगवां	हुकुमचन्द बनिया	४ घर बनियों के हैं
७	सिहोरा	हाई स्कूल	दि जैन के २० घर हैं
७	गोसलपुर	दि जैन मन्दिर	दि जैन के १६ घर हैं
४	गाधीग्राम	स्कूल	
६	पनागर	दि जैन मन्दिर	दि जैन के ७५ घर हैं
४	महाराजपुर	जैन का मकान	स्था जैन के ६० घर हैं
६	जबलपुर	धर्मशाला	
१॥	गोलबाजार	दीक्षितजी के मकान पर	
२	गढा	गृहस्थ के मकान पर	
१	निगरी	स्कूल	
३॥	बरघी	दि० जै० मन्दिर	दि० के २२ घर हैं
६	सुकरी	हाई स्कूल	दि० के १ घर है

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
५॥	रामपुर	धर्मशाला	जंगल
४।	बनवारी की बाड़ी	सरकारी मकान	गांव साधारण
६	पूना	जैन के यहां	दि० के दो घर हैं
६	समाई डोंगरी	स्कूल	गोपालों की अच्छी बस्ती है
७।	सकनापोन	दि० जैन मन्दिर	दि० जैन के ४० घर हैं।
६	मडई	सरकारी मकान	
३॥	गणेशगंज	स्कूल	ग्राम अच्छा है।
६	धुमाई	दयालचन्द जैन	ग्राम साधारण।
७॥	छपरा	जमनाप्रसाद तहसीलदार	दि० जैन के १०० घर हैं।
३	साथक सिवनी	स्कूल	ग्राम अच्छा है।
७।	बंडोल	त्रिलोकचन्द मालगुजार	" " "
३	सोनाडोंगरी	मालगुजार के मकान पर	" "
७	सिवनी	श्वे० जैन मन्दिर	जैन के १५ घर हैं
७॥	छिनाबेड़ी	बगीचा	
८	मोहगांव	सेठ मगनचंदजी	
४	खबई	मढ़िया	
५	कुरई	दवाखाना	
९	पिपरिया	लल्लू हवलदार	
६	खवासा	कस्तूरचन्द दि० जैन	
९	मनिमखा	स्कूल	
८	देवलापार	सुन्दरलाल बनिया	
७॥	मोदी	स्कूल	ग्राम साधारण

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
३॥	काद्री	सिंडीकेट प्राइवेट लिमिटेड कादी माईन	कच्छी भाईयों के बहुत घर हैं।
३॥	आमडी	नीलकंठ	यहां तुकाराम मंडप अच्छा है।
५।	कन्हनकादरी	घुसाराम तेली	
५	गोरा बाजार कामठी	दीपचंदजी छलाणी	स्था० के ४ घर हैं
१॥	कामठी	शुक्रवारिया	
६	पाली नदी	मांगीलालजी मुणोत का बंगला	
४	नागपुर	इतवारिया जैन स्थानक में	

नागपुर से ३०३ मील हैदराबाद

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
४	अजनी	पोपटलाल शाह	
८	गुमगाव मोटरस्टेंड	स्कूल	गांव साधारण
६	बुटिबोरी	दि० जैन मन्दिर	४ घर ओसवालों के हैं।
५	बमनी	स्कूल	
३॥	सोनेगांव	देशमुख वाडे	ग्राम ठीक है
४॥	कादरी	स्कूल	" " "
८॥	जाम	स्कूल	" " "
७॥	हिंघनघाट	स्थानक	भक्तिमान श्रावक लोग हैं।
३	कवलघाट	गृहस्थ के मकान पर	साधारण ग्राम
८॥	बडनेरा	सोभागमलजी बागा	पंजाबी भाईयों के ३ घर हैं।

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
६॥	पोहम	स्थानक	४ घर स्थानक वासी के हैं।
६	पिपलासुर	तुलसीदासजी	१ घर स्थानकवासी
३	एकुर्णी	रामलालजी बाग	१ घर स्था० जैन
११	करंजी	स्कूल	ग्राम ठीक है
३	बारवा	हनुमानजी का मन्दिर	,, ,,
७	पोखर कवडा	स्थानक	१४ घर स्था. जैन के हैं
३॥	जु बालपुर	बगीचा	
६॥	पायलखोरी	कच्छीमाई	२ घर मारवाड़ी १ घर कच्छी के हैं
६	पिपलघाटा	स्कूल	ग्राम साधारण
६	बाम्बा	हनुमानजी का मन्दिर	ग्राम ठीक है
३	आदिलाबाद	मील	६ घर स्था० जैन के है
७॥	सीता गोंदी	बावडी	१ घर गुजराती का है
४।	गढी हथनुर	शिव मन्दिर	ग्राम ठीक है
८॥	इच्छोडा	गोविन्दरावजी	ग्राम ठीक है
४	सातनगर	बनजारे का टांडा	
६॥	निरवाडु का	धरमी	ग्राम ठीक है
९॥	रोड मामडा	कच्छी गोदाम	
४॥	बोथडी	थाना	
८	इछोडी	एक सद्गृहस्थ के यहां	
४	निरमल	महादेवजी सीताराम रामभजन	८ घर मारवाड़ी के हैं
७॥	सोन	मठ	मारवाड़ बस्ती अच्छी है
७॥	किसाननगर	किसान रवि मिल	ग्राम ठीक है

मील	ग्राम	ठहरने का स्थान	विशेष वर्णन
१२	अरगुल	शिवमन्दिर	ग्राम ठीक है
१२	दिन्छपली	रामजी मन्दिर	ग्राम ठीक है
१२	फलवराल	डाकबंगला	ग्राम साधारण है
४॥	सदाशिवनगर	होटल	ग्राम साधारण है
७॥	कामारेड्डी	स्थानक	ग्राम ठीक है स्था १० घर हैं
६	जगलपेली	शिव मन्दिर	" "
६	विकनु स्टेशन	भीमजीभाई कच्छा	ग्राम ठीक है
४	रामायण पेठ	गिरनी सड़क पर	ग्राम ठीक है
५॥	नारसींगी	शिवमन्दिर	ग्राम ठीक है
४	वलुर	सतनारायण घोषी	ग्राम साधारण
६	मासाइ पेठ	हनुमानजी का मन्दिर	ग्राम ठीक है
४	तुपराम	सतनारायण कलार	ग्राम ठीक है
७	मनुरावाद	व्यकटरेड्डी	ग्राम ठीक है
४	कालकठी	हनुमानजी का मन्दिर	" "
६	मेड्चल	ग्राम पचायत ओफिस	
६	कोंपल्ली	ग्रहस्थ के मकान पर	
२॥	बोलारम	स्थानक	
३	लाल बाजार	सरक्युलर इन्सपेक्टर	
३	सिकन्दराबाद	स्थानक	
६	हैदराबाद	कबीरपुरा स्थानक	

मद्रास प्रांत

१ सेठ मोहनमलजी चोरडिया C/ सेठ अमरचन्दजी मानमलजी चोरडिया ठी मीन्टस्ट्रीट साहूकार पेठ नं० १०१ मु मद्रास १
५ एस एस जैनरासक मीन्टस्ट्रीट साहूकार नं० १११ मु० मद्रास १
३ सेठ मेघराजजी महता C/ हिन्द चोवड स्टोर्स नं ६३ नवमाप्पा नायकस्ट्रीट मु० मद्रास ३
४ सेठ अवरचन्दमलजी मोहनमलजी चोरडिया नं ० मेलापुर मु० मद्रास ४
५ सेठ शंभूमलजी माणकचन्दजी चोरडिया नं० १५/१६ मेलापुर मु मद्रास ४
६ सेठ अमोलकचन्दजी मंवरलालजी बिनायकिया नं० ११६ माउन्ट रोड मु० मद्रास ६
७ सेठ हेमराजजी लालचन्दजी सिंघवी नं० ११ बाजार रोड रायपेठ मु० मद्रास १४
८ श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन बोर्डिंग होम नं० ८ मार्शलीप रोड ठी नगर मु० मद्रास १०
९ ए. किशनलाल म १४ एम एच रोड मु पेरम्बूर मद्रास ११
१ सेठ गणेशमलजी रतनमलजी मरलेचा मु० पो रेडहिल्स (मद्रास)
११ स्वामी रिखबदासजी केसरवाली C/ श्री आदिनाथ जैन टेम्पल मु पो पोलाल-रेडहिल्स व्हाया मद्रास
१२ सेठ मिश्रीचन्दजी लालचन्दजी मरलेचा ठी रामपुरम् (मद्रास)
१३ सेठ मोहनलालजी C/० पी एम जैन नं ८५ वाचा स्ट्रीट मु० मद्रास ०
१४ गेलड़ा बैंक नं० १ परीयनपकारन स्ट्रीट, साहूकार पेठ मु० मद्रास १

१५ सेठ खीमराजजी चोरड़िया नं० ३६ जनरल मुथिया मुदालि
स्ट्रीट साहूकार पेठ मु० मद्रास १

१६ सेठ मिसरीमलजी नेमीचन्दजी गोलेछा ठी० पो० अन्नावरम्
कोतूरहाई रोड न० ३६ मद्रास २३

१७ सेठ जुगराजजी पारसमलजी लोढ़ा न० ७६ बाजार रोड
मु० शैदापेठ मद्रास १५

१८ सेठ मूलचन्दजी माणकचन्दजी मावकर ४ कारस्ट्रीट शैदापेठ
मद्रास १५

१९ सेठ विजयराजजी मुथा ४६७ पी पी रोड मु० पो० आलन्दूर
मद्रास १६

२० सेठ गुलाबचन्दजी घीसुलालजी मरलेचा न० ४६ बाजार रोड
मु० पो० पल्लावरम् जिला चंगलपेठ (मद्रास)

२१ सेठ देवीचन्दजी भवरलालजी विनायकिया मु० पो० ताम्बरम्
जिला चंगल पेठ (मद्रास)

२२ सेठ धनराजजी मिश्रीमलजी सुराना मु० पो० ताम्बरम् जिला-
चगल पेठ (मद्रास)

२३ सेठ सुमेरमलजी माणकचन्दजी घोका न० ४४ जनरल पी
रसरोड माउन्टरोड मु० मद्रास

२४ सेठ बस्तीमलजी धरमीचन्दजी खिवेसरा १६५ अमन कुल
स्ट्रीट नेहरू रोड मु० मद्रास

२५ सेठ घीसुलालजी पारसमलजी सिंघवी मु० चंगल पेठ (मद्रास

२६ सेठ दीपचन्दजी पारसमलजी मरलेचा मु० चंगल पेठ (मद्रास

२७ सेठ मिश्रीमलजी पारसमलजी बरमेचा न० २१४ बाजार रोड
मु० पुनमल्ली कन्टोनमेन्ट (मद्रास

१८. सेठ पृथ्वीराजजी दलीचन्दजी कवाड़ नं० १५ टर्नबुलरोड
मु पुसमल्ली (मद्रास)

१९ सेठ किशनलालजी रूपचन्दजी लुणिया ठी. गवासन स्ट्रीट
मु मद्रास

२० सेठ पीरजमलजी रेमचन्दजी बंधा मु०पिल्लापारी पेठ (मद्रास)

२१ सेठ समरथमलजी बागीदासजी पटानी १होर नेहरू बाजार
मु० आवडी (मद्रास)

२२ सेठ मिश्रीमलजी प्रेमराजजी लूकड़ नं० ११५ बाजार रोड
मु० तीरु वल्लूर (मद्रास)

२३ सेठ भुगराजजी धीसराजजी बरमेचा ठी० गोवासन स्ट्रीट
मु० (मद्रास)

२४ सेठ गणेशमलजी जबरराजजी मरलेचा मु० तिरवल्ली लुकम्
जिला-चंगल पेठ (मद्रास)

२५ सेठ बख्तावरमलजी मिश्रीमलजी मरलेचा मु० तिरवल्ली लुकम्
जिला-चंगल पेठ (मद्रास)

२६ सेठ शिवराजजी इन्द्रचन्दजी सुराणा नं० ४ वैकाट रोड
मुत्यालपेटम् मु० मद्रास १२

२७ सेठ अमानमलजी सज्जनराजजी मरलेचा मु० पो० करंगगुडी
जिला चंगल पेठ (मद्रास)

२८ सेठ मंगीचन्दजी जंवरीलालजी मामड़ मु मधुरान्तकम्
नं ४१ बाजार रोड जिला चंगल पेठ (मद्रास)

२९ सेठ किशनलालजी चांदमलजी मामड़ बाजार रोड
मु० मधुरान्तकम् जिला चंगल पेठ (मद्रास)

४० सेठ सोभागमलजी धरमचंदजी लोढा बाजार रोड
मु० मधुरान्तकम् जिला चंगल पेठ (मद्रास)
४१. सेठ कचरूलालजी करणावट साहूकार
मु० पो० अचरापाकम् जिला चंगल पेठ (मद्रास)
४२ सेठ चन्दनमलजी घेवरचन्दजी मकलेचा पेरूमाल कोइलस्ट्रीट
मु० तिन्डीवनम् जिला-चंगल पेठ मद्रास
४३ एम सी धर्मीचन्दजी गोलेछा कासीकेड
मु० तिन्डीवनम् जिला चंगल पेठ (मद्रास)
४४ सेठ मंगलजी मणिलाल महेता C/o ओवरसीज ट्रेडर्स २२
डुप्लेक्स स्ट्रीट मु० पांडीचेरी
४५ सेठ हीरालालजी लक्ष्मीचन्द मोदी C/oएच एल मोदी वैशाल
स्ट्रीट मु० पांडीचेरी
४६ सेठ शान्तिलाल धनराज महेता C/o एस. धनराज न० १
लबोरदनी स्ट्रीट मु० पांडीचेरी
४७ सेठ जशवंतसिंह संग्रामसिंह महेता C/o इम्पोर्ट एक्सपोर्ट
कोरपोरेशन पोस्ट बाक्स नं० २८ कोसेकडे स्ट्रीट मु० पांडीचेरी
४८. सेठ जसराजजी देवराजजी सिंघवी मु० वलवानूर (मद्रास)
४९ सेठ प्रेमराजजी नेमीचन्दजी बोहरा मु० वलवानूर (मद्रास)
५० सेठ प्रेमराजजी महावीरचन्दजी भंडारी मु० वलवानूर (मद्रास)
५१ सेठ जशराजजी अजीतराजजी सिंघवी मु० पनरूटी
५२ सेठ आईदानजी अमरचन्दजी गोलेछा ज्वेलर्स बाजार रोड
मु० विल्लुपुरम् (मद्रास)
५३ सेठ सुखराजजी पारसमलजी दुगड़ बाजार रोड
मु० विल्लु पुरम् (मद्रास)

५४ सेठ मगनमलजी दुगड C/ श्री जैन स्टोर्स ठी पांडीरोड
मु० तिरुपुरम् (मद्रास)

५५ सेठ केवलराजजी मोहनलालजी चौपरी मु० तिरु कोईलूर

५६ सेठ चुन्नीलालजी धरमीचन्दजी नाहर मु० भरगमलूर स्टेशन
तिरु कोइलूर

५७ सेठ प. धनमल धन सेठस मु० तिरुवन्नामलै जिला एन. ए.

५८ सेठ तेजराजजी बाबूलालजी बाफना मु० पोलूर जिला-एन. ए.

५९. सेठ भंवरलालजी बक्तीलालजी बांठिया मु० पोलूर जिला एन. ए.

६० सेठ चान्दमलजी भवरलालजी मुथा
मु० तिरुवन्नामलै जिला-एन. ए.

६१ सेठ सेसमलजी माणकचन्दजी सिंघवी मु० आरनी जिला-एन. ए.

६२. सेठ भंवरलाल भंडारी मु० चेटपेट जिला-एन. ए.

६३ सेठ हीराचन्दजी नेमीचन्दजी बांठिया
मु० आरकाट जिला-एन. ए.

६४ सेठ माणकचन्दजी चम्पतराजजी चोरड़िया ठी बाजार स्ट्रीट
मु० आरकाट जिला-एन ए.

६५ सेठ धनेचन्दजी मिश्रीमलजी मरलेचा नं० ४२४ मेन बाजार
मु० वेल्लूर (मद्रास)

६६ श्री रघुनाथमलजी नं० ४१९ मेन बाजार मु० वेल्लूर

६७ एन. केवलचन्दजी मरलेचा नं० ४११ मेन बाजार मु० वेल्लूर

६८. सेठ नेमीचन्दजी ज्ञानचन्दजी गोलेछा नं० ७६ मेन बाजार
मु० वेल्लूर

६९ सेठ केवलचन्दजी मोहनलालजी मरलेचा नं० ७२ मेन बाजार
मु० वेल्लूर

७० सेठ तेजराजजी धीसुलालजी बोहरा मु० पो० बिरंचीपुरम

७१. सेठ लालचन्दजी मोहनलालजी मु० पो० विरंचीपुरम्

७२ सेठ सोहनराजजी धर्मीचन्दजी मु० पुन्नरी जिला चंगलपेठ (मद्रास)

७३ सेठ पुखराजजी भवरलालजी घूरड मु० राणी पेठ जिला एन ए

७४ सेठ केसरीमलजी मिसरीमलजी श्राछा
मु० वाला लाजाबाद जिला एन ए

७५ सेठ केसरीमलजी श्रमोलकचन्दजी श्राछा
मु० बीग काचीपुरम् एस रेल्वे

७६ सेठ मिसरीमलजी घेवरचन्दजी मचेती
मु० छोटी काजीवरम् जिला-चगलपेठ

७७ सेठ उगमराजजी माणकचन्दजी सिंघवी
मु० वन्दवासी जिला-एन ए.

७८ सेठ सेमलजी सपतराजजी सकलेचा
मु० उत्तरमलुर जिला चंगलपेठ

७९ सेठ नेमीचन्दजी पारसमलजी श्राछा मु० चंगलपेठ (मद्रास)

८० सेठ सुपारसमलजी धनरूपमलजी चौरडिया
मु० नेलीकुपम् (एस ए.)

८१ सेठ जालमचन्दजी गोलेछा मु० मजाकुपम् (एस ए)

८२ सेठ पारसमलजी दुगड मु० परगी पेठ (एस ए)

८३ सेठ जुगराजजी रतनचन्दजी मुथा मु० काटपाड़ी (एन ए)

८४ सेठ समरथमलजी सुगनचन्दजी ललवानी मु० चंगम (एन ए)

८५ सेठ अम्बूलालजी संजतराजजी दुगड़ मु० गुडीयातम (एन ए)

८६ सेठ जसवतराजजी चम्पालालजी सिंघवी मु० आम्बुर (एन ए)

८७ सेठ मिसरीमलजी पारसमलजी मुथा मु० माम्बुर (एम. ए.)

८८ सेठ पुखराजजी मनराजजी कटारिया मु० आरकोणम्

८९ सेठ गुलाबचन्दजी कन्हैयालालजी गादिया मु० आरकोणम्

९० सेठ सुगनमलजी बोहरा मु० थीपती जिला-तन्जावर (मद्रास)

९१ सेठ मोपालसिंहजी पोखरना मु० चिदम्बरम् (एस आर. रेल्वे)

९२ सेठ मोहनलालजी सुराना नं० ४२ बीग स्ट्रीट
मु० कुम्भ कोणम् जिला-तन्जावर

९३ सेठ मोतीलालजी श्री श्रीमाल ठी बीग स्ट्रीट
मु० कुम्भ कोणम् जिला- तन्जावर

९४ सेठ पीसमलालजी मुखुनचन्दजी कानुगा
मु पो मायावरम् जिला- तन्जावर

९५. सेठ जेठमलजी बरडिया मु० मायावरम् जिला-तन्जावर
(एस आर.)

९६ सेठ ताराचन्दजी कोठारी ९/२ बाजार रोड स्ट्रीट
मु त्रिचनापल्ली (मद्रास)

९७ सेठ मोतीलालजी श्री श्रीमाल मु कोडाम्म पी. (एस रेल्वे)

९८. सेठ गम्भीरमलजी त्रिलोकचन्दजी मु० कब्बूर (एन डी)

९९ सेठ चम्पालालजी जैन मु कब्बूर (एन डी)

१०० सेठ मूलचन्दजी पारख मु० वीरची (मद्रास)

१०१ सेठ सरदारजी मोतीलालजी रांका नं० ५८ एलीफेन्ट गेट
मु० मद्रास

१०२. सेठ सुगनराजजी भंवरलालजी बोहरा नेहरू बाजार मु० मद्रास

१०३. सेठ चम्पालालजी तातेड़ा मोची बाजार मु० मद्रास

१०४. सेठ हीरालालजी रीकबचन्दजी पाटनी मु० सेलम

१०५ सेठ सुखलालजी मगलचन्दजी गुलेछा मु० तीरुपातुर (एन ए)

१०६ सेठ गणेशमलजी मुथा मु० भुवनगीरी (एम. ये)

१०७ सेठ दीपचन्दजी घेवरचन्दजी चौरड़िया
मु० उलुन्दर पेठ (यस ये)

१०८ सेठ चम्पालालजी बाबूलालजी लोढ़ा ठी० बाजार रोड
मु० चीक बालापुर

१०९ सेठ जुगराजजी खिवराजजी मु० पेरम्बतुर जिला चगल पेठ

११० सेठ शंकरलालजी भवरलालजी काकरिया मु० पेरना पेठ
(एन० ए०)

१११. सेठ भीकमचन्दजी भुरट मु० कलवे (एन० ए०)

११२. सेठ शकरलालजी बाकलीवाल मु० केयि कुपम (एन० ए०)

११३ एल० पुखराजजी साहूकार मु० सुगुवा छत्रम्
जिला चगल पेठ

११४ सेठ हस्तीमलजी साहूकार मु० कावेरी पाकम् (एन० ए०)

११५ सेठ धनराजजी केवलचन्दजी मु० तिरूमास (जिला० चंगल पेठ)

११६. सेठ अमोलकचन्दजी साहूकार मु० बालसिटी छत्रम् (जिला
चंगल पेठ)

११७ सेठ केवलचन्दजी सुराना मु० त्रीमसी (जिला चंगल पेठ)

११८ सेठ जुगराजजी दुगड़ मु० अमजी केरा (मद्रास)

११९ सेठ दीपचन्दजी तिलोकचन्दजी नाहटा मु० वंगार पेठ

१२० सेठ आर० कंवरलालजी गोलेछा मु० वीरपातुर (एन० ए०)

१२१ सेठ जीवराजजी साहूकार मु० सोलींगर (एन० ए०)

१३८ सेठ मिलापचन्दजी बोहरा मु० मंडिया (मैसूर)

१३९ सेठ पुखराजजी कोठारी मु० रामनगर (मैसूर)

१४० सेठ पन्नालालजी जैन मु० चिन्पटन (मैसूर)

१४१. सेठ किशनलालजी फूलचन्दजी लूणिया दीवान सुराप्पा लेन मु० बैंगलोर सिटी २

१४२. सेठ किस्तुरचन्दजी कुंदनमलजी लूकड़ ठी० चीकपेठ मु० बैंगलोर सिटी २

१४३ सेठ मिश्रीलालजी पारसमलजी कातरेला ठी० मामूल पेठ मु० बैंगलोर सिटी २

१४४ सेठ सिरेमलजी भवरलालजी मुथा न० ४५ रंग स्वामी टेम्पल स्ट्रीट मु० बैंगलोर सिटी २

१४५ सेठ घेवरचन्दजी जसराजजी गुलेच्छा रंगस्वामी टेम्पल स्ट्रीट मु० बैंगलोर सिटी २

१४६ सेठ मगनलाल केशवजी तुरकिया ठी० बोम्बे फैन्सी स्टोर्स चीक पेठ मु० बैंगलोर सिटी २

१४७ सेठ रूपचन्दजी शेषमलजी लूणिया ठी० मोरचरी बाजार मु० बैंगलोर १

१४८ सेठ गणेशमलजी मानमलजी लोढ़ा ठी० सर्पिसरोड मु० बैंगलोर १

१४९ सेठ मिश्रीमलजी भवरलालजी बोहरा मारवाड़ी बाजार मु० बैंगलोर १

१५० सेठ हीराचन्दजी फतहराजजी कटारिया ठी० केवलरीरोड मु० बैंगलोर १

१५१ सेठ मीठालालजी खुशालचन्दजी छाजेड़ तिमैयारोड बैंगलोर १

१४० सेठ हिम्मतमलजी मंवरलालजी कोठियां १४ सिमेथरोड
मु० बैंगलर १

१४३. सेठ मंगलचन्दजी मोहोत ठी शिवाजी नगर मु० बैंगलोर १

१४४ सेठ जगमलजी O/o सेठ शामुमलजी गंगारामजी मुथा
४१ मीरीट रोड १ बैंगलोर

१४५. सेठ चन्दनमलजी संपतराजजी मरलेचा
O/o सेठ हजारीमलजी मुकनमलजी मरलेचा नं० ३
मुलिया स्ट्रीट शुले बाजार मु० बैंगलोर १

१४६ सेठ हिम्मतराजजी भाकचन्दजी कांकेड़ ठी० चेकेसुर बाजार
मु बैंगलोर ८

१४७. पी बी चरसराज जैन नं २ मुदलियार स्ट्रीट मैसूर
बाजार मु बैंगलोर ८

१४८. सेठ गुलाबचन्दजी मंवरलालजी सकलेचा ठी मंडीपेट
मु० बैंगलोर ३

१४९ सेठ गणेशमलजी मोतीलालजी कांठेड नं० ५ बी० हेबीरोड
मु० बैंगलोर ४

१५ सेठ चौमुलालजी मोहनलालजी कांकेड ठी कराचीपुर
मु० बैंगलोर

१५१ सेठ हंसराजजी मैरूमलजी कचेरी बाजा मु० हिन्दुपुर

१५२. सेठ पोलाजी लक्ष्मीचन्दजी मु० मर्चापुर

१५३. सेठ पुखीचांदजी मूलचन्दजी मु० धर्मावरम्

१५४ सेठ हजारीमलजी मुकनमलजी मरलेचा मु० कुप्पम

१६५ सेठ सेहसमलजी घेवरचन्दजी बागमत जिला धारवाड़
मु० गजेन्द्रगढ़

१६६. सेठ मदनमलजी सुगनचदजी मुथा कुष्टगी जिला रायपुर

१६७ राजेन्द्र क्लोथ स्टोर्स मु० गगावती जिला रायचूर

१६८ सेठ गुलाबचन्दजी मनोहरचन्दजी बागमार
मु० गदक जिला-धारवाड़

१६६. सेठ हजारीमलजी हस्तीमलजी जैन मारकीट मु० बल्लारी

१७० सेठ मुलतानमलजी जशराजजी फानूगा मु० गुटकल

१७१ सेठ इन्द्रमलजी धोका C/o सेठ गुलाबचन्दजी घनराजजी
मु० आधोनी

१७२ सेठ छोगमलजी नगराजजी खीवसरा मु० सिघनूर
जिला-रायपूर

१७३. सेठ बादरमलजी सूरजमलजी धोका मु० यादगिरी

१७४ सेठ चुन्नीलालजी पीरचन्दजी बोहरा मु० रायचूर

१७५ सेठ कालुरामजी हस्तीमलजी मूथा गाधी चौक मु० रायपूर

१७६ सेठ जालमचन्दजी माणकचदजी ६० राजेन्द्रगज मु० रायचूर

आन्ध्र प्रांत

१७७ सेठ बचनमलजी गुलाबचन्दजी सुराना ठी० बड़ा बाजार
मु० बोलारम

१७८ सेठ समर्थमलजी आलमचन्दजी रांका ठी० पोस्ट मारकीट
मु० सिकन्दराबाद

१७६ सेठ ताराचन्दजी मोहनलालजी डुंगरवाल ठी॰ मोईगुंडा
मु॰ सिकन्दराबाद
१८० वरजीवन॰ पी सेठ ठी॰ सुलतान बाजार इन्द्रबाग मु हैदराबाद
१८१ सेठ हजारमलजी नेमीचन्दजी बोहरा ठी॰ नूरखां बाजार
मु॰ हैदराबाद
१८२ सेठ चांदमलजी मोतीलालजी चंद ठी. धमलोर गंज मु॰ हैदराबाद
१८३ सेठ मिश्रीमलजी कटारिया दवाखाना के पास ठी॰ बशीरपुरा
मु॰ हैदराबाद
१८४ सेठ सम्मेदमलजी मीठालालजी बांठिया मु॰ परभणी
१८५ सेठ मिश्रीमलजी मन्नालालजी हलवाई ठी॰ बशीराबाद
मु बीदर
१८६ सेठ मदनलालजी दया वेचनेवाला मु॰ कामारेड्डी
१८७ सेठ बंशीलालजी भंडारी मु परतुर तालुका परभणी
१८८ चौधरी सोभागमलजी C/o सेठ किशोरीराम लालचन्द
मु॰ पो समरी (बी॰ रेल्वे)
१८९ सेठ चनराजजी पन्नालालजी बागरेचा मु॰ जालना (बी रेल्वे)
१९० सेठ सहसमलजी भीमराजजी रेवका ठी फ्लाराबाजार
मु॰ मोरंगाबाद

मैसूर प्रांत

१९१ सेठ हीराचन्दजी चिनेचन्दजी पटवा ठी॰ हीरेपेठ
मु॰ हुबली (मैसूर)

१९२. सेठ छोगालालजी मुलतानमलजी क्लोथ मर्चेन्ट
ठी० सुभाषरोड़ मु० धारवाड (मैसुर)

१९३ सेठ मुलतानमलजी हरकचन्दजी ठी० खड़ा बाजार
मु० बेलगाव (मैसूर)

महाराष्ट्र प्रांत

१९४ सेठ ठाकरसी देवसी वसा पो० ब० न० २०३ साहुपुरी
मु० कोल्हापुर

१९५ सेठ नेमचन्दजी डायाभाई वसा ठी० नवीं पेठ मु० सांगली

१९६ सेठ रतीलाल विठ्ठलदास गोसलिया मु० माधव नगर

१९७ सेठ कालीदास भाई चन्दभाई मु० सतारा

१९८ जयसिंगपुर आईल मील मु० जयसिंगपुर

१९९ सेठ बालचन्दजी जशराजी १३३५ रविवार पेठ मु० पुना २

२०० सेठ दौलतरामजी माणकचन्दजी जैन मु० बारामती जिला पुना २

॥ समाप्तम् ॥